धींधवाल पब्लिकेशन
DHP-32

Dhindhwal Publication
Lead, Read and Achieve

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा

REET

(राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित)

एवं

तृतीय श्रेणी अध्यापक मुख्य परीक्षा

(राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित)

लेवल–प्रथम (1–5) व द्वितीय (6–8)

नवीनतम सिलेबस पर आधारित

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

(NCF– 2005,सी. सी. ई.,मापन व मूल्यांकन,आरटीई –2009 सहित) सभी विषयों में समान उपयोगी

- NCERT व RBSE पुस्तकों का सार।
- विभिन्न राज्य पात्रता परीक्षा के प्रश्नों का समावेश।
- रोचक व चित्रात्मक परीक्षापयोगी सामग्री।
- वन लाइनर प्रश्नों का अतिरिक्त संग्रह।
- 2011 से वर्तमान तक विगत परिक्षाओं के प्रश्नों का संग्रह

नरेन्द्र सिंह पंवार
व्याख्याता, स्कूल शिक्षा

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

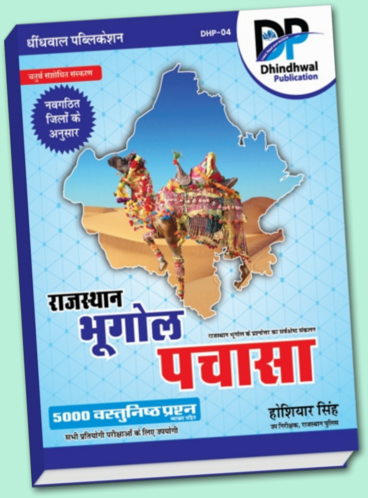

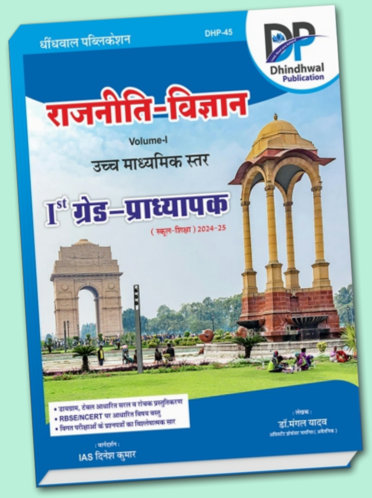

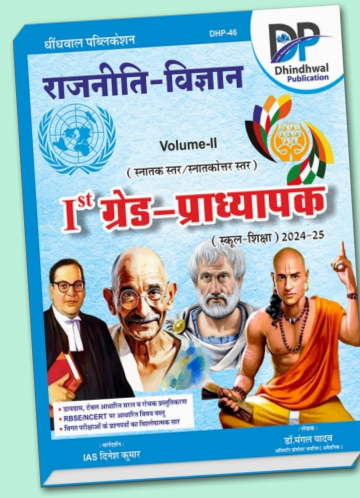

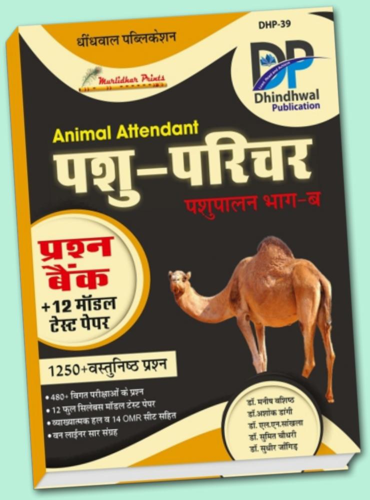

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

नरेन्द्र सिंह पंवार

B.Ed., M.A. (मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र)

NET - 5 बार उत्तीर्ण, SET - 2 बार उत्तीर्ण

Ph.D. (Pursuing From M.L.S.U., Udaipur)

: लेखक परिचय :

नरेन्द्र सिंह पंवार का जन्म शाहपुरा (भीलवाड़ा) में हुआ। आपने वर्ष 2018 में तृतीय श्रेणी अध्यापक पद पर श्री नाथद्वारा में कार्य ग्रहण किया, साथ ही वर्ष 2019 में मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल द्वारा आयोजित व्याख्याता परीक्षा में व्याख्याता पद पर चयन हुआ तत्पश्चात् वर्ष 2020 में हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में व्याख्याता पद पर चयन के साथ ही 2020 में ही RPSC द्वारा आयोजित व्याख्याता परीक्षा में राजस्थान में 8 वीं रैंक के साथ व्याख्याता पद पर चयन हुआ। वर्तमान में आप व्याख्याता पद पर अपनी सेवाएं उदयपुर में दे रहे है, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है। आपका RPSC द्वारा आयोजित असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा 2022 में साक्षात्कार हेतु चयन हुआ।

हमारी अन्य पुस्तकें

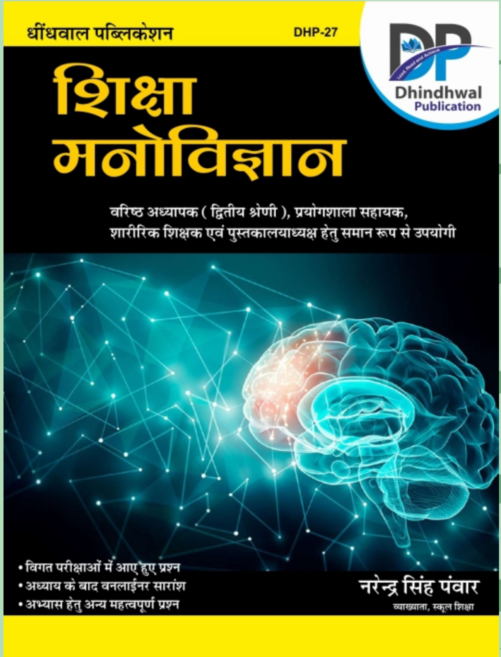

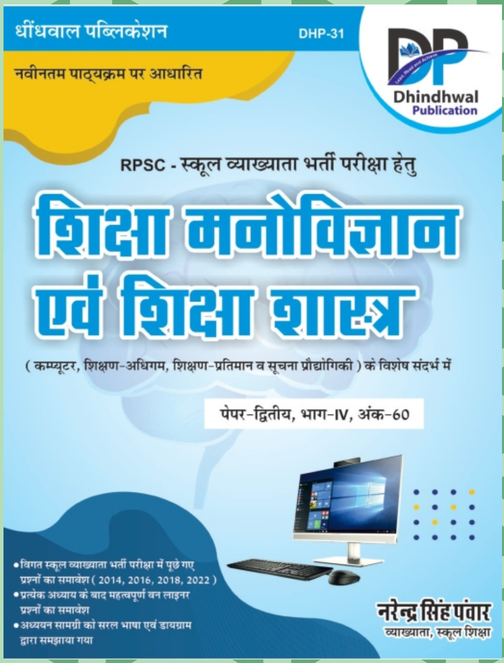

धींधवाल पब्लिकेशन प्रस्तुत करते हैं–

Dhindhwal Publication

Lead, Read and Achieve

REET (राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित
एवं
तृतीय श्रेणी अध्यापक मुख्य परीक्षा (राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड जयपुर द्वारा आयोजित)
लेवल-1 (I-V) व लेवल-2 (VI-VIII) हेतु सभी विषयों में समान रूप से उपयोगी

शिक्षा मनोविज्ञान बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

- ✦ प्रामाणिक विषय वस्तु का संकलन।
- ✦ चित्रों सहित रोचक प्रस्तुतीकरण।
- ✦ परीक्षाओं के नवीन पैटर्न के अनुसार गहन व व्यापक पाठ्यसामग्री का संकलन।
- ✦ विगत परीक्षाओं में आये हुए **1300+** प्रश्नों का संकलन।
- ✦ प्रत्येक अध्याय के बाद वन लाइनर अति-महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

लेखक :- नरेन्द्र सिंह पंवार
(व्याख्याता, स्कूल शिक्षा, उदयपुर-राज.)
मो. - 8003168158

प्रकाशक:-
धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication
- धींधवाल पब्लिकेशन
- Dhindhwal Classes
- @Publication-DP
- Dhindhwal Publication

बुक कोड- DHP-32

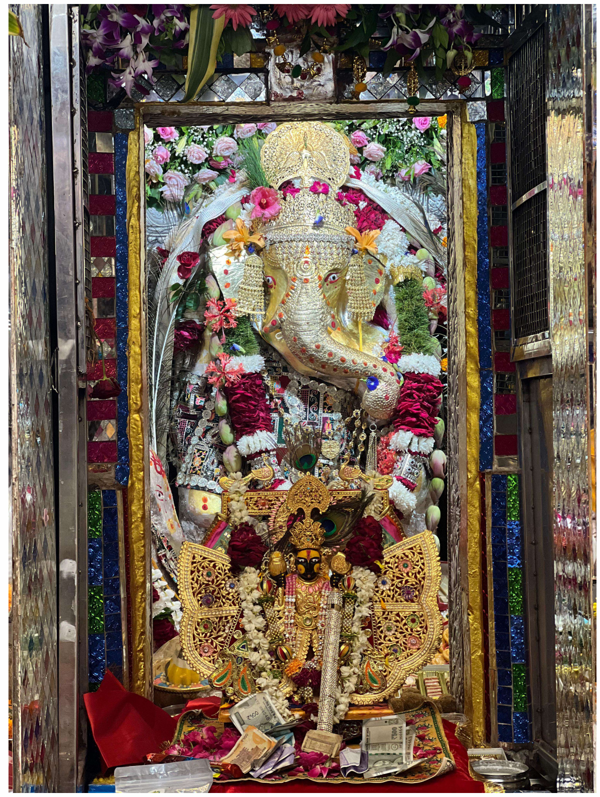

श्री बोहरा गणेश जी, उदयपुर

© सर्वाधिकार- लेखक

फिक्स रैट ₹ - 285.00

मुद्रक-
पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

शिक्षा मनोविज्ञान बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र		
क्र. सं.	विषय–सूची	पृष्ठ संख्या
	यूनिट–1	1–19
1.	**शिक्षा मनोविज्ञान (Education Psychology)** शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं विधियाँ (Meaning, Definition, Scope and Methods of Education Psychology)	2–19
	यूनिट–2	20–80
1.	**बाल विकास (Child Development)** वृद्धि और विकास की संकल्पना, विकास के सिद्धांत एवं आयाम, विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्व (विशेषकर परिवार एवं विद्यालय के संदर्भ में) एवं अधिगम से उनका संबंध। Concept of growth and development, Principles and dimensions of development. Factors affecting development (especially in the context of family and school) and its relationship with learning. वंशक्रम एवं वातावरण की भूमिका (Role of Heredity and environment)	21–80
	यूनिट–3	81–133
1.	**व्यक्तिगत विभिन्नताएँ (Individual Differences)** अर्थ, प्रकार एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक। Meaning, types and Factors Affecting Individual differences Understanding individual differences.	82–90
2.	**व्यक्तित्व (Personality)** व्यक्तित्व की संकल्पना, प्रकार व व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले तत्त्व व व्यक्तित्व मापन। Personality- Concept and types of personality, Factors responsible for shaping it. Its measurement.	91–112
3.	**बुद्धि (Intelligence)** संकल्पना, सिद्धांत एवं इसका मापन, बहुबुद्धि सिद्धांत एवं इसके निहितार्थ। Concept, Theories and its measurement. Multiple Intelligence. Its implication.	113–133
	यूनिट–4	134–188
1.	**विविध अधिगमकर्ताओं की समझ (Understanding Diverse Learners)** पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सृजनशील, अलाभान्वित– वंचित, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे एवं अधिगम अक्षमता युक्त बच्चे। Backward, Mentally retarded, Gifted, Creative, Disadvantaged-deprived, CWSN, Children with learning disabilities.	135–165
2.	**अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ (Learning Difficulties)**	166–177
3.	**समायोजन (Adjustment)** समायोजन की संकल्पना एवं तरीके, समायोजन में अध्यापक की भूमिका Concept and ways of adjustment. Role of teacher in the adjustment.	178–188

	यूनिट–5	189–256
1.	**अधिगम (Learning)** अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना। अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक। अधिगम के सिद्धांत एवं इनके निहितार्थ। बच्चे सीखते कैसे हैं। अधिगम की प्रक्रियाएँ। Meaning and Concept of learning. Factors Affecting learning. Theories of learning and their implication. How Children learn. Learning processes.	190–231
2.	**चिन्तन, कल्पना एवं तर्क। (Reflection, Imagination and Argument.)**	232–240
3.	**अभिप्रेरणा (Motivation)** अभिप्रेरणा व इसके अधिगम के लिए निहितार्थ Motivation and Implication for Learning	241–256
	यूनिट–6	257–324
1.	**शिक्षण अधिगम (Teaching Learning)** शिक्षण अधिगम की प्रक्रियायें, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 के संदर्भ में शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनायें एवं विधियाँ। Teaching learning process, Teaching learning strategies and methods in the context of National Curriculum Framework 2005.	258–276
2.	**आकलन, मापन एवं मूल्यांकन (Assessment, Measurement and Evaluation)** आकलन, मापन एवं मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य, समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण। सीखने के प्रतिफल। Meaning and purposes of Assessment, Measurement and Evaluation. Comprehensive and Continuous Evaluation. Construction of Achievement Test. Learning Outcomes.	277–304
3.	**क्रियात्मक अनुसन्धान (Action Research)**	305–311
4.	**शिक्षा का अधिकार (Right to Education)** शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 (अध्यापकों की भूमिका एवं दायित्व) Right to Education Act 2009 (Role and Responsibilities of Teachers)	312–324

भूमिका

प्रिय परीक्षार्थियो,

प्रस्तुत पुस्तक श्री बोहरा गणेश जी एवं मेरे माता–पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पुस्तक राजस्थान सहित अन्य राज्यों में होने वाली शिक्षक भर्ती परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए समकक्ष पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार की गई है–

- पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रत्येक अवधारणा को उदाहरण सहित समझाया गया है।
- विभिन्न सिद्धान्तों एवं अवधारणा को आकर्षक चित्रों के माध्यम से बताया गया है।
- प्रत्येक अध्याय के बाद वन लाइनर आधारित पाठ का सारांश दिया गया है।
- वर्ष 2023 तक हुई REET भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नों को शामिल किया गया है।
- इस पुस्तक को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 एवं 12 की पुस्तकों, इग्नु बोर्ड, विभिन्न ओपन विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों एवं विभिन्न संदर्भ पुस्तकों को आधार मानते हुए तैयार किया गया है।
- शिक्षा मनोविज्ञान की इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों की मूल समझ को विकसित करना है।

1

शिक्षा मनोविज्ञान (Education Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं विधियाँ (Meaning, Definition, Scope and Methods of Education Psychology)

- शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में **Education** कहा जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति **लैटिन भाषा के Educatum** शब्द से मानी जाती है।

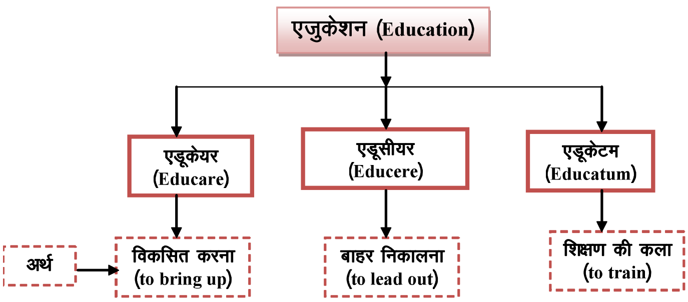

- लैटिन भाषा के "एडूकेटम" शब्द का अर्थ है "शिक्षण की कला" यदि इन तीनों शब्दों की विस्तृत रूप में चर्चा करें तो सार यही आता है कि शिक्षा का अर्थ जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास है।

- Educatum शब्द दो शब्दों **e** और **duco** से मिलकर बना है। e अर्थात out of (अन्दर से) और duco - to lead forth (बाहर निकलना) अर्थात् 'आन्तरिक को बाहर' लाना ही शिक्षा है।

➢ शिक्षा का व्यापक अर्थ– शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। **व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता** है और **अनुभव करता** है। शिक्षा उस विकास का नाम है जो जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक चलती है। इसी के द्वारा व्यक्ति अपनी विपरीत परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

- शिक्षा एक द्विध्रुवीय प्रक्रिया है– जॉन एडम्स का विचार है कि शिक्षा के दो ध्रुव होते है (i) **विद्यार्थी** (ii) **शिक्षक**।

☞ "शिक्षा में चुम्बक के समान ध्रुवों का होना आवश्यक है इसलिए यह **द्विध्रुवीय** प्रक्रिया है"– रॉस

☞ "आपने शिक्षा के दो आधार या अंग बताये थे, एक मनोवैज्ञानिक जबकि दूसरा सामाजिक"– जॉन ड्यूवी

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है वर्तमान में शिक्षण प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु छात्र है जो नोसिखिया होता है अर्थात् **छात्र को केन्द्र बिन्दु मानकर शिक्षण परिस्थितियों का निर्माण किया जाये** इसके लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता एवं उद्देश्य को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है।

- इसमें शिक्षा के सभी पहलुओं जैसे शिक्षा के **उद्देश्यों**, **मूल्यांकन**, **शिक्षण प्रक्रिया**, **गतिविधि**, **शिक्षण विधि**, **पाठ्यक्रम**, रचनात्मक कार्य आदि को मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है। वर्तमान में **बाल केन्द्रित शिक्षा एवं शिक्षण** – प्रक्रिया को सूचारु रूप से चलाने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की आवश्यकता जरूरी है।

- **ध्यान रहे** – सर्वप्रथम शिक्षा की मनोवैज्ञानिक परिभाषा देने वाले शिक्षाशास्त्री पेस्टालॉजी (Pestalozzi) है।

- शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने से है। यह शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।

- शिक्षा मनोविज्ञान में **व्यक्ति के व्यवहार**, **मानसिक प्रक्रियाओं** एवं **अनुभवों**, **व्यवहारों**, **गतिविधियों का अध्ययन** शैक्षिक परिस्थितियों में किया जाता है। यह व्यावहारिक मनोविज्ञान की शाखा है जो शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने में प्रयासरत है।

- शिक्षा क्या है – शिक्षा शब्द **संस्कृत के शिक्ष धातु** में अ प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अभिप्राय **सीखना** या **सिखाना नवीन ज्ञान** एवं अनुभव की प्राप्ति ही शिक्षा है।

- शिक्षा एक त्रि–ध्रुवीय प्रक्रिया है– जॉन डयूवी शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया मानते हैं इस प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष को स्वीकारते हैं तथा वह समाज से अलग शिक्षा प्रक्रिया की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

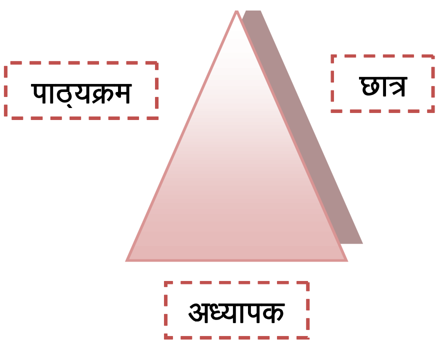

- हीनता की भावना प्रणाली बतायी थी– एडलर
- मानसिक रोग का कारण **बाल्यकाल में बनी भावना ग्रन्थियों** को मानता है– फ्रायड
- **हार्मिक का अभिप्राय होता है** – प्रेरक
- शिक्षा मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता देना।
- **सर्वप्रथम** पेस्टालॉजी **ने शिक्षा की मनोवैज्ञानिक परिभाषा दी थी।**
- किसके **सहभागी, अर्द्धसहभागी व असहभागी** प्रकार बताये गये – अवलोकन

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. निम्न में से कौन सा वाक्य शैक्षिक मनोविज्ञान की प्रकृति के लिए सही नहीं है? **(REET L-1 2023)**
   (1) एक सुसंगठित, व्यवस्थित एवं सार्वभौमिक तथ्यों का एकीकरण
   (2) यह वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करता है।
   (3) यह सकारात्मक विज्ञान की जगह एक नियामक विज्ञान है।
   (4) यह हमेशा सत्य की खोज में रहता है। (3)
2. ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण व सीखने से संबंधित है।'' यह कथन दिया गया है– **(REET L-2 (Hindi) 2023)**
   (1) वुडवर्थ द्वारा (2) स्किनर द्वारा
   (3) सिम्पसन द्वारा (4) पावलॉव द्वारा (2)
3. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक की मदद करता है– **(REET L-2 (Urdu) 2023)**
   (1) बाल विकास का ज्ञान प्राप्त करने में
   (2) बाल स्वभाव तथा व्यवहार जानने में
   (3) विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने में
   (4) ये सभी (4)
4. साइकोलॉजी (Psychology) शब्द की उत्पत्ति हुई है– **(REET L-2 (Sanskrit) 2023)**
   (1) लेटिन भाषा से
   (2) स्पेनिश भाषा से
   (3) अंग्रेजी भाषा से
   (4) फ्रेंच भाषा से (1)
5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति से सम्बंधित नहीं है? **(REET L-2 (Sanskrit) 2023)**
   (1) यह एक व्यवहारपरक विज्ञान है।
   (2) यह एक सामाजिक विज्ञान है।
   (3) यह एक धनात्मक विज्ञान है।
   (4) यह एक मानकीय विज्ञान है। (4)
6. ''शैक्षिक मनोविज्ञान किसी व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।'' यह परिभाषा किसके द्वारा दी गई? **(PTI IInd Grade G.K. 2023)**
   (1) क्रो एण्ड क्रो (2) पील (3) क्राउडर (4) स्कीनर (1)
7. शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के किस पक्ष से संबंधित एक शाखा है? **(PTI IInd Grade G.K. 2023)**
   (1) आधारभूत मनोविज्ञान
   (2) उपचारात्मक (चिकित्सात्मक) मनोविज्ञान
   (3) व्यवहारात्मक मनोविज्ञान
   (4) सैद्धांतिक (शुद्ध) मनोविज्ञान (3)
8. निम्नलिखित में से कौन सा कथन शिक्षा मनोविज्ञान के महत्त्व के संदर्भ में सही नहीं है? **(2023, IInd ग्रेड)**
   (1) यह शिक्षकों में शैक्षिक समस्याओं को दूर करने के प्रति उचित मनोवृत्ति उत्पन्न करता है।
   (2) यह अध्यापकों की विद्यार्थियों के व्यवहारों में समुचित परिवर्तन लाने में मदद करता है।
   (3) यह विद्यार्थियों की कमजोरियों एवं असफलताओं को नजरअंदाज करने के लिए प्रेरित करता है।
   (4) यह शिक्षकों को स्वयं को समझने में मदद करता है। (3)
9. निम्नलिखित में से कौन सी कसौटी शिक्षा मनोविज्ञान को विज्ञान के रूप में मानने से सम्बन्धित नहीं है? **(2023, IInd ग्रेड)**
   (1) इसके सिद्धान्तों एवं नियमों में परिवर्तन सम्भव नहीं है।
   (2) इसमें व्यवहार के अध्ययन हेतु वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता है।
   (3) इसके सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हैं।
   (4) इसमें वर्तमान ज्ञान के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है। (1)
10. 'शिक्षा मनोविज्ञान नये और हमेशा नये अनुसंधानों से सम्बन्धित है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान परिणामों के एकत्रीकरण से बालक की प्रकृति के विषय में बेहतर सूझ (अन्तर्दृष्टि) प्राप्त करते हैं और अन्वेषण की संशोधित विधियों का विकास करते हैं।' शिक्षा मनोविज्ञान की यह प्रकृति है– **(2023, IInd ग्रेड)**
    (1) धनात्मक विज्ञान (2) नियामक विज्ञान
    (3) विकासशील विज्ञान (4) सामाजिक विज्ञान (1)
11. ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण तथा अधिगम से सम्बन्धित होती है।'' इस विचार के प्रतिपादक हैं: **(2023, IInd ग्रेड)**
    (1) कॉलसनिक (2) स्किनर
    (3) क्रो एवं क्रो (4) स्टीफन (2)

1 बाल विकास (Child Development)

वृद्धि और विकास की संकल्पना, विकास के सिद्धांत एवं आयाम, विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्व (विशेषकर परिवार एवं विद्यालय के संदर्भ में) एवं अधिगम से उनका संबंध।

Concept of growth and development, Principles and dimensions of development. Factors affecting development (especially in the context of family and school) and its relationship with learning.

वंशक्रम एवं वातावरण की भूमिका (Role of Heredity and environment)

- बाल मनोविज्ञान (**Child Psychology**) वह **समर्थक** या **विधायक** विज्ञान है जो बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के विभिन्न **पहलुओं का अध्ययन जन्म से परिपक्वता** तक करता है।
- अर्थात् जन्म के समय कौनसी **शारीरिक** एवं **मानसिक शक्तियाँ** मौजूद रहती है और धीरे–धीरे उनका विकास किस प्रकार होता है। जिसे आधुनिक युग में बाल विकास (Child Development) के नाम से जाना जाता है।
- कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसे **विकासात्मक मनोविज्ञान** कहा है क्योंकि **इसमें विकास का अध्ययन किया जाता** है।
- विज्ञान **दो तरह** का होता है। एक **आदर्शक विज्ञान** एवं **दूसरा विद्यायक विज्ञान।** अतः आदर्श विज्ञान में चाहिये से सम्बन्धी अध्ययन के **साथ–साथ, सौन्दर्य विज्ञान, आचार विज्ञान का अध्ययन** जबकि **विधायक विज्ञान** में जो है **वह वास्तविक** है। अतः **वास्तविकता का अध्ययन** किया जाता है। इसलिये कुछ विद्वानों द्वारा इसको **वर्णनात्मक विज्ञान** का नाम दिया जाता है।
- बाल विकास में **बच्चों के व्यक्तित्व, खेलकूद, भाषा, संवेग, भाव, प्रत्यक्षीकरण** आदि का अध्ययन किया जाता कि इनका **विकास कब** और **कैसे** हुआ है।
- **प्लेटों ने** अपनी पुस्तक Republic में इस तथ्य को स्वीकार किया की **बाल्यावस्था के प्रशिक्षण का प्रभाव** बालक के **व्यावसायिक दक्षता पर अनिवार्य** देखा जाता है।
- अन्य मनोवैज्ञानिकों का वर्गीकरण निम्न देखा जा सकता है। जैसे– **टाइडमैन, पैस्टॉलाजी एवं स्टेनली हॉल** द्वारा दिया गया है।

❐ बाल विकास का इतिहास

1. कॉमेनियस–
- 1628– **School of infancy** की स्थापना की
- 1657– **दो पुस्तकों** की रचना की
  - (i) प्राथमिक शिक्षा
  - (ii) **पाठ्यसामग्री को चित्रों के माध्यम से रोचक करना।**

2. पेस्टालॉजी–
- 1774 – **Baby Biography** पर आधारित बाल विकास का **सर्वप्रथम वैज्ञानिक विवरण** प्रस्तुत किया
- **स्वयं के** 3½ **वर्ष के बालक पर परीक्षण** किया।

3. टाइडमैन– 1787 में **Baby Biography** पर बाल विकास का **शारीरिक** एवं **मानसिक** विवरण प्रकाशित किया।
4. टैने– 1869 में Infant child development पुस्तक लिखी।
5. डार्विन– 1877 में **Biographical sketch of an Infant** पुस्तक लिखी।
6. प्रेयर– **1881** में the mind of the child पुस्तक लिखी।
- **स्वयं के बच्चे की जन्म से** 3½ **वर्ष** तक की Biography तैयार की।

7. गैसेल– 1928 में **दो पुस्तकों** की रचना की–
- **infancy of Human growth**
- **guidance of mental growth**

8. जीन पियाजे– निम्न पुस्तकें
- **Child conception of the world**
- **Language and thought of the child**
- **Moral Judgement of child.**

- अमेरिका में **बाल अध्ययन आन्दोलन** चला यहाँ **स्टेनले हॉल** ने **बाल अध्ययन समिति** (Child study society) व **बाल कल्याण समिति** (Child welfare organisations) की स्थापना की, साथ ही पत्रिका प्रकाशित की थी– Pedagogical seminary
- इंग्लैण्ड में **सली** ने British Association for child study की स्थापना की।

- **न्यूयॉर्क में 1887 में बालगृह** की स्थापना हुई।
- मिलर व डोलार्ड ने – **Social Learning and Intation.** अधिगम **सिद्धान्त** का प्रतिपादन किया।
- **भारत में** बाल मनोविज्ञान सम्बन्धी अध्ययन का प्रारम्भ 1930 में हुआ, इसका **सर्वाधिक प्रयोग व्यक्तित्व** एवं **मापन के क्षेत्र** में हुआ था। (ताराबाई मोडेक द्वारा किया गया था।)
- भारत में गिजु भाई बाधेका **ने माण्टेसरी** से प्रभावित होकर **1920 में बाल मन्दिर संस्था** (गुजरात) में स्थापित की।
- स्टेनली हॉल द्वारा **सबसे पहले प्रश्नावली विधि** का प्रयोग बाल विकास संबंधी अध्ययन के लिए किया था।
- प्रथम बाल निर्देशन संस्था की स्थापना **शिकागो में** 1909 में विलियम हिली के द्वारा किया गया था।

2. **जातिय संस्कृति**– जातीय संस्कृति के **अनुरूप ही व्यक्ति का विकास** होता है जो **संस्कृति जितनी विकसित** होगी उनसे सम्बन्धित **व्यक्ति उतनी ही अधिक मात्रा में गुणों का अर्जन** करेगा।

- **जैसे**– भारतीय बालक का **आध्यात्मिक** होना पाश्चात्य का **भौतिकतावादी** होना।

3. **वर्ण**– **श्वेत वर्ण** की जातियों में **बालक का शारीरिक** और **बौद्धिक विकास** अन्य जातियों के बालकों से कहीं अधिक होता है।

4. **भोजन**– भोजन बालक के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है उचित **शारीरिक विकास के लिए सन्तुलित आहार, प्रोटिन, वसा, विटामिन** और **खनिज पदार्थ** आदि उचित अनुपात में विद्यमान होना आवश्यक है।

5. **लिंग भेद**– मानसिक दृष्टि से भी **लड़कियाँ लड़कों की तुलना में शीघ्र विकसित** हो जाती है

- **लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा यौन सम्बन्धी परिपक्वता एक वर्ष पहले ही** प्राप्त कर लेती है।
- जन्म के समय लड़के आकार और भार में **लड़कियों से कुछ अधिक बड़े** होते हैं।
- लड़कियां, लड़कों की **अपेक्षा शीघ्र बढ़ती** है।
- **9–12 वर्ष की आयु** तक **लड़कियाँ** विकास के क्षेत्र में **लड़कों से आगे बढ़** जाती है।

6. **अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियाँ**–

- **व्यक्ति के गले में उपगल–ग्रन्थि** होती है और इसके स्त्राव द्वारा व्यक्ति के गले में **केल्शियम का विनिमय** होता है।
- गल–ग्रन्थि से जो **रस प्रभावित** होता है। वह **मानसिक** और **शारीरिक विकास** में काफी सहायक है।

वंशानुक्रम का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Heredity)

✦ आनुवांशिकता को ऐसी **अदृश्य शक्ति** मानते हैं जिसके द्वारा बालक में **माता–पिता के गुण–अवगुण** निहित रहते हैं परन्तु ऐसा **समझना भूल** है। बालक में माता–पिता जैसी समानता हो यह आवश्यक नहीं है। एक ही **माता–पिता से जन्मी सन्ताने अलग–अलग** हो सकती है।

- शिशु का जीवन अपने **पिता के वीर्यकरण** (Sperm) और **माता के रजकण** (ovum) के मेल से प्रारम्भ किया है।

☞ ''वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती है जो जीवन के आरम्भ के **समय, जन्म के समय** नहीं वरन् **गर्भाधारण के समय** लगभग **नौ माह पूर्व उपस्थित** थी''– **वुडवर्थ**

☞ ''एक प्राणी के वंशानुक्रम में वे **सभी संरचनाएँ, शारीरिक विशेषताएँ, क्रियाएँ** अथवा **क्षमताएँ** सम्मिलित रहती है। जिन्हें वह **माता–पिता, अन्य पूर्वजों या प्रजाति से प्राप्त** करता है''– **डगलस व हॉलेण्ड**

➢ **नोट**– वंशानुक्रम को **कानूनी अवधारणा** मानने वाले व्यक्ति **रेडक्लिप ब्राउन** है।

वंशानुक्रम की रचना (Compeoisition of Inheritance)

✦ **निषेचन (Fertilization)– मासिक धर्म शुरू** होने के लगभग **चौदह दिन बाद निषेचन की प्रक्रिया** होती है यह **पुरुष के शुक्राणु** (Sperm) एवं **स्त्री के अंडाणु** (Ovum) का संयोग होने से होती है जिसमें **एक कोशिका का निर्माण** होता है।

- इस कोशिका के **विभाजन से पूर्व तक यह डिम्ब** कहलाती है। **अण्डाणु मानव शरीर की सबसे बड़ी कोशिका** है। अण्डाणु का आवरण **फॉलिकल** कहलाता है।
- **अण्डाणु फैलोफियन ट्यूब** की सहायता से गर्भाशय की ओर जाता है। इसी में निषेचन होता है। **शुक्राणु शरीर की सबसे छोटी कोशिका** है।
- एक परिपक्व **पुरुष में प्रतिदिन 10 करोड़ शुक्राणु** बनते हैं। शुक्राणु एवं अण्डाणु के निषेचन के बाद **गर्भाधान नहीं** होता तो **शुक्राणु स्त्री की श्वेत स्थिर कणिकाओं द्वारा समाप्त** कर दिया जाता है।

- **जीनोटाइप**– प्रत्येक व्यक्ति की **आनुवांशिक रचना** होती है।
- **फीनोटाइप**– इसमें शारीरिक विशेषताओं में **लम्बाई, वजन** एवं **बालों का रंग** आदि आते हैं। **व्यक्तित्व** एवं **बुद्धिमता** इसमें आती है।

- मानव शरीर की **संरचना का प्रारम्भ केवल एक कोष** से होता है, जिसे **'संयुक्त कोष (Zygote)'** कहते हैं।

➢ **नोट**– यह **संयुक्त कोष निम्न प्रकार बनता** है।

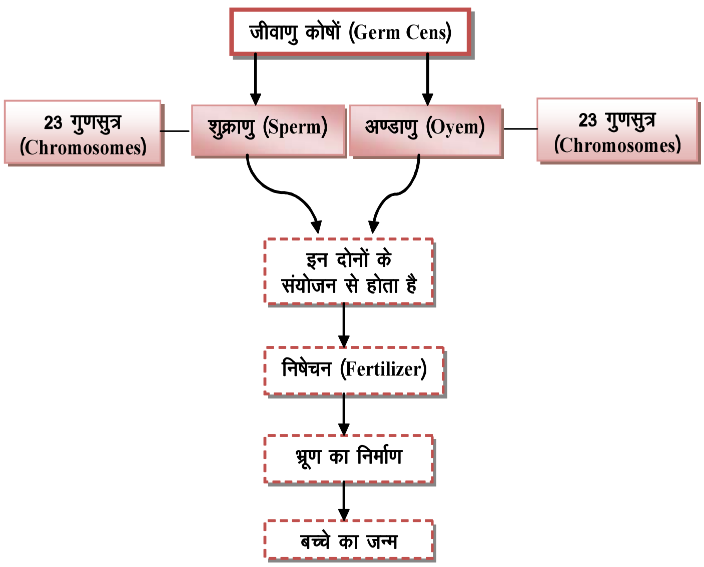

(B) बाल्यावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Childhood)

- बाल्यावस्था में मानसिक **विकास तेजगति** से होता है। बालक में **रुचि, चिन्तन, स्मरण, निर्णय व समस्या समाधान आदि गुणों का स्वतः ही विकास** होता है।

(i) संवेदना व प्रत्यक्षीकरण–

- **ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करना शुरू** कर देता एवं **जिज्ञासा में तीव्रता** का होना देखा जाता है।
- **शुरुआत में समय, स्थान, आकार गति, दूरी** से सम्बन्धी **प्रत्यक्षीकरण विकसित** न होना।
- **अन्त के वर्षों में** प्रत्यक्षीकरण योग्यता विकसित होती है।

(ii) समस्या समाधान–

- आने वाली **दैनिक समस्या** का समाधान करने लगता है।
- **मूर्त चिन्तन** ही करता है।
- दिन, दिनांक, **वर्ष का ज्ञान** कर लेता एवं समस्या समाधान की योग्यता देखने को मिलती है।

(iii) स्मरण शक्ति–

- देखी गई फिल्म या **कहानी** का लगभग **75% वापिस सुना** देना।
- छोटी–छोटी पंक्ति को **दोहराना** व **कहानी सुनाना**।
- **रटने व गृहणक्षमता में तीव्र वृद्धि** ।

(iv) सम्प्रत्यय निर्माण–

- मूर्त **वस्तु पर आधारित** धारणा का निर्माण
- पुराने की जगह नये **सम्प्रत्यय का निर्माण** करना।
- **रचनात्मक शक्ति** एवं **आदर्श निर्माण इसी अवस्था में शुरु** होता है।
- **मानसिक शक्तियों में वृद्धि** होती है।
- नये–नये लोगों से सम्पर्क होने के कारण **जिज्ञासा की वृद्धि** होती है।
- **भाषा विकास तीव्र गति** से होता है।
- समस्या हल करने की क्षमता विकसित हो जाती है।

☞ "जब **बालक 6 वर्ष** का हो जाता है, तब उसकी **मानसिक योग्यता** का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है"– **क्रो व क्रो**

- **6 वर्ष**–
  (i) बालक आसानी से **13–14 तक गिनती** सुना देता है।
  (ii) **सरल प्रश्नों के उत्तर** देता है।
  (iii) **शरीर के अंगों के नाम** बता देता है।
- **7 वर्ष** – तुलना करना एवं साधारण समस्या का समाधान करना।
- **8 वर्ष** –
  (i) छोटी–छोटी **कहानी** एवं **कविता को दोहराना**।
  (ii) **16 शब्दों के वाक्यों** को आसानी से बोलना।
- **9 वर्ष**– **दिन, समय, तारीख, वर्ष** एवं **देखी गई फिल्म के बारे में 60% तक वापिस बताना**।
- **10 वर्ष**–
  (i) बालक **3 मिनिट में 60–70 शब्द बोल** सकता है।
  (ii) नियम, परम्परा एवं सूचनाओं को समझने लगता है।
- **11 वर्ष**– बालक में **तर्क, जिज्ञासा** और **निरीक्षण** की शक्तियों का विकास करता है।
- **12 वर्ष**–
  (i) और **अधिक तर्क करने** लगता है।
  (ii) देखी गई फिल्म की **75% बातें** बता सकता है।

(C) बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Childhood)

☞ **"बालक में सबसे पहले भय एवं प्रेम के संवेग विकसित होते हैं"– वाटसन**

(i) **लड़कों में ईर्ष्या का अभाव** जबकि **लड़कियों में काफी देखने** को मिलता है।

(ii) बालक दूसरों के **सम्पर्क** में आने लगता है जिससे **व्यवहार में परिवर्तन होने** लगता है।

(iii) बालक के **संवेगात्मक विकास में शिक्षक की अहम भूमिका** होती है। क्योंकि कठोर अनुशासन वाला शिक्षक विकृत व्यवहार करना सिखाता है।

(iv) संवेगों को **दमन करने की कोशिश** करता है।

(v) **चिंता मुक्त अवस्था होती है।**

- इस अवस्था में **संवेगों में स्थायित्व** आने लगता है।
- प्रत्येक क्रिया के **प्रति प्रेम, ईर्ष्या, घृणा व प्रतिस्पर्धा की भावना प्रकट** होने लगती है।

☞ "बाल्यावस्था के **सम्पूर्ण वर्षों** में संवेगों की अभिव्यक्ति में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं"– **क्रो व क्रो**

- बाल्यावस्था में **संवेगात्मक विकास** पर विद्यालय का वातावरण एवं शिक्षक की भूमिका का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।
- बाल्यावस्था में अर्थात् **6 वर्ष का बालक अपने भय** व **क्रोध पर नियन्त्रण** कर लेता है।
- बालक के **संवेगों में विशिष्टता** आ जाती है।

☞ "बालक सामान्य रूप से प्रसन्न रहता है और **दूसरों के प्रति उसका विद्वेष अस्थायी** होता है।"– **एलिस क्रो**

(D) बाल्यावस्था में भाषा विकास (Language Development in Childhood)

- बाल्यावस्था में **बालक शब्द** से लेकर वाक्य विन्यास तक की **सभी क्रियाएँ** सीख लेता है।

4. **सुख–दुख की भावना**– किसी **आशा में खुशी** होती है निराशा में **दुख की अनुभूति।**
5. **व्यवहार में परिवर्तन**– दया होने पर **सामान्य व्यवहार** की जगह काफी वह **अलग व्यवहार** करने लगता है।
6. **शारीरिक परिवर्तन**– कापना, **रोंगटे खड़े होना**, मुख सूझ या सूख जाना, **मुँह लाल होना**, पसीना आना, आवाज कर्कश होना, हंसना मुस्कराना, **चेहरे खिलना** आदि।
7. **मानसिक परिवर्तन**– किसी **वस्तु स्थिति का ज्ञान, स्मरण** या **कल्पना करना, ज्ञान के कारण सुख–दुःख की अनुभूति, उतेजना से कार्य करने में तीव्रता।**
8. **विचार शक्ति का लोप होना**– हम उचित या अनुचित का विचार किये बिना कुछ भी कर बैठते हैं। **क्रोध में आकर मानव, मानव की हत्या** कर देता है।
9. **संवेग में क्रिया की प्रवृत्ति** होती है–

- **स्टाउट** ''संवेग में निश्चित दिशा में **क्रिया की प्रवृत्ति** होती है''। कुछ न कुछ अवश्य किया जाता है लज्जा का अनुभव होने पर **बालिका नीचे की ओर** देखने लगती है।

10. **संवेग में भावों का स्थानान्तरण** होता रहता है।
11. संवेग किसी **मूल प्रवृत्ति या जेविकीय उत्तेजना** से जुड़े होते है।
12. प्रत्येक **जीवित प्राणी में संवेग** होते हैं।
13. संवेग शीघ्रता से **उत्पन्न व शीघ्रता** से समाज
14. एक ही संवेग को **अनेक प्रकार** की उतेजना से उत्पन्न किया जा सकता है।
15. प्रत्येक संवेग का **एक व्यावहारिक पहलु** होता है।
16. संवेगों की **अभिव्यक्ति के तरीके जन्मजात** होते हैं।
17. संवेगों की उत्पत्ति **मनोवैज्ञानिक** होती है।
18. **संवेग अंतर्मुखी** होते हैं एवं संवेग आंतरिक भावना को ही कहा जाता है।
19. संवेगों की **प्रकृति रागात्मक** एवं **देशात्मक** होती है।

(i) गेट्स का वर्गीकरण (Classification of Gates)–

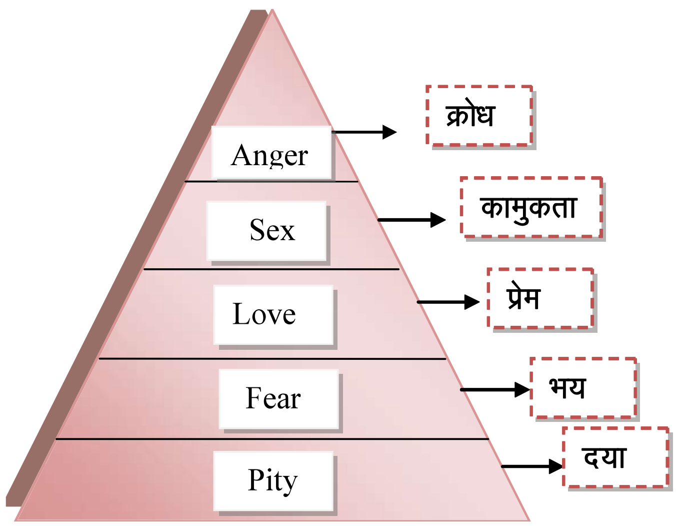

(ii) मैक्डुगल का वर्गीकरण (Classification of Mcdougall)–

(iii) रॉस का वर्गीकरण (Classification of Ross)–

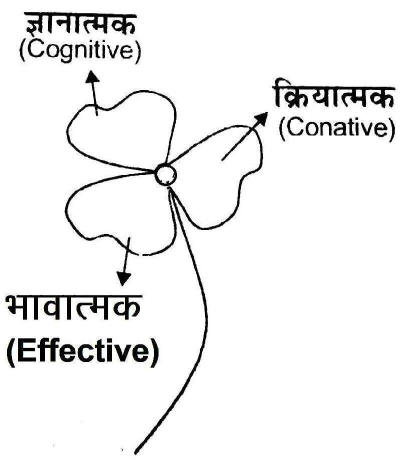

(iv) डॉ. जायसवाल का वर्गीकरण (Classification of Dr. Jayaswal)–

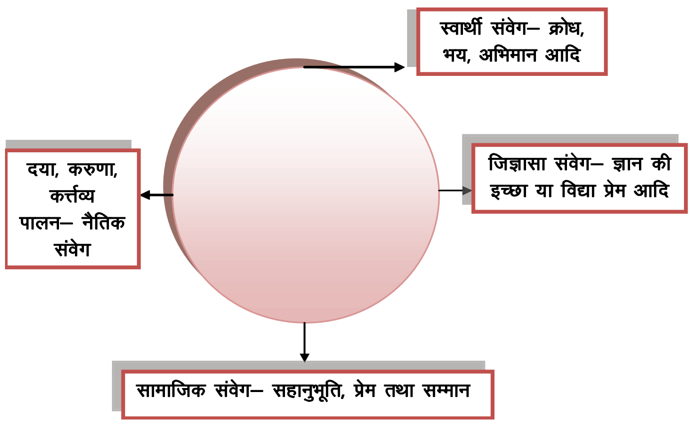

लम्बाई का संरक्षण	क्या इन दोनों छड़ियों की लम्बाई है? पूर्वविद्यालयी बालक का उत्तर : हाँ	एक छड़ी को दाईं तरफ खिसका दिया गया।	क्या इन दोनों छड़ियों की लम्बाई समान है? पूर्वविद्यार्थी बालक का उत्तर : नहीं
द्रव्य (तरल) का संरक्षण	क्या दोनों गिलासों में समान मात्रा में पानी भरा है? 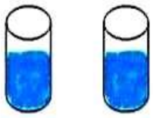 पूर्वविद्यालयी बालक का उत्तर : हाँ	एक गिलास के पानी को चौड़े बर्तन में डाल दिया गया।	क्या दोनों गिलासों में समान मात्रा में पानी भरा है? पूर्वविद्यालयी बालक का उत्तर : नहीं

3. मूर्त सक्रिय अवस्था
(Period of Concrete Operation)– 7 से 12 वर्ष

- इस अवस्था में **बच्चे का अतार्किक** चिन्तन सक्रियात्मक विचारों का स्थान ले लेता है। बच्चे **अब** जोड़ना **(Addition)**, घटाना **(Subtration)**, गुणा **(Multiplication)** और भाग करना **(division)** करना सीख जाते हैं।

➢ इसमें बालक **तीन चीजें आसानी से सीख** लेता है।
(1) विचारों की विलोमता **(Rererstrility of thought)**
(2) संरक्षण **(Conservation)**
(3) वर्गीकरण, पूर्ण व अंश का उपयोग **(Classification, Whole and part)**

- **बालक आसानी से** वस्तु के भार व आकार की दृष्टि से अलग करना, **छोटे–बड़े का वर्गीकरण** करना आदि।

(i) समाजीकरण की **शुरुआत** होने लगती है
(ii) इस अवस्था में **बालक तार्किक चिन्तन** तभी कर सकता जब वह उसके सामने **ठोस रूप से** अवस्थित किया जाये।
(iii) बालक **किसी समस्या के प्रति** स्वयं सोच नहीं सकता है।
(iv) बालक **डायग्राम** के दोनों गिलासमें अन्तर कर लेते हैं की दोनों की मात्रा बराबर है। **मात्र व आकार में भिन्नता है।**

(v) गुण के आधार पर वर्गीकरण कर सकते हैं।

➢ **चिंतन एवं तर्क की योग्यता का विकास हो जाता है।**
6 + 3 = 9 एवं 9 – 3 = 6
X < Y < Z अर्थात् **Y, X** से बड़ा है। साथ ही यह भी समझ लेता की **Y, Z** से छोटा है।

- यह अवस्था प्रत्यक्ष संसार से जुड़ा हुआ है न कि वह अमूर्त चिंतन से

- तर्क **(Logic)**– ठोस परिचालन में **आगमनात्मक तर्क** के उपयोग में काफी अच्छे होते हैं।
- संरक्षण **(Conservation)**– चार एकत्रित **चीज** को फैला भी दी जाये तो भी वह पता कर लेता की बराबर है यह मात्र फैलाव है।

4. औपचारिक परिचालन चरण **(Fornal Operational Stage)**–

(i) लोग अमूर्त धारणाओं, तर्क एवं व्यवस्थित योजना के बारे में विचार कर लेता है, **निगमनात्मक तर्क** अर्थात् काल्पनिक विचार, गणित एवं विज्ञान में अक्सर इसकी आवश्यकता होती है।
(ii) विभिन्न **प्रतीकों के माध्यम** से चिंतन करने लगते हैं।

✦ संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का क्षेत्र
- प्रत्यक्षीकरण
- भाषा
- पैटर्न पहचान
- प्रतिमावली
- अवधान
- ज्ञान का निरूपण
- चेतना
- स्मृति
- मानव बुद्धि एवं कृत्रिम बुद्धि
- चिन्तन
- विकासात्मक मनोविज्ञान

2. एवरम नोआम चॉमस्की का भाषा विकास सिद्धान्त–

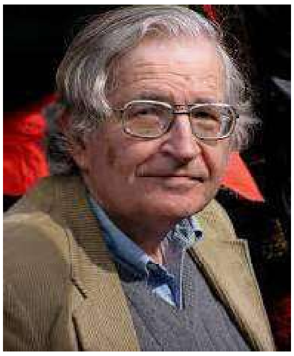

- जन्म– 7 दिसम्बर, 1928 अमेरिका

➢ पुस्तकें–
- **Knowledge of language**
- **Media Control**
- **The logical structure of linguistic theory**
- **Language of Mind**

- भाषा विकास **बौद्धिक विकास** की सर्वाधिक उत्तम कसौटी मानी जाती है। जन्म के समय शिशु क्रन्दन करता है। यही उसकी पहली भाषा है। वह **10 माह** में प्रथम शब्द बोलता है जिसे **बार–बार दोहराता** है।
- **1 वर्ष** तक शिशु की भाषा समझना कठिन है। केवल अनुमान द्वारा ही उसकी भाषा समझी जा सकती है। **शैशवावस्था में भाषा विकास जिस ढंग से होता** है। उस पर **परिवार की संस्कृति तथा सभ्यता का प्रभाव** पड़ता है।

84. कौनसा रोग वंशानुगत है? (REET, 2021 (L-1))
(1) ए.डी.एच.डी. (2) फीनाइलकिटोनूरीया
(3) पारकिन्सन्स (4) एच.आई.वी.– एड्स (2)

85. डाउन संलक्षण का कारण है– (REET, 2021 (L-1))
(1) त्रिगुणसूत्रता–20 (2) त्रिगुणसूत्रता–21
(3) XXY गुणसूत्र (4) त्रिगुणसूत्रता–22 (2)

86. ''मानव विकास आजीवन चलता रहता है, यद्यपि दो व्यक्ति बराबर नहीं होते हैं, किन्तु सभी सामान्य बालकों में विकास का क्रम एक सा रहता है।'' यह कथन विकास के किस सिद्धांत की ओर संकेत करता है? (REET L-1, 2021)
(1) सतत् विकास का सिद्धांत
(2) परस्पर संबंध का सिद्धांत
(3) समान प्रतिरूप का सिद्धांत
(4) सामान्य से विशिष्ट अनुक्रियाओं का सिद्धांत (3)

87. विकास की किस अवस्था में एक व्यक्ति व्यावसायिक समायोजन की समस्या का सामना करता है? (REET L-1, 2021)
(1) वृद्धावस्था (2) किशोरावस्था
(3) बाल्यावस्था (4) शिशु अवस्था (2)

88. मानसिक विकास का संबंध नहीं है? (REET L-2, 16 Oct. 2021)
(1) स्मृति का विकास से (2) तर्क एवं निर्णय से
(3) अवबोध की क्षमता से
(4) शिक्षार्थी के वजन एवं ऊँचाई से (4)

89. आनुवांशिकी के जनक है– (REET L-1, 2021)
(1) ग्रेगर मेन्डल (2) थामस हन्ट मार्गन
(3) जेम्स वाट्सन (4) चार्ल्स डार्विन (1)

90. विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है, वह विचार संबंधित है– (REET L-II, 2021)
(1) निरन्तरता के सिद्धांत से (2) अन्तः सम्बन्ध के सिद्धांत से
(3) अन्योन्य क्रिया के सिद्धांत से
(4) एकीकरण के सिद्धांत से (1)

91. स्कैफोल्डिंग निम्नलिखित में से किस संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत से संबंधित है– (I Grade (Music) 2020) (H TET (L-I) 2021)
(1) ब्रूनर (2) पियाजे
(3) वाइगोत्सकी (4) गिलफोर्ड (3)

92. संज्ञानात्मक विकास के 'सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत' को किसने प्रस्तावित किया था– (Head Master 2021)
(1) कोहलबर्ग (2) लेव वाइगोत्सकी
(3) जे.एस. ब्रूनर (4) जीन पियाजे (2)

93. वाइगोत्सकी के अनुसार निम्नलिखित में से कौन से उपकरण एक व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास में सहायता प्रदान करते हैं– (I Grade (Chemistry) 2020)
(1) सामाजिक और सांस्कृतिक उपकरण
(2) भौतिक उपकरण
(3) सांवेगिक उपकरण (4) व्यक्तिगत उपकरण (1)

94. निम्न में से किसने सामाजिक रचनावाद (Constructivism) दर्शन पर अत्यधिक बल दिया? (REET L-II, 2018) (I Grade (Music) 2020)
(1) वायगोटस्की (2) पियाजे
(3) डेवी (4) कोलबर्ग (1)

95. 'निकटस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD)' की अवधारणा ...... द्वारा दी गई है। (I Grade (Maths) 2020) (I Grade (Chemistry) 2020)
(1) एल.एस. वायगोत्स्की (2) एम. प्रेसले
(3) बी. रोगोफ (4) ए. कोलिन्स (1)

96. विकास संबंधित है– (1st Grade (Biology) 2020)
(1) वृद्धि से (2) परिपक्वता से
(3) आयु से (4) सभी विकल्प सही हैं (4)

97. एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के सिद्धांत के अनुसार किशोरावस्था की विशेषता है– (RBSE-2020)
(1) सृजनात्मक बनाम ठहराव (2) सम्पूर्णता बनाम हताशा
(3) उद्यमिता बनाम हीनभावना (4) तादात्मकता बनाम भ्रांति (4)

98. भाषा के अर्जन एवं विकास के लिए सर्वाधिक संवेदनशील अवधि कौन–सी है– (C TET (L-I), 2019)
(1) जन्म पूर्व अवधि (2) प्रारम्भिक बाल्यावस्था
(3) मध्य बाल्यावस्था (4) किशोरावस्था (2)

99. निम्न अवधि में से किसमें शारीरिक वृद्धि एवं विकास तीव्र गति से घटित होता है– (C TET (L-I), 2019)
(1) शैशवावस्था एवं प्रारम्भिक बाल्यावस्था
(2) प्रारम्भिक बाल्यावस्था एवं मध्य बाल्यावस्था
(3) मध्य बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था
(4) किशोरावस्था एवं वयस्कता (1)

100. शैशवावस्था होती है– (C TET (L-1) 2015)(NTT- 2019)
(1) पाँच वर्ष तक (2) बारह वर्ष तक
(3) 21 वर्ष तक (4) इनमें से कोई भी नहीं (1)

101. निम्न में से कौन–सी शैशवावस्था की विशेषता नहीं है? (पूर्व प्राथमिक शिक्षा अध्यापक (NTT)- 2019) (REET L-2 Exam 2016) (III Grade T. 2013)
(1) शारीरिक विकास में तीव्रता (2) दूसरों पर निर्भरता
(3) मानसिक क्रियाओं में तीव्रता
(4) नैतिकता की पूर्णता (4)

1 व्यक्तिगत विभिन्नताएँ (Individual Differences)

अर्थ, प्रकार एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक।

Meaning, types and Factors Affecting Individual differences Understanding individual differences.

वैयक्तिक विभिन्नता का अर्थ (Meaning of Individual Differences)

- प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक गुणों के आधार पर एक–दूसरे से **भिन्न** होता है। शारीरिक रचना, रंगरूप, कद, आदि गुणों को शारीरिक शीलगुण कहते हैं, जिन्हें हम खुली नजरों से देखते हैं।
- दूसरी ओर बौद्धिक योग्यता, अभिरूचि, मनोवृत्ति, उपलब्धि, आकांक्षा इन गुणों के आधार को शीलगुण कहते हैं। इनका ज्ञान व्यक्ति की विभिन्न कार्यकुशलता व्यवसाय चयन आदि के आधार पर **अप्रत्यक्ष रूप** से होता है।

→ टायलर ने वैयक्तिक विभिन्नता को सार्वभौमिक घटना माना है।
→ सर्वप्रथम वैयक्तिक विभिन्नता की अवधारणा गाल्टन के द्वारा दी गयी थी।
→ स्कीनर का मानना है कि यदि शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार चाहता है तो उसे व्यक्तिगत विभिन्नता के स्वरूप का ज्ञान होना आवश्यक है।

- कुल मिलाकर **वैयक्तिक भिन्नता** का तात्पर्य व्यक्ति के विशिष्ट लक्षणों से है, जो उसे दूसरे व्यक्तियों से भिन्न बना देते हैं।
- इन वैयक्तिक भिन्नता को दो प्रकार से अलग–अलग किया जा सकता है। समूह में भिन्नता एवं व्यक्ति के अन्दर भिन्नता, इन आधारों को भिन्नता में शामिल किया जाता है।
- वैयक्तिक दृष्टि से वैयक्तिक भेदों का अध्ययन सबसे पहले **गाल्टन द्वारा** प्रारम्भ किया गया तब से इस पर अनेक शोधकार्य हो चुके हैं। इसी के आधार पर मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों के द्वारा कई तरह के नवाचार एवं प्रणाली विकसित की जा चुकी है।

☞ "वैयक्तिक भिन्नता एक ऐसी मनोवैज्ञानिक घटना है, जो उन विशेषताओं अथवा शीलगुणों पर बल देती है, जिनके आधार पर वैयक्तिक जीव एक–दूसरे से भिन्न होते प्रदर्शित किए जा सकते हैं"– रेबर

- यह सर्वविदित तथ्य (Fact) है कि दो मनुष्य एक दूसरे से मानसिक योग्यताओं (Mental Abilitles), शारीरिक क्षमताओं (Physical Abilities) तथा शील (Traits) गुणों के आधार पर भिन्न होते हैं, यहाँ तक कि जुड़वा **भाई–बहिन** भी एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। यह विभिन्नताएँ एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करती है।
- एक व्यक्ति दूसरे से तो भिन्न होता ही है किन्तु उसकी स्वयं की क्षमताओं में भी विभिन्नता पाई जाती है अर्थात् व्यक्ति में विभिन्न शील गुणों (Traits) की मात्रा एक बराबर नहीं होती है। एक व्यक्ति में कला के प्रति रूचि अधिक हो सकती है परन्तु उसमें संगीत के प्रति रूचि कम हो सकती है और वह **बुद्धि** में उत्तम हो सकता है।
- इन भिन्नताओं के कारण कक्षा के सभी **छात्रों** के साथ **एक समान व्यवहार** उनकी योग्यताओं के तथा क्षमताओं के विकास में बाधक हो सकता है। वैयक्तिक विभिन्नताओं के इन विभिन्न पहलुओं का ज्ञान आपके अपने कक्षा शिक्षण में छात्रों की क्षमताओं तथा विशेषताओं का **ध्यान** रखकर पढ़ाने में काफी सहायक होगा।

वैयक्तिक विभिन्नताओं की परिभाषाएँ (Definition of Individual Differences)

☞ **"मापन किए जाने वाला व्यक्तित्व का प्रत्येक पहलू वैयक्तित्व भिन्नता का अंश है।"** – स्किनर के अनुसार,

☞ "शरीर के आकार और रूप शारीरिक कार्य गति की क्षमताओं बुद्धि, उपलब्धि, ज्ञान, रूचियों, अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में मापी जाने वाली भिन्नताओं का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है।" – टायलर के अनुसार

☞ **"औसत समूह से मानसिक शारीरिक विशेषताओं के सन्दर्भ में समूह के सदस्य के रूप में भिन्नता या अन्तर को व्यक्तिक भेद कहते हैं।"** –जेम्स ड्रेवर के अनुसार

☞ "मनुष्यों में मनोवैज्ञानिक लक्षणों, शारीरिक मानसिक योग्यताओं एवं चारित्रिक व व्यक्तित्व विभेद को वैयक्तिक विभिन्नता कहते हैं।" –वुडवर्थ के अनुसार

☞ **"किसी प्रजाति विशेष के सदस्यों के मध्य व्यवहार की संरचना में पायी जाने वाली असमानताओं को वैयक्तिक विभिन्नता कहा जाता है।"** –एटकिन्सन के अनुसार

वैयक्तिक विभिन्नताओं के कारण (Causes of Individual Differences)

☞ "बुद्धि, परिपक्वता, अन्तःप्रेरणा और वातावरणीय उद्दीपनों की भिन्नता वैयक्तिक विभिन्नता के प्रमुख कारण है।" –गैरिसन के अनुसार

2 व्यक्तित्व (Personality)

व्यक्तित्व की संकल्पना, प्रकार व व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले तत्त्व व व्यक्तित्व मापन।

Personality- Concept and types of personality, Factors responsible for shaping it. Its measurement.

व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Personality)

➢ व्यक्तित्व को अनेक तरह से परिभाषित किया जाता है अनेक **धारणाएँ** प्रचलित है। साधारण बोलचाल में बाह्य रंग–रूप से ही इसको समझा जाता है, लेकिन कुछ निम्न दृष्टिकोण है–

1. शाब्दिक अर्थ– व्यक्तित्व अंग्रेजी के **Personality** का हिन्दी रूपान्तर है। यह **लैटिन** के **Persona** से लिए गया है जिसका अर्थ है नकाब, नकली चेहरा, मुखौटा या वेशभूषा जिसे नाटक करते समय नाटक के पात्र पहनकर, तरह–तरह के रूप बदला करते थे। इस प्रकार व्यक्तित्व बाह्य गुणों का एक रूप है।
2. सामाजिक दृष्टिकोण के आधार पर– बताया कि व्यक्तित्व उन सब तत्वों का संगठन है जिनके द्वारा व्यक्ति को समाज में कोई स्थान प्राप्त होता है इसलिए हम व्यक्तित्व को **सामाजिक धारा** मानते हैं।
3. सामान्य आधार पर– व्यक्तित्व का अभिप्राय बाह्य रूप एवं उन गुणों से लगाते हैं जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरों को **अपनी और** आकर्षित और प्रभावित करके विजय पाता है।
4. व्यवहार के आधार पर– ''व्यक्तित्व व्यक्ति के संगठित व्यवहार का सम्पूर्ण चित्र होता है''– डेशील
5. दार्शनिक आधार पर– **दर्शनशास्त्र** में माना कि व्यक्तित्व **आत्मज्ञान** का ही दूसरा नाम है। यह पूर्णता का आदर्श है।
6. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर– इसमें **वंशानुक्रम** एवं वातावरण दोनों को महत्त्व प्रदान किया गया है। व्यक्ति में आन्तरिक एवं बाह्य जितनी भी विशेषताएँ, योग्यताएँ और विलक्षणताएँ होती है, उन सबका समन्वित रूप व्यक्तित्व है।

→ मनोविज्ञान में **सबसे पहले** व्यक्तित्व की अवधारणा एडलर नामक मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गयी थी।

→ व्यक्तित्व का सबसे पहले वर्गीकरण हिप्पोक्रेट्स नामक **यूनानी दार्शनिक** के द्वारा किया गया था।

❖ व्यक्तित्व क्या है? (What is Personality)

- व्यक्तित्व के बारे में लोगों की **अलग–अलग** धारणा है, क्योंकि कई लोग व्यक्तित्व को चरित्र का उद्गम स्थान स्वीकार करते हैं। मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक भी इसी सन्दर्भ में एक मत नहीं है।
- व्यक्तित्व से हमारा तात्पर्य व्यक्ति के **मानसिक विकास** से नहीं होता और ना ही उसके **शारीरिक** और **मानसिक** विकास के समन्वय से होता है। अधिकतर लोग व्यक्तित्व को व्यक्ति के शारीरिक गठन का परिचायक मानते हैं, लेकिन ऐसा स्वीकार करना व्यक्तित्व के पक्ष को स्वीकार करने से अधिक नहीं है, क्योंकि व्यक्तित्व में **गतिशीलता** है, गतिशून्यता नहीं है।
- व्यक्तित्व में **केवल** हमारी मूल–प्रवृत्तियों का ही प्रभाव नहीं रहता अपितु शिक्षा के फलस्वरूप विभिन्न अर्जित **व्यवहारों** का भी फल होता है।
- प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के एक समान लक्षण नहीं मिलते इनकी विभिन्नताओं के मुख्य कारण जैविकीय एवं वातावरणीय तत्वों को माना जाता है।
- व्यक्तित्व व्यक्ति के **आन्तरिक** एवं **बाह्य** क्रियाओं का संगठन है इसी के आधार पर व्यक्ति का समाज में आचरण प्रकट होता है इसमें व्यक्ति का **बाह्य स्वरूप** उसके विभिन्न गुण, उसकी अभिवृत्तियाँ, क्षमताएँ आदि शामिल की जाती है। निष्कर्ष में कहा जा सकता कि व्यक्तित्व व्यक्ति की आचरण सम्बन्धी गुणों का समूह है जिसमें उसकी रुचियाँ, अभिवृत्तियाँ, क्षमतायें, **योग्यतायें** उसके व्यावहारिक प्रारूपों का निर्माण कर उसके वातावरण के प्रति सम्बन्धों को व्यक्त करती है।

व्यक्तित्व की परिभाषाएँ (Definition of Personality)

☞ ''सम्पूर्ण व्यक्तित्व वह है, जिसमें उसकी क्षमताएं एवं समस्त भूतकालीन अधिगम सम्मिलित है और इन सभी कारकों तथा संगठन, संश्लेषण उसके व्यवहारगत प्रतिमाओं, **विचारों, आदर्शों, मूल्यों** तथा अपेक्षाओं में अभिव्यक्त होता है''– गैरीसन

➢ **उपरोक्त परिभाषा के आधार पर व्यक्तित्व को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है–**

1. व्यक्ति के व्यवहार की समग्रता
2. जन्मजात एवं अर्जित स्वभावों का योग
3. व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के रूप अभिरुचियों, अभिक्षमताओं (Aptitude) क्षमताओं (Capacity) का विशिष्ट संगठन
4. पर्यावरण से सामजंस्य
5. शीलगुणों (Traits) के समग्र रूप
6. व्यक्ति के गुणों (**सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक**) का समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ आदान–प्रदान

3

बुद्धि (Intelligence)

संकल्पना, सिद्धांत एवं इसका मापन, बहुबुद्धि सिद्धांत एवं इसके निहितार्थ।

Concept, Theories and its measurement. Multiple Intelligence. Its implication.

बुद्धि का अर्थ (Meaning of Intelligence)

- बुद्धि व्यक्ति में वैचारिक क्रिया है एवं वह उसके सार्थक परिपक्वता का विकास करती है। बुद्धि के आधार पर व्यक्ति न केवल स्वयं के लिए **कार्य** सिद्ध करता बल्कि वह परिवार, समाज और देश के लिए सृजनात्मक इकाई के रूप में विकसित होता है।
- सामान्यतः बुद्धि एक **अद्भुत क्षमता** है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने समस्या समाधान पर आधारित, कुछ ने समायोजन, कुछ ने सीखने की योग्यता, अमूर्त चिन्तन की योग्यता के आधार पर परिभाषित किया गया था।
- प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि किसी भी कार्य को पूर्ण करना हो तो उसके लिए बुद्धि की अति आवश्यकता होती है। बुद्धि को सबसे पहले परिभाषित करने का कार्य **यूनान के दार्शनिकों** द्वारा किया गया था। वैसे देखा जाता कि जिस व्यक्ति की सीखने, समझने, धारण करने की शक्ति तीव्र होती है उसे बुद्धिमान माना जाता है।
- बुद्धि को परिभाषित करने हेतु मनोवैज्ञानिकों द्वारा एक सभा 1910 में हुई, अमेरिकन की सभा 1921 में, विश्व के मनोवैज्ञानिक की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस सभा 1923 को हुई थी परन्तु वे यह नहीं स्पष्ट कर सके कि बुद्धि में स्मृति, कल्पना, भाषा, **अवधान**, गामक तथा संवेदनशीलता सम्मिलित है या नहीं। अलग–अलग मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि को अपने अलग–अलग अंदाज में विभिन्न प्रकार की परिभाषा बतायी थी।

1. **प्रथम श्रेणी की परिभाषाओं में–** बुद्धि सीखने की क्षमता का नाम है तथा जो सीखा जा चुका है, उसे नई दशाओं में प्रयोग करने का **गुण** है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिकों का एक वर्ग, जिनमें **बकिंघम, डार्विन** तथा **एबिंगहास** के नाम प्रमुख है, यह मानते हैं कि बुद्धि सीखने की क्षमता है।
2. **द्वितीय श्रेणी की परिभाषाओं में–** बुद्धि को वातावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। जीवन की नई परिस्थितियों में व्यवस्थित होने तथा नई **समस्याओं को सुलझाने** में बुद्धि की क्षमता को **केलविन, स्टर्न** तथा **पियाजे** ने महत्त्व दिया है।
3. **तृतीय श्रेणी की परिभाषाओं में–** जो अमूर्त चिंतन को ही बुद्धि का प्रधान लक्षण मानता है। इन मनोवैज्ञानिकों ने अपनी परिभाषाओं में बुद्धि को अमूर्त चिंतन करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया है।

- फ्रांस के मनोवैज्ञानिक **बिने** तथा अमेरिका के **टरमन** जैसे मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के द्वारा अमूर्त चिंतन की क्षमता या प्रतीकों द्वारा किसी समस्या के समाधान को प्राप्त करने पर बल दिया है।
- इसी प्रकार **गिलफोर्ड, स्टोडर्ड** तथा वेक्सलर के अतिरिक्त अन्य बहुत से मनोवैज्ञानिक हैं, जिन्होंने **बुद्धि** के किसी न किसी पक्ष को लेकर परिभाषाएँ निर्मित की हैं।
- यह कहना **अतिश्योक्ति** नहीं होगा कि आज जितने मनोवैज्ञानिक हैं, बुद्धि की उतनी ही परिभाषाएँ हैं। इन कारणों से ही इसे विवादास्पद सम्प्रत्यय माना जाता है।

बुद्धि की परिभाषाएँ (Definition of Intelligence)

- ☞ ''परीक्षण जिसे **परीक्षित** करते हैं, वही बुद्धि है''– बोरिंग
- ☞ ''परीक्षण जो कुछ **मापता** है, वही बुद्धि है''– हिलगार्ड
- प्रारम्भ में बुद्धि की धारणा **दर्शनशास्त्र** में पढ़ायी जाती थी धीरे–धीरे मनोविज्ञान में शामिल किया गया था।
- कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसे **''सीखने की योग्यता''**, ''समस्या समाधान की योग्यता'', **''भावात्मक योग्यता''** माना था।
- ☞ ''बुद्धि **कार्य** करने की योग्यता है''– वुडवर्थ
- ☞ ''बुद्धि **ज्ञान को अर्जन** करने की क्षमता है''– वुडरो
- ☞ ''बुद्धि **अमूर्त** विचारों के बारे में सोचने की योग्यता है''– टरमन
- ☞ ''बुद्धि **सीखने** या **अनुभव** से लाभ उठाने की क्षमता है'' डीयरवार्न
- ☞ ''बुद्धि में **चार तत्व** निहित हैं – **ज्ञान, निर्देश, अविष्कार, आलोचना**''– बिने
- ☞ ''बुद्धि वह शक्ति है, जो हमारी **समस्याओं का समाधान** करने और **उद्देश्यों** को प्राप्त करने की क्षमता देती है''– रायबर्न
- ☞ ''ठीक से निर्माण करना, **समझना**, तर्क करना बुद्धि है''– बिने
- ☞ ''बुद्धि में **दो तत्त्व** हैं – ज्ञान की क्षमता, निहित ज्ञान''– हेनमॉन
- ☞ ''यदि व्यक्ति ने अपने वातावरण से सामंजस्य करना सीख लिया है या सीख सकता है, तो वह बुद्धि है''– कॉलविन

2. द्वि–खण्ड बुद्धि का सिद्धान्त– 1904 स्पीयरमैन

- यह बुद्धि का **प्रथम वास्तविक सिद्धान्त** माना जाता है।
- इसी को **गणितीय आधार** पर दिया गया प्रथम सिद्धान्त माना जाता है।
- आपने माना कि प्रत्येक व्यक्ति में **दो प्रकार** की बुद्धि होती है।
- **सामान्य योग्यता (General ability) (सामान्य)**
- **विशिष्ट योग्यता (Special ability) (विशिष्ट)**
- माना कि **सामान्य योग्यता** सभी व्यक्तियों में पाई जाती है, लेकिन **विशिष्ट योग्यता** प्रत्येक व्यक्ति में अलग–अलग पाई जाती है।
- सामान्य योग्यता प्रत्येक व्यक्ति में होती है जैसे **खाना, पीना, सोना** लेकिन विशिष्ट योग्यता जैसे **दर्शन, कला, शिल्प, विज्ञान, तार्किक** आदि है, जो अलग–अलग होती है।
- आपने माना कि जिनमें **सामान्य बुद्धि** का पूर्ण विकास होता है वहीं आगे जाकर सफल होता है।

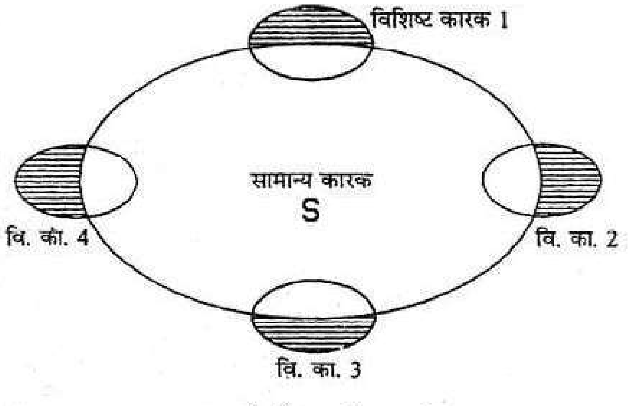

स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धान्त।

G = सामान्य योग्यता
S = विशिष्ट योग्यता
A = संख्यात्मक योग्यता
A_1 = विशिष्ट संख्यात्मक योग्यता
V = शाब्दिक योग्यता
V_1 = विशिष्ट शाब्दिक योग्यता
G = सामान्य योग्यता (मानसिक ऊर्जा)

➢ **नोट**– उपरोक्त चित्र में गणित की **योग्यता** एवं **भाषा** योग्यता के दो अण्डाकार आकृतियों द्वारा प्रस्तुत करे तो परस्पर मिलने वाले क्षेत्र को हम **G** एवं स्वतंत्र क्षेत्र को **S विशिष्ट योग्यता** कहेंगे।

3. तीन–खण्ड का सिद्धान्त (The three factor method) (1911)

- स्पीयरमेन ने दो खण्ड के बाद तीसरा एक और खण्ड बताया वह **"सामूहिक खण्ड"** रखा गया था।
- इसमें सामान्य योग्यता से **श्रेष्ठ** एवं विशिष्ट योग्यता से **निम्न** होने के कारण उनके मध्य का स्थान ग्रहण करती है।
- स्पीयरमेन ने तीसरा नया खण्ड **"सामूहिक खण्ड"** के नाम से जाना जाता है।

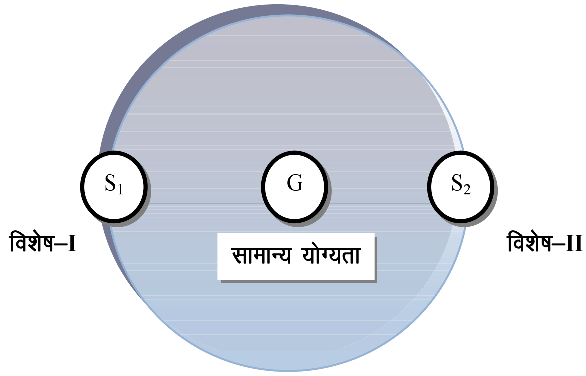

4. बहुकारक / असतात्मक / मात्रात्मक / बहुतत्व (Multiple Theory) (थॉर्नडाइक)

- इसको **सम्बन्धवाद का सिद्धान्त** भी कहते हैं आपने बताया की बुद्धि तीन प्रकार की होती है।
  (i) **यांत्रिक** (ii) **अमूर्त** (iii) **सामाजिक**
  आपने **G तत्व पर जोर नहीं** दिया था।
- आप बुद्धि को **स्वतंत्र** मानते है। ऊँचाई, लम्बाई, चौड़ाई, क्षेत्र, गति जिस प्रकार बालू के ढेर में ये सभी चीजे होती है, उसी प्रकार बुद्धि में भी होती है। इसलिए इसको **बालू या परमाणु सिद्धान्त** भी कहा जाता है।
- माना कि बुद्धि में अनेक तत्व होते हैं जितनी व्यक्ति विभिन्न प्रकार की **क्रियायें** करता है उतने ही ये **तत्व मिलकर कार्य** करते हैं इन तत्वों से मिलकर सामान्य तत्व बनता है न कि पहले से सामान्य **तत्व** होता है।

- **थॉर्नडाइक** द्वारा **CAVD** आधार पर **चार प्रकोष्ठ** बनाये थे।
  C = Complet पूर्णता   A = Arthmatic अंकगणित
  V = Verbal शब्दावली   D = Direction दिशा

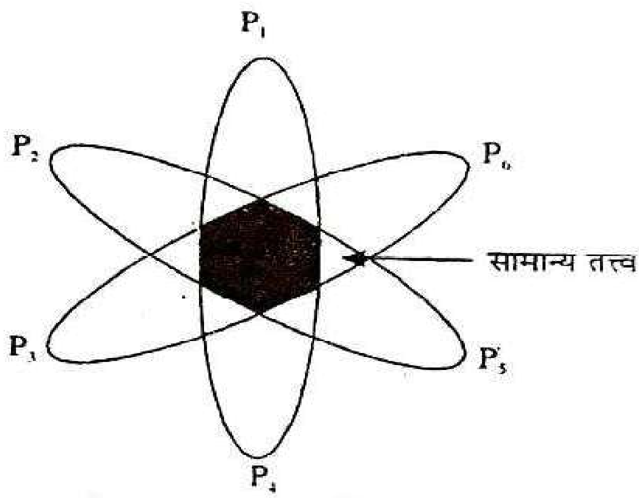

थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धान्त।

52. निम्नलिखित में से कौन–सा जे.पी. गिलफर्ड द्वारा प्रदत्त बुद्धि के त्रिविमिय प्रारूप के एक घटक विषयवस्तु का प्रकार नहीं है? (HTET हिन्दी 2021)
(1) आकृतिक (2) प्रणाली
(3) सांकेतिक (4) व्यावहारिक (2)

53. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य है? (केन्द्रीय विद्यालय संगठन परीक्षा, 2019)
(1) लड़के अधिक बुद्धिमान होते हैं।
(2) लड़कियाँ अधिक बुद्धिमान होती हैं।
(3) बुद्धि का लिंग के साथ संबंध नहीं है।
(4) सामान्यतः लड़के, लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं। (3)

54. मेटा घटक, प्रदर्शन घटक और ज्ञान प्राप्ति घटक निम्न में से किसकी श्रेणियाँ हैं: (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) त्रिपक्षीय सिद्धांत (2) त्रिकोणीय सिद्धांत
(3) ऑलपोर्ट का सिद्धांत (4) आईसेंक का सिद्धांत (2)

55. स्टर्नबर्ग के बुद्धिमता के सिद्धांत में निम्नलिखित में से किस चरण में समस्या का समाधान ज्ञान करना शामिल है? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) अनुप्रयोग (2) प्रतिचित्रण
(3) संकेतन (4) प्रतिक्रिया (4)

56. हावर्ड गार्डनर के बहु बुद्धि सिद्धांत के अनुसार, 'तार्किक–गणितीय' बुद्धि वाले एक व्यक्ति की क्या विशेषताएँ हो सकती है? (C TET (VI-VIII) 2019)
(1) दृश्य–स्थानिक परिवेश को सटीक रूप से ग्रहण करने की योग्यता।
(2) संगीतमय अभिव्यक्तियों के आवाज के स्तर, ताल एवं सौंदर्यपरक गुणों को उत्पन्न करने एवं प्रशंसा करने की योग्यता।
(3) पैटर्न को खोजने की एवं तर्क की लम्बी श्रृंखला को हल करने की क्षमता और संवेदनशीलता।
(4) ध्वनि, ताल तथा शब्दों के अर्थ के प्रति संवेदनशीलता। (3)

57. भाषाई बुद्धिमत्ता से संपन्न व्यक्तियों में कौन–सी क्षमता होती है? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) संख्यात्मक पद्धति के प्रति संवेदनशीलता
(2) लय/ताल बनाने की क्षमता
(3) संगीत की अभिव्यक्तियों के रूपों की सराहना
(4) ध्वनि, लय/ताल और शब्दों के अर्थों के प्रति संवेदनशीलता (4)

58. ट्रैफिक में नेविगेट करने की कोशिश करते समय किस प्रकार की बुद्धि का उपयोग किया जाएगा? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) अंतरावैयक्तिक बुद्धि (2) अंतः वैयक्तिक बौद्धिकता
(3) स्थानिक बुद्धि (4) प्राकृतिवादी बुद्धि (3)

59. नृत्य प्रदर्शन के दौरान, गार्डनर के किस प्रकार के बहु–बुद्धिमता का उपयोग किया जाता है? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) प्राकृतिक बुद्धि (2) अंतरावैयक्तिक बुद्धि
(3) भाषागत बुद्धि
(4) शारीरिक–गतिसंवेदी बुद्धि (4)

60. एक बच्चा किस तरह का विद्यार्थी है जो विषय से संबंधित भौतिक गतिविधि करते हुए सबसे अच्छा सीखता है? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) श्रव्य (2) पठन–लेखन
(3) दृश्य (4) गतिसंवेदी (4)

61. गार्डनर के अनुसार, अध्यात्मिक बौद्धिकता है– (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) किसी की प्रारंभिक धारणाओं में परिवर्तन करने की क्षमता
(2) जीवन के उद्देश्य के संबंध में जटिल समस्याओं पर विचार करने की क्षमता
(3) प्राकृतिक दुनिया में विभेद करने की क्षमता
(4) अपनी स्वयं की शक्तियों, कमजोरियों, इच्छाओं और बुद्धिमता का ज्ञान (2)

62. मूर्तिकारों में किस प्रकार की बुद्धिमत्ता होती है? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) प्रकृतिवादी (2) स्थानिक
(3) अंतर्वैयक्तिक
(4) शारीरिक–गतिक (बॉडली–कीनेस्थेटिक) (2)

63. जॉन एक छात्र है जो अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, एहसास और प्रेरणा से स्वाभाविक रूप से अवगत है। हावर्ड की थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस (एकाधिक ज्ञान के सिद्धांत) के अनुसार, वह निम्न में से किस बुद्धिमता को प्रदर्शित करता है : (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) अन्तर वैयक्तिक बुद्धिमता (2) अंतरावैयक्तिक बौद्धिकता
(3) दृश्य–स्थानिक बुद्धिमता (4) स्वाभाविक बुद्धिमत्ता (2)

64. निम्नलिखित में से किस प्रकार की बुद्धि का उपयोग, यातायात के माध्यम से नेविगेट करने की कोशिश करते समय किया जाएगा? (MP TET (VI-VIII) 2019)
(1) प्राकृतिकवादी बुद्धि (2) स्थानिक बुद्धि
(3) अंतर्वैयक्तिक बुद्धि (4) भावनात्मक बुद्धि (2)

65. बुद्धि के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है? (C TET (I-V) 2019)
(1) बुद्धि अनुभव के परिणाम के रूप में व्यवहार में एक अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है।
(2) बुद्धि एक आनुवंशिक विशेषक है जिसमें मानसिक गतिविधियाँ जैसे स्मरण एवं तर्क शामिल होती हैं।

1 विविध अधिगमकर्ताओं की समझ (Understanding Diverse Learners)

पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सृजनशील, अलाभान्वित- वंचित, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे एवं अधिगम अक्षमता युक्त बच्चे।

Backward, Mentally retarded, Gifted, Creative, Disadvantaged-deprived, CWSN, Children with learning disabilities.

विविध अधिगमकर्ताओं का अर्थ (Meaning of Diverse Learner)

- **बालक की वे विशेषताएँ** जो सोचने, समझने, सीखने, समायोजन करने, कार्यप्रणाली, गतिशीलता आदि में भिन्नता देखी जाती है। वह बालक **विशिष्ट** कहलाता है।
- विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है। हम बालकों में **समायोजन** को मापते हैं और किसी बालक के समायोजन की माप **केन्द्रीय मान** से अधिक, तो किसी की कम होती है। इस प्रकार जब भिन्नता देखने को मिलती है। वह **विशिष्ट बालक** कहलाता है।
- वह बालक जो अपनी **आयु** या सामान्य बालकों से बहुत अधिक भिन्न होते हैं। ये अपनी कक्षा या **समूह विशेष** के अन्य बालकों की तुलना में अपनी कुछ निजी विशेषता या विशिष्टता रखते हैं।

➢ **रिली व लेविस** ने विशिष्ट बालकों को **छः भागों** में बांटा है–
(i) **प्रतिभाशाली** बालक
(ii) **मानसिक मंद** बालक
(iii) **अधिगम अक्षमता** वाले बालक
(iv) **मानसिक रोग** ग्रस्त बालक
(v) **शारीरिक** रूप से विकलांग बालक
(vi) **बहु–विकलांगता** से ग्रस्त बालक।

- विशिष्ट बालक को परिभाषित करना कठिन है, क्योंकि विशिष्ट शब्द का प्रयोग अन्य अर्थों में किया जाता है। कुछ मनोवैज्ञानिक इसे **'प्रतिभाशाली बालक'** के वर्ग में रखते हैं कुछ इसे **'मन्द बुद्धि'** या **'पिछड़े बालक'** की श्रेणी में रखते हैं।

विविध अधिगमकर्ताओं की परिभाषाएँ (Definition of Diverse Learner)

☞ "विशिष्ट बालक वह है, जो किसी एक अथवा कई गुणों की दृष्टि से सामान्य बालक से पर्याप्त मात्रा में भिन्न होता है।"– **हेक**

☞ "**विशिष्ट पद** ऐसे गुणों या उन गुणों से युक्त व्यक्ति पर लागू होता है जिसके कारण व्यक्ति अपने आस–पास के लोगों का ध्यान **अपनी ओर** विशेष आकृष्ट करते हैं"– **क्रो व क्रो**

☞ "विशिष्ट बालक वे हैं जो कि सामान्य बालकों से शारीरिक, **मानसिक** और संवेगात्मक विशेषताओं में इतनी अधिक दूरी पर है कि अपनी **उच्चतम योग्यता** तक विकसित होने के लिए उन्हें विशेष शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है"– **अमेरिकन नेशनल सोसाइटी फॉर स्टडी ऑफ एज्यूकेशन**

☞ "वो बालक जो **औसत बालक** से मानसिक गुणों में, शारीरिक गुणों में, **सामाजिक व्यवहार में,** संचार क्षमता में व बहुविकलांगता में विचलित होते हैं **विशिष्ट** कहलाते हैं"– **क्रीक व गालागर**

☞ "जो बालक **सामान्य बालकों** से शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक या सामाजिक विशेषताओं में इतने अधिक **भिन्न** होते हैं कि उन्हें अपनी क्षमता के अधिकतम विकास हेतु विशेष **सामाजिक और शैक्षिक** सेवाओं की आवश्यकता होती है।"– **टेलफॉर्ड व सार्वे**

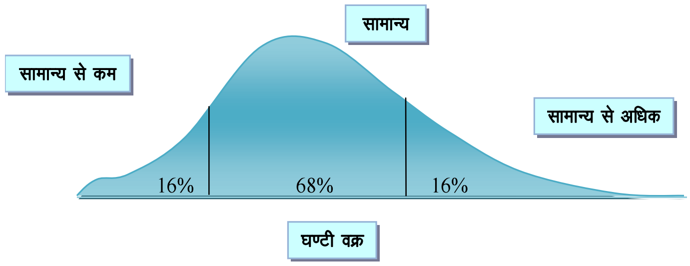

✦ विविध अधिगमकर्ता के प्रकार–

1. **शारीरिक** आधार पर–
   - वाक्
   - दृष्टि
   - श्रवण
2. **शैक्षिक** आधार पर–
   - तीव्र
   - पिछड़े
   - अयोग्य
3. **मानसिक** आधार पर–
   - प्रतिभाशाली बालक
   - सृजनात्मक बालक
   - मानसिक मंदित बालक
4. **सामाजिक** आधार पर–
   - कुसमायोजित बालक
   - समस्यात्मक बालक
   - बाल–अपराधी
   - विचलित बालक
   - नशे का आदि
   - सवेंगात्मक विचलित बालक

✦ गिलफोर्ड के अनुसार सृजनशीलता के 5 तत्व बताये–

1. गृहणशीलता
2. स्मरण
3. मूल्यांकन
4. अपसारी चिन्तन

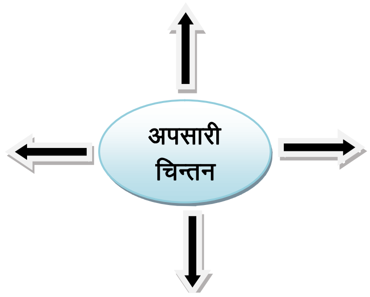

5. अभिसारी चिन्तन

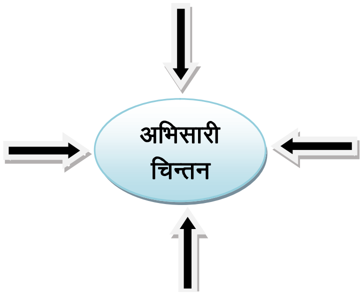

☞ ''सृजनशीलता को उत्पाद कहा था''– रोजर व स्टीन

☞ ''सृजनात्मकता वह जिसमें नवीन या मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है''– क्रो व क्रो

☞ ''सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है''
–जेम्स ड्रेवर

सृजनात्मकता के स्तर (टेलर के अनुसार)

1. परिवर्तित सृजनात्मकता– इसमें किसी परिस्थिति विशेष में **सुधार** या **नवाचार** आता है।
2. अविष्कारमूलक सृजनात्मकता– अन्वेषक सामग्री, **प्रविधि** हो सकते हैं।
3. अर्विभावात्मक सृजनात्मकता– इसमें संगीत, **साहित्य** व कला को शामिल करते हैं।
4. उत्पादक सृजनात्मकता– **कलात्मक** व **वैज्ञानिक** चीजें शामिल होती हैं।
5. अभिव्यंजन सृजनात्मकता– **सृजन** की प्रक्रिया को शामिल करते हैं।

- गिलफोर्ड– ने अपने बौद्धिक संरचना विमा/प्रतिमान में यह कहा कि सृजनशीलता एक विशिष्ट संज्ञानात्मक क्षमता है एवं साथ ही **अपसारी चिंतन** (Divergent Thinking) की संज्ञा दी है।

➢ **रोजर्स** ने सृजनशीलता की तीन प्रमुख विशेषता बतायी–

1. **सहज, अभिव्यक्ति परक**
2. **अस्थायित्व, अनिश्चिता को स्वीकार करने की क्षमता**
3. **विरोध सहन करने की क्षमता**

- मारलो ने सृजनात्मक व्यक्ति को ''स्वस्थ और आत्म–साक्षात्कारी'' व्यक्ति बताया है।

सृजनशीलता की विशेषताएँ (Characteristes of Creativity)

- नवीन विचारों को अपसारित करना।
- नवीनता एवं मौलिकता होती है।
- इसमें लचीलापन पाया जाता है।
- चिन्तन एवं कल्पना अधिक पाई जाती है।
- परिहास पाया जाता है।
- स्वतंत्र निर्णय क्षमता
- इनमें अधिक उत्सुकता पाई जाती है।
- इसके अनेक क्षैत्र होते हैं।
- **सोचने, विचारने** की विविधता एवं प्रगतिशीलता होती है।
- विचारों का प्रवाह, गतिशीलता, आशावादी सोच
- साहसी स्वभाव, **दूरदर्शी, स्पष्टवादी,** समस्या समाधान की योग्यता।
- उत्तरदायित्व की भावना, आत्म–निर्भर एवं उत्तरदायित्व की भावना
- वातावरण के सजग, अनेक विचारों को समूह में रखना।
- **भावुक प्रवृत्ति** के होते हैं।
- कल्पना करना एवं दिवास्वपन देखने की क्षमता
- शांत, तनाव मूक्त दृष्टिकोण एवं उत्तम सौन्दर्य
- किसी कार्य को करने में पूरा आत्मविश्वास
- उत्तरदायित्वों के प्रति सजगता।
- साहसिक व्यक्तित्व, **कुशल नीति**
- जिज्ञासु एवं खोजी प्रवृत्ति के होते हैं।
- सृजनात्मकता एवं बुद्धि में सह सम्बन्ध होता है।
- सृजनशीलता में प्रवाह पाया जाता है जैसे– शब्द, वैचारिक, साहचर्य व अभिव्यक्ति आधारित हो सकते हैं।
- सृजनशीलता में अवधान क्षमता देखने को मिलती है।
- पहले विद्यमान पदार्थों या तत्वों को मिलाकर नया योग बनाने की क्षमता ही सृजनशीलता है।
- दृढ़ भावात्मकता, जोखिम उठाना एवं अन्यों के प्रति जागरूकता।
- अव्यवस्था को स्वीकारना, अधिक परेशान रहना।
- श्रेष्ठ बनने की इच्छा, रहस्यात्मक खोजों के प्रति आकर्षित होना।
- उत्साही प्रवृत्ति का होना, **असंतुष्ट रहना,** संवेगात्मक रूप से संवेदनशील।

2 अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ (Learning Difficulties)

अधिगम अक्षमता/असामान्यता/व्यतिक्रम (Learning Disorder)

अधिगम अक्षमता का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definition of Learning Disorder)

- अधिगम क्षमता **दो शब्दों** से मिलकर बना है। जिसमें अधिगम का अभिप्राय **सीखना** जबकि अक्षमता का अर्थ **क्षमता का अभाव** से है अर्थात् **सीखने की क्षमता अथवा योग्यता** से है। जिसकी कमी या अनुपस्थिति से है।

→ अधिगम अक्षमता का तात्पर्य सर्वप्रथम प्रयोग 1962 ई. में **सैमुअल किर्क** द्वारा किया गया था। सामान्य भाषा में ऐसे बालकों को अधिगम असमर्थी कहा जाता है और अधिगम अक्षमता वाले बालकों के लिए वैयक्तिक शिक्षा योजना विशेष मददगार होती है।

☞ ''जो बालक स्नायु विकृति के कारण सुनने, पढ़ने, बोलने, लिखने जैसी समस्याओं का अनुभव करते हैं, उन्हें अधिगम अक्षमता वाले बालक कहा जाता है।''– **हैमिल**

☞ ''अधिगम अक्षमता को **वाक्, भाषा, पठन,** लेखन या अंकगणितीय प्रतिक्रियाओं में से किसी एक या अधिक प्रक्रियाओं में **मदंता, विकृति** अथवा अवरुद्ध विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है''– **सेमुअल किर्क**

- अधिगम अक्षमता अपने–अपने कार्यक्षेत्र के आधार पर अनेक नामकरण द्वारा बताया गया जैसे– (i) न्यूनतम मस्तिष्क क्षतिग्रस्तता **(औषधि विज्ञान द्वारा)**, (ii) मनोस्नायुजनित विकलांगता **(मनोवैज्ञानिक + स्नायुवैज्ञानिकों द्वारा)**, (iii) अतिक्रियाशीलता **(मनोवैज्ञानिक द्वारा)** (iv) न्यूनतम उपलब्धता **(शिक्षा मनोवैज्ञानिकों द्वारा)**।

अधिगम अक्षमता की विशेषताएँ (Characteristics of Learning Disorder)

1. अधिगम अक्षमता **आंतरिक** होती है।
2. यह व्यक्ति विशेष में आजीवन विद्यमान रहता है।
3. यह विकृति नहीं **विकृति का समूह** है।
4. इसमें व्यक्तियों के व्यवहार एवं **संवेग परिवर्तन** होते रहते हैं।
5. बिना सोचे विचारे कार्य करना।
6. उपयुक्त **आचरण** न करना।
7. स्वयं के प्रति लापरवाही।
8. **निर्णायक क्षमता** का अभाव।
9. लक्ष्य से आसानी से विचलित होना।
10. ध्यान **केन्द्र का अभाव** या भटकाव
11. **भावात्मक अस्थिरता**
12. एक ही स्थिति में शांत एवं स्थिर रहने की असमर्थता
13. सामान्य से ज्यादा सक्रियता
14. कार्य **करने की मंद** गति
15. सामान्य कार्य को संपादित करने के लिए एक से अधिक बार प्रयास करना।
16. **पाठ्य–सहगामी क्रियाओं** में शामिल होना।
17. क्षीण स्मरण **शक्ति** का होना।

प्रमुख विकार (Major Disorders)

(A) व्यवहारिक विकार (Characteristics of Learning Disorder)

1. मनोविक्षेप/मनोविकृति (Psychoses)–

- यह एक गम्भीर प्रकार का होता है। इसमें व्यक्ति का **यथार्थकता** एवं **बाह्य संसार** से सम्पर्क टूट जाता है। तब इसमें व्यक्ति को **पागल** भी कहा जाता है इसमें व्यक्ति को **न समय का/न मौसम का/न अपने वातावरण का** ज्ञान होता है।

(i) **उन्माद (Manic)**– **भाव विकार** आ जाता है इससे पीड़ित व्यक्ति काफी **उल्लास, सक्रिय** एवं **बोलने** लगता है।

(ii) **अवसाद (Depression)**– इसमें **निकम्मेपन की भावना** आत्महत्या का विचार, निंद्रा की समस्या आ जाती है।

(iii) **द्विध्रुवीय भावदशा विकार (Bipalar mood disorder)**– इसमें **उन्माद एवं अवसाद दोनों** एक साथ जैसे कोई खुश है तो आसमान पर एवं दुखी है तो वह धरातल पर गिर जाता है।

(iv) **असामयिक मनोहास (Demetia Procox)**–

- इसमें व्यक्ति उदासीन होकर घण्टों एकान्त में बैठ जाता है, बिस्तर पर बैठा रहता है, **दीवारों एवं आकाश** की तरफ देखता रहता है।
- अचानक बोलना की कल में मर जाऊँगा।
- यह रोग **अन्तर्मुखी लोगों** में अधिक होता है।

(v) **भ्रम (Illusion)**–

- इसमें **प्रत्यक्षीकरण पर आधारित** होता है।

- **गामक कौशल में** पैंसिल को सही नहीं पकड़ पाता है, गेंद को **उछालने और लपकने** में असमर्थ होता है।
- **बौद्धिक अक्षमता के लक्षण–** धीमी प्रतिक्रिया, स्पष्टता का अभाव, सीखने में धीमापन, **कम** समझ, निर्णय लेने में कमी, **एकाग्रता का अभाव,** विकास में देरी।
- इटली में मांटेसरी पहली महिला थी जिन्होंने **चिकित्सा शास्त्र में** डिग्री ली उन्होंने **बौद्धिक अक्षम बच्चों** की शिक्षा देने में प्रसिद्धि पाई थी।
- राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान– **(सिकंदराबाद) आन्ध्रप्रदेश।**
- विजय मानव सेवा संस्थान– **चैन्नई**
- **दुर्भीति की दशा में** प्रभावित व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु या परिस्थिति से डरने लगता है। जिससे उसे वास्तव में कोई खतरा होने की संभावना नहीं होती है।
- मुख्यतः **दुर्भीति तीन प्रकार** की होती है। **विशिष्ट, एगोरा, सामाजिक दुर्भीति।**
- विशिष्ट दुर्भीति इसमें एक **असंगत डर** होता है जो विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति का उसके अनुमान मात्र से ही उत्पन्न होता जैसे बिल्ली, मकड़ी, सांप आदि द्वारा।

✦ **प्रमुख पशु दुर्भीति निम्न प्रकार है–**

बिल्ली से	– एलुरोफोबिया
जीवाणुओं से	– माइसोफोबिया
सांप से	– आफिड्योफोबिया
घोड़ो से	– इक्यूनोफोबिया
चिड़िया से	– एबिसोफोबिया
कीट–मकोड़े से	– इन्सैक्टोफोबिया
कुत्ते से	– झाइनोफोबिया

- किसी वस्तु विशेष से होने वाली दुर्भति **अंधेरा, गंदगी, ऊँचाई,** आदि से–

हवाई जहाज यात्रा से	– एबियोफोबिया
भीड़ से	– आकलोफोबिया
आग से	– पायरोफोबिया
अकेलेपन से	– मानोफोबिया
बंद जगहों से	– क्लाउस्ट्रोफोबिया
अंधेरे से	– नाइक्टोफोबिया
ऊँचाई से	– एक्रोफोबिया
आंधी तूफान से	– ब्रोनेटोफोबिया

➢ **बीमारी व चोट से दुर्भीती**

मृत्यु से	– **थैनेटोफोबिया**
कैंसर से	– **कैंसरोफोबिया**
यौन रोग से	– **वैनेरियोफोबिया**

- **एगोरा दुर्भीती –** इसमें भीड़–भाड़ एवं बाजार स्थलों से डर होता है।

☞ **''हिस्टीरिया या क्षोभोन्माद** का कारण अचेतन रूप से चितीय अभिघात है''– **फ्रायड**

- जब व्यक्ति जीवन में अनेक कार्य करता तथा सफल नहीं होता तब **निराश होकर** वह परेशानी द्वारा गिर जाता है दौरे पड़ने लगते हैं या **भय से** लकवा मार जाता तो वह **हिस्टीरिया या क्षोभोन्माद** कहलाता है।
- **निद्रा भ्रमण–** जब व्यक्ति रात में उठकर चलने लगता है।
- पैरानोइया का शाब्दिक अर्थ **''मिथ्या तर्क या विकृत तर्क''** करना होता है।
- **व्यामोही विकृति** पहले **पैरानोइया** कही जाती थी।
- स्विट्जरलैण्ड के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक **हल्युलर द्वारा** सर्वप्रथम इस रोग को **मनोविदलता** का नाम दिया था।
- मनोविदन का शाब्दिक अर्थ **''व्यक्तित्व विदलन या दरार पड़ना''**
- **हीबोफ्रेनिक मनोविदलता** के रोगी का समस्त व्यवहार एक **बच्चे के समान** होता है।
- **कैराटोनिक मनोविदलता–** इसमें व्यक्ति का व्यवहार बड़ा ही **नाटकीय ढंग** से प्रस्तुत होता है।
- **कैराटोनिक मूर्छित स्थिति–** इसमें रोगी की क्रियायें धीरे–धीरे **मन्द** पड़ने लगती है। रोगी घण्टों तक एक ही **स्थिति विशेष** में बैठा रहता है। **बैठना, चलना, घूमना, फिरना, उठना** कम हो जाता है।
- शक्की स्वभाव के रोगी अक्सर **स्पर्श सम्बन्धी विभ्रम** का अनुभव करते हैं।
- **उत्साह–विषाद मनोकृति फालरेट एवं बेलार्जर** द्वारा बताया गया।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. **बाधिता एक .... स्थिति है, जबकि अक्षमता एक .... स्थिति है।** **(C TET (L-1) 2024)**
   (1) क्रियात्मक, शारीरिक (2) सामाजिक, मनोवैज्ञानिक
   (3) जैविक, कार्यात्मक (4) कार्यात्मक, जैविक (1)
2. **अपपठन वैकल्य/डिस्लेक्सिया एक .... स्थिति है, जो शिक्षार्थी की .... की क्षमता को प्रभावित करती है।** **(C TET (L-2) 2024)**
   (1) संवेदी, शारीरिक गतिविधियों के समन्वय
   (2) भावनात्मक, चित्र बनाने
   (3) तंत्रिकीय/न्यूरोलॉजिकल, ध्वनियों को प्रतीकों चिन्हों के साथ जोड़ने
   (4) शारीरिक, साथियों के साथ सामाजीकरण (3)

3 समायोजन (Adjustment)

समायोजन की संकल्पना एवं तरीके, समायोजन में अध्यापक की भूमिका
Concept and ways of adjustment. Role of teacher in the adjustment.

समायोजन (Adjustment)

- समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें व्यक्ति **बाह्य वातावरण** एवं स्वयं की शारीरिक व मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में लगा रहता है।

➢ **समायोजन का अर्थ (Meaning of Adjustment)–**

- समायोजन को **सामजंस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन** भी कहते हैं। यह अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो जाएं और **मानसिक द्वन्द्व** न उत्पन्न हो पाये। समायोजन एक **संतुलित** दशा है। जिस पर पहुँचने पर हम उस व्यक्ति को **सुसमायोजित** कहते हैं।

समायोजन की प्रक्रिया
↓
व्यक्ति
↓
प्रभावित करने वाले कारक –
स्थानिक प्रभाव, विद्यालय वातावरण, समूह, परिवार, समाज, मित्र, मण्डली
↓
प्राप्त न होने पर
↓
तनाव, संघर्ष, कुष्ठा
↓
पीड़ा, बैचेनी, संवेगात्मक अस्थिरता
↓
समायोजन
↓
- स्वयं में परिवर्तन द्वारा
- वातावरण में परिवर्तन द्वारा

❖ **समायोजन प्रक्रिया की विशेषताएँ –**

1. समायोजन प्रक्रिया **द्विमार्गी प्रक्रिया** है व्यक्ति समाज के अलावा पर्यावरण पक्ष को भी प्रभावित करता है।
2. समायोजन एक **उद्देश्यमुखी प्रक्रिया** है।
3. समायोजन प्रक्रिया में उद्देश्य की प्राप्ति न होने पर **कुंठा की उत्पत्ति** होती है।
4. समायोजन के अभाव में **व्यक्ति में अपचारिता**, आक्रामकता का विकास हो सकता है।
5. समायोजन के अभाव में **आत्मविश्वास** में कमी पाई जाती है।

समायोजन की परिभाषाएँ (Definition of Adjustment)

☞ ''समायोजन एक **अधिगम प्रक्रिया** है''– **स्कीनर**
☞ ''समायोजन **श्रेष्ठता** प्राप्ति का आधार है''– **एडलर**
☞ ''समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है''– **गेट्स**
☞ ''समायोजन **यथार्थवादी व संतोषप्रद** दोनों होते हैं''– **स्मिथ**
☞ ''समायोजन वह प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति अपनी **अन्तः भावना** एवं अन्तः प्रेरणा कुछ निश्चित लक्ष्यों एवं हितों की ओर प्रेरित करती है''– **क्रो व क्रो**
☞ ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकता और आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में मिलनसार हो जाता है''– **बोरिंग लेंगफिल्ड वेल्ड**
☞ ''प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार विभिन्न प्रकार का होता है जिसे **समायोजन** एवं **असमायोजन** कहते हैं''– **गेसाफियर व हिवरी**
☞ ''समायोजन निरन्तर चलते वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति और वातावरण के **मध्य सामंजस्यपूर्ण संबंध** बनाए रखने हेतु अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''– **गेट्स**
☞ ''समायोजन वातावरण से ऐसा **सामंजस्यपूर्ण संबंध** है जो व्यक्ति की **अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा** स्वीकृत तरीकों से करता है और इसका परिणाम व्यवहार के उन **विभिन्न रूपों में** दिखाई पड़ता है जो कि निष्क्रिय अनुमोदन से लेकर सक्रिय समर्थन की अधिसीमा के अन्तर्गत होते हैं।''– **विलियम क्लार्क ट्रो**
☞ **''समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तथा समस्याओं से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किए गए प्रयासों का परिणाम है।''– कोलमैन**
☞ ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से कोई जीवित प्राणी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली स्थितियों तथा आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है।''– **शेफर**

1 अधिगम (Learning)

अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना। अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक। अधिगम के सिद्धांत एवं इनके निहितार्थ। बच्चे सीखते कैसे हैं। अधिगम की प्रक्रियाएँ।

Meaning and Concept of learning. Factors Affecting learning. Theories of learning and their implication. How Children learn. Learning processes.

अधिगम का अर्थ (Meaning of Learning)

- अधिगम हमारे प्रत्येक कार्य, चिन्तन तथा अन्तःक्रिया में सम्मिलित है। अधिगम में साधारण प्रत्यास्मरण से लेकर बौद्धिक योग्यताओं, संज्ञानात्मक कौशल तथा भावनात्मक मनोवृत्ति के विकास तक सम्मिलित है। यह योग्यताओं नवीन अनुभवों को प्राप्त करने के लिए एक आधार है तथा नवीन संरचनाओं को भविष्य में अधिगम हेतु प्रोत्साहित करती है।
- अधिगम वह प्रविधि है जिससे व्यक्ति में अनुभव द्वारा व्यवहार में रूपांतर होता है। अधिगम जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु तक निरंतर होता रहता है। यह धीमी गति से अथवा द्रुत गति से हो सकता है। यह अनजाने में/अनभिज्ञता में (unknowingly) अथवा जानकारी में होता है। शिक्षा, अभिप्रेरणा, प्रशिक्षण एवं अभ्यास द्वारा अधिगम में वृद्धि होती है तथा वांछित व्यवहार परिवर्तन संभव बन पड़ा है।

अधिगम की परिभाषाएँ (Definition of Learning)

- ''अधिगम व्यवहारगत परिवर्तन है जो अनुभव से घटित होता है। अधिगम व्यवहार परिवर्तन है, जो अनुभव तथा अभ्यास द्वारा होता है''— गिलमर
- ''अधिगम एक प्रविधि है जिसमें सजीव अनुभव के परिणाम स्वरूप व्यवहार परिवर्तन करता है।'' —गेज एवं बर्लनाइनर
- ''अधिगम अनुभव के परिणामस्वरूप **व्यवहार में परिवर्तन व्यक्त** करता है''— क्रॉनबेक
- ''अधिगम उपयुक्त अनुक्रिया का चयन करना व उसे **उद्दीपन से जोड़ना** है''— थॉर्नडाइक
- ''अधिगम अनुभव के परिणामस्वरूप **प्राणी के व्यवहार में कुछ परिमार्जन** है, जो **कम–से–कम** कुछ समय के लिए प्राणी द्वारा धारण किया जाता है''— मॉर्गन, गिलीलैण्ड

- अधिगम एक व्यापक धारणा है यह जन्म से लेकर अन्त तक चलती रहती है। **शैशवावस्था से ही बच्चा निरन्तर नये कौशल सीखते** रहते हैं। नयी सूचनाएं धारण करते हैं। यह औपचारिक या अनौपचारिक किसी भी प्रकार की होती है।
- **उदाहरण**— जब बच्चा **गर्म दुध** या **पानी** या **आग को छू** लेता है तब वह **दुबारा ध्यान** रखता है।
- **प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानवीय व्यवहार** में जो कुछ परिवर्तन होते रहते हैं वह अधिगम है।

- ''**सीखना, विकास की प्रक्रिया है**''— वुडवर्थ
- ''सीखना, व्यवहार में उतरोतर सामजंस्य की प्रक्रिया है''— स्कीनर
- ''सीखना, आदतों, ज्ञान एवं अभिवृतियों का योग है''— क्रो व क्रो
- ''अधिगम, **अनुभव एवं प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन** है''— गेट्स
- ''व्यवहार के कारण **व्यवहार में परिवर्तन** अधिगम है''— गिलफोर्ड
- ''नवीन परिस्थितियों में **अपने आप को अनुकूलित करना** ही अधिगम है''— हिलगार्ड
- ''अनुकूलित क्रिया के **परिणामस्वरूप** आदत का निर्माण ही अधिगम है''— पॉवलाव
- ''**पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा सुधार अधिगम है**''— कॉलविन
- ''व्यक्ति में **परिवर्तन ही अनुभव** है और यही **अधिगम** है।''—पील
- ''वातावरण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी परिवर्तन अधिगम है''— मर्फी

- ''किसी **जीवित प्राणी के व्यवहार में एक स्थायी परिवर्तन** है। जो उसे **वंशानुक्रमीय विरासत के रूप में प्राप्त नहीं** होता बल्कि **व्यवहार, प्रत्यक्षीकरण, अभिप्रेरणा** द्वारा होता है'' — बिग्गी
- ''नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया, **सीखने की प्रक्रिया** है''— वुडवर्थ
- ''अधिगम एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा **आदतें, ज्ञान** और **अभिवृत्तियों को अर्जित** करता है। जिसमें सामान्य जीवन की मांगों की पूर्ति के लिए आवश्यक है''— बॉज

- अधिगम के अन्तर्गत **मनोवैज्ञानिक** एक वैज्ञानिक के रूप में स्पष्ट रूप से प्रमाणित और विस्तृत तथ्यों पर आधारित परिस्थितियों में **काम करना** चाहता है।
- वह जिस किसी के लिए भी तथ्य जुटाता है, उन्हें वह **बहुत ध्यानपूर्वक प्रमाणित** करता है। अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और **आम प्रचलित प्रक्रिया** है। जन्म के तुरन्त बाद ही व्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और फिर **जीवनपर्यन्त** कुछ न कुछ सीखता **ही रहता** है।
- सामान्यतः सीखना व्यवहार में परिवर्तन है परन्तु **सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को अधिगम नहीं कहा** जा सकता है।

→ **संज्ञानात्मक अधिगम**– संज्ञान (Cognition) शब्द का सामान्य अर्थ 'बोध' होता है। दैनिक जीवन में आपके आस–पास रखी वस्तुओं, व्यक्तियों तथा घटना का आपको बोध होता है। 2 वर्ष का एक बच्चा चश्में को देखकर उसे आँखों पर रखने का प्रयत्न करता है, क्योंकि उसने घर के किसी वयस्क को ऐसा करते देखा है। ढाई–तीन वर्ष के बालक से यदि कहा जाय कि बेटा मुझे मेरा चश्मा लाकर दीजिए, तो आपको अनेक वस्तुओं, पेन, चाबी, मोबाइल के बीच से चश्मा उठाकर बालक देगा। इन दोनों में सही एवं वांछित अनुक्रिया (Desired Response) उसके अधिगम का घोतक है।

- अतः सूचनाओं, तथ्यों, घटनाओं के प्रत्यक्षीकरण एवं विश्लेषण की योग्यता से होने वाला व्यवहार परिवर्तन, संज्ञानात्मक अधिगम कहलाता है।
- कक्षा शिक्षण में विविध विषयों के पाठ्यक्रम के अध्यापन के समय होने वाली अधिगम प्रक्रिया में संज्ञानात्मक अधिगम सबसे अधिक होता है।

❖ अधिगम के क्षेत्र (Domains of Learning)

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive learning)–

- इस क्षेत्र में **ज्ञानेन्द्रियों** एवं **मस्तिष्क की प्रमुख भूमिका** रहती है।
- यह क्षेत्र बालक के **मानसिक** एवं **बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक** माने जाते हैं।
- वातावरण में **समायोजन एवं कुशलता का विकास** होता है।
- विभिन्न क्रियायें जैसे– **सोचना, विचारना, कल्पना करना, तर्क करना, अनुमान लगाना, विश्लेषण एवं संश्लेषण करना, वर्णन एवं व्याख्या करना, स्मरण, सरलीकरण, नियमीकरण, निष्कर्ष निकालना, आलोचना** करना आदि।

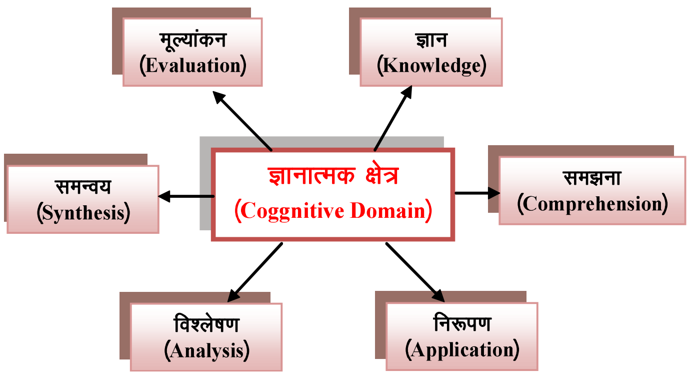

2. क्रियात्मक क्षेत्र (Conative learning)–

- इसका उद्देश्य अधिगमकर्ता के **क्रियात्मक या मनोशारीरिक व्यवहार में परिवर्तन** लाना होता है इसमें इन्द्रियों की अहम् भूमिका रहती है।
- **जैसे– दौड़ना, चलना, चढ़ना, उतरना, छलांग लगाना, खाना बनाना, पकड़ना, मोडना, फेंकना, सूंघना, गाना, नाचना, पीना, सिलाई–कढ़ाई, स्पर्श करना, पीसना, चबाना, धक्का देना आदि।**

3. भावात्मक क्षेत्र (Affective Learning)–

- इसमें **हृदय में उठने वाले भावों** तथा **भावनाओं की अनुभूति** से होता है। ये हाव–भाव ही बालक को योग्य बनाते है। इसका बाल–विकास के क्षेत्र में अति–महत्वपूर्ण योगदान हे।
- **जैसे– दुःखी या सूखी** होना, क्रोधित होना, हर्षित होना, डरना, शान्त व्यवहार करना, **उदासीन होना**, पसंद या नापसंद करना, **त्याग** व **बलिदान, प्रेम, घृणा, ग्लानि,** रुचि, तिरस्कार करना आदि।
- ये **संवेग आगे चलकर बालक में परिपक्वता विकसित** कर उसके व्यक्तिगत व सामाजिक एवं प्रगति में आवश्यक है।

❖ अधिगम के प्रकार (Types of Learning)–

1. समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)
2. समूह–परिचर्चा (Group Discussion)
3. मस्तिष्क उद्देलन विधि (Brain Storming) (ऑसबर्न द्वारा)
4. करके सीखना (Learning by doing) (किलपैट्रिक द्वारा)
5. मूर्त वस्तु पर आधारित (Based on Concrete Objects)
6. अनुकरण विधि (Simulation Method)
7. परीक्षण द्वारा (Experimental)
8. वाद–विवाद (Debate)
9. निरीक्षण करके (By Inspection) (वाट्सन ने इस पर सबसे ज्यादा जोर दिया।)
10. श्लाघात्मक विधि (Positive Method)
11. प्रयास व त्रुटि (Trial and Error) (थॉर्नडाइक द्वारा)
12. सूझ आधारित (Insight) (गेस्टाल्टवादी)

→ **अधिगम वक्र (Learning Curve)**– अधिगम वक्र एक पद्धति है, जिसके द्वारा **अधिगम के रूप, आकार मात्रा को प्रकट** किया जाता है अर्थात् यह **सीखने में होने वाली उन्नति या अवनति को व्यक्त** करता है। यदि हम अपनी सीखने की गति को ग्राफ पेपर पर अंकित करें तो एक **वक्र रेखा** बन जायेगी इसी को सीखने का वक्र या अधिगम वक्र कहते हैं।

- सीखने की **गति** कभी भी एक जैसी नहीं होती इसमें उतार–चढ़ाव आते रहते हैं।

☞ ''अधिगम **वक्र** सीखने की क्रिया से होने वाली **गति** और **प्रगति** को व्यक्त करता है।''– गेट्स

☞ ''सीखने का **वक्र** किसी दी हुई क्रिया की आंशिक रूप से सीखने की पद्धति है''– रैमर्स

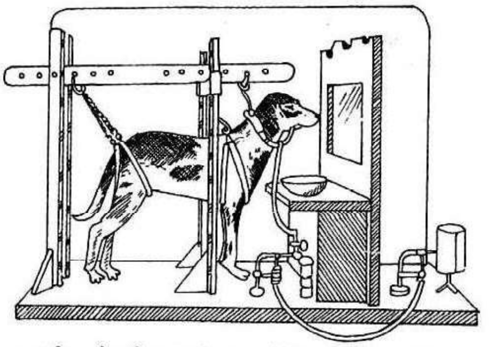

चित्र —प्राचीन या पैवलावियन अनुबंधन का प्रायोगिक प्रारूप : पैवलाव (1927) पर आधारित

> **नोट**— अन्त में यह भी देखा गया कि **भोजन सामग्री** जैसे प्राकृतिक उद्दीपक **(Natural Stimulus)** के अभाव में भी घंटी बजने जैसे कृत्रिम उद्दीपन **(Artificial Stimulus)** के प्रभाव स्वरूप कुत्ते ने लार टपकाने जैसी स्वभाविक अनुक्रिया व्यक्ति की थी इसी को पॉवलव ने सम्बन्ध सहज क्रिया की संज्ञा दी थी।

❒ अनुबन्धन की प्रक्रिया के प्रमुख अंग–

1. अनानुबन्धित उद्दीपक **(Unconditioned Stimulus)**–

स्वभाविक उद्दीपक (UCS)

↓

भोजन

2. अनानुबन्धित अनुक्रिया **(Unconditioned Response)**–

स्वाभाविक अनुक्रिया (UCR)

↓

भोजन के कारण लार स्त्राव

(UCS → UCR

भोजन क्रिया) स्वाभाविक

3. अनुबन्धित उद्दीपक **(Conditioned Stimulus)**–

अस्वभाविक उद्दीपक (CS)

↓

- (घंटी) इसको **बार–बार** भोजन के साथ प्रस्तुत करके लार का स्त्राव होना।
- **घंटी तटस्थ उद्दीपक** है।

4. अनुबंधित अनुक्रिया **(Conditioned Response)**–

अस्वाभाविक अनुक्रिया (CR)

↓

- घंटी के बजने पर जो **लार उत्पन्न** हुई एवं जो अनुक्रिया उत्पन्न होती है।

(CS → CR

घंटी क्रिया) अस्वभाविक

→ UCS – UCR
अनानुबधित उद्दीपक – अनानु. अनुक्रिया (अनुबन्ध से पूर्व)
भोजन लार

→ CS + UCS - UCR
अनु. + अनानु. उद्दीपक – अनानु. अनुक्रिया (अनुबन्ध के समय)
घंटी + भोजन लार

→ CS – CR
अनानुबधित उद्दीपक – अनु. अनुक्रिया (अनुबन्ध के बाद)
घंटी लार

2. वॉटसन द्वारा किया गया प्रयोग

- वाटसन नामक मनोवैज्ञानिक ने स्वयं अपने 11 माह के पुत्र अलबर्ट पर प्रयोग किया गया। उसे **खेलने के लिए एक खरगोश** दिया। बच्चे ने काफी पसन्द किया **नरम–नरम बालों पर हाथ घूमाना अच्छा** लगता है।
- लेकिन कुछ समय बाद जब **खरगोश को बच्चा** लेता है तब एक अजीब सी आवाज आती है। **डरावनी एवं बच्चा रोने** लगता है।

> **नोट**— बाद में बालक उस **खरगोश** से काफी डरने लगता है एवं बाद में वह रूई के गोले, समर कोट से भी डरने लगता है।

> शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत का शिक्षा में महत्त्व –

1. सीखने की **स्वभाविक विधि** बताता है।
2. बालकों की **अनेक क्रियाओं** एवं असामान्य व्यवहार की व्याख्या करता है।
3. समाजीकरण एवं वातावरण से उनका **सामजंस्य** बिठाना
4. बालकों के **भय सम्बन्धी विचारों** से निजात मिलता है।
5. बुरी आदतों को दूर करने में उपयोगी
6. आदत निर्माण में उपयोगी
7. मानसिक रोगियों को सुधारने में उपयेगी
8. **समूह निर्माण में उपयोगी**
9. शिक्षण में सहायक सामग्री के विकास पर बल
10. कदाचार, समस्यापरक एवं असमायोजित व्यवहार को सुधारने में उपयोगी है।
11. **मनोवृत्ति निर्माण में सहायक।**
12. यह **सिद्धान्त शिक्षण–अधिगम** के **अनुदेशनात्मक विधियों** के प्रयोग पर अधिक बल देता है।
13. **घृणा एवं अविश्वास को दूर करने में सहायक।**
14. उन विषयों में उपयोगी जिनमें **तर्क, चिन्तन** एवं **बुद्धि** की **आवश्यकता नहीं** होती है।

10. बण्डूरा का सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त – (Bandura's Social Learning Theroy)

- प्रतिपादक–अल्बर्ट बड़ूंरा (संज्ञानवादी) कनाड़ा निवासी जन्म दिसम्बर 1925, सिद्धान्त दिया 1977 में अपनी पुस्तक Social foundation thought and action ।
- समाज द्वारा मान्य व्यवहार को अपनाने तथा अमान्य व्यवहार को त्यागने के कारण ही यह सामाजिक अधिगम सिद्धान्त कहलाया है।

☞ नोट– इस सिद्धांत को अवलोकनात्मक अधिगम एवं अनुकर्णात्मक अधिगम के नाम से भी जाना जाता है। आपने सीखने की इस प्रक्रिया में निरीक्षण को सबसे महत्त्वपूर्ण माना है।

- दूसरो को देखकर उनके अनुरुप व्यवहार करने के कारण व दूसरो के व्यवहार को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को धारण करने तथा अमान्य व्यवहारों को त्यागने का कारण ही सामाजिक अधिगम है।
- इस सिद्धान्त को अवलोकन शिक्षण सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसमें व्यक्ति अवलोकन, नकल और आदर्श व्यवहार के प्रतिमान के माध्यम से एक–दूसरे से सीखता है।
  समाज एवं मिडिया द्वारा स्वीकार किये जाने वाले व्यवहार को अपनाया जाता है। वहीं अर्जित व्यवहार को नकारा भी जाता है।

➢ उदाहरण– हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति अपने पसंदीदा अभिनेता की शैली और उसके बोलचाल करने के तरीके की नकल करने की कोशिश की जाती है।

- बंडूरा ने अपने विचार की पुष्टि टेलीविजन पर व्यावसायिक प्रसारणों एवं धारावाहिकों में हिंसा से संबंधित शोध अध्ययनों के माध्यम से की।
- यह सिद्धान्त वास्तविक जीवन में सीखने के अनुभवों को समझने के लिए व्यावहारिक सिद्धान्तों एवं संज्ञानात्मक सिद्धान्तों के अनुभवों को समझने के लिए व्यावहारिक सिद्धान्तों एवं संज्ञानात्मक सिद्धान्तों का एकीकरण है इसलिए मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि सीखना सिर्फ व्यवहारिक ही नहीं है अपितु सामाजिक सन्दर्भ में संज्ञानात्मक प्रक्रिया भी है।

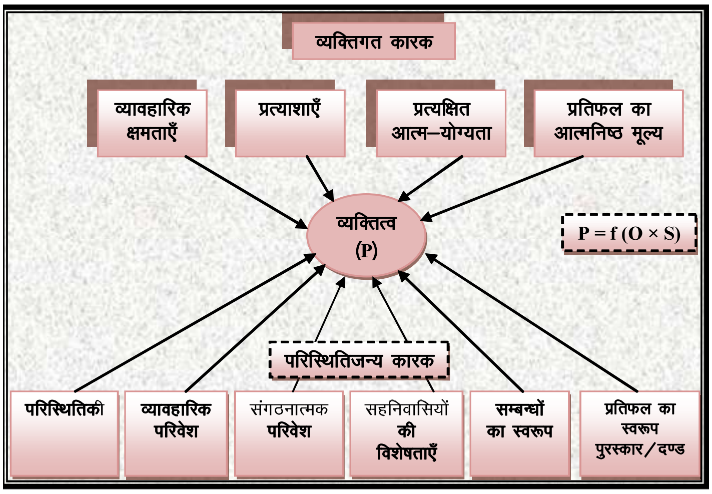

चित्र : व्यक्तित्व विकास से सामाजिक अधिगम सिद्धान्त का मॉडल

(Rathus, 1984 एवं Moos, 1970 पर आधारित)

❒ सामाजिक अधिगम की पूर्व धारणाएँ या संप्रत्यय–

1. नमूना या प्रतिमान (Model)– नमूना या मॉडल एक प्रतीकात्मक रूप से आदर्श है जिसके व्यवहार की नकल की जाती है।
2. अवलोकन (Observation)– सामाजिक परिस्थितियों में बालक जिस व्यक्ति के व्यवहार को आदर्श के रूप में ग्रहण करते हैं उसे बण्डूरा ने मॉडल की संज्ञा दी है।
3. अनुकरण (Imitation)– अवलोकित व्यवहार को बार–बार दोहराने की प्रवृत्ति को अनुकरण कहा जाता है। अनुकरण को क्रियात्मक पुनरावृत्ति भी कहा जाता है।
4. मॉडलिंग– हम सभी की प्रकृति अपने आदर्श व्यक्ति अर्थात् रोल मॉडल के अनुकरण करने की होती है। जब हम अपने रोल मॉडल का अनुकरण करके एवं उसके व्यवहार का अनुकरण सीखते है तब वह मॉडलिंग कहलाती है।

- यह मॉडल तीन प्रकार के होते है–
  (i) जीवात मॉडल (ii) शब्द निर्देशित (iii) प्रतीकात्मक।

➢ सामाजिक अधिगम सिद्धांत का शिक्षा में महत्त्व –

1. यह सिद्धान्त वस्तुनिष्ठ है और प्रयोगात्मक विधि द्वारा इसकी प्रमाणिकता काफी हद तक सिद्ध की जा सकती है।
2. इसका उपयोग शोध मनोवैज्ञानिक एवं नैसर्गिक मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के अध्ययन हेतु एक नवाचार माना है।
3. व्यावहारिक प्रयोग मॉडलिंग में काफी हुआ है।
4. दिन–प्रतिदिन की वास्तविक समस्याओं का निदान किया जाता है।
5. शिक्षकों को इस बात की प्रेरणा देता है कि उन्हें अपने विद्यार्थियों के लिए जीवित जागृत मॉडल के रूप में विकसित होना है।

➢ सिद्धान्त के उपनाम–

(i) सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त
(ii) अवलोकन का सिद्धान्त (iii) प्रेरणात्मक का सिद्धान्त

(1) स्वचिन्तन (2) प्रतिधारण
(3) पुनरावृत्ति (4) सार को दोहराना (2)

131. निम्नलिखित रिक्त स्थान के लिए सही उत्तर का चयन करें– (CG TET Paper-I (VI-VIII) 2014)

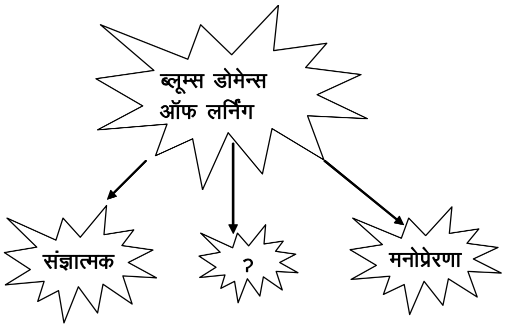

(1) संज्ञानात्मक एवं मनोप्रेरणा (2) ज्ञानात्मक
(3) भावात्मक (4) शारीरिक क्षमता (3)

132. एक शिक्षिका पाठ्य–वस्तु और फल–सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं और पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम .... पर आधारित है। (DSSSB PRT)(C TET (I-V) 2012)(CG TET (VI-VIII) 2014)
(1) ज्ञान के निर्माण (2) अधिगम के शास्त्रीय अनुबन्धन
(3) पुनर्बलन के सिद्धांत
(4) अधिगम के सक्रिय अनुबंधन (1)

133. शिक्षार्थी फैशन शो को देखकर मॉडल्स का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के अनुकरण को .... कहा जा सकता है। (DSSSB PRT)(C TET (VI-VIII) 2013)
(1) प्राथमिक अनुकरण (2) गौण अनुकरण
(3) सामाजिक अधिगम (4) सामान्यीकरण (3)

134. अधिगम का शिक्षा में योगदान है– (Bihar TET Paper-II (VI-VIII) 2013)
(1) व्यवहार परिवर्तन में (2) नवीन अनुभव प्राप्त करने में
(3) समायोजन में (4) इनमें से सभी में (4)

135. 'बच्चे फिल्मों में दिखाए गए हिंसात्मक व्यवहार को सीख सकते हैं।' यह निष्कर्ष निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक द्वारा किए गए कार्य पर आधारित हो सकता है? (C TET Paper-II (VI-VIII) 2013)
(1) जे.बी. वाटसन (2) एल्बर्ट बंडूरा
(3) जीन पियाजे (4) एडवर्ड एल. थार्नडाइक (2)

136. पावलॉव ने सीखने के अनुबन्धन–प्रतिक्रिया सिद्धांत का प्रतिपादन .... पर प्रयोग करके किया था। (UP TET Paper-II (VI-VIII) 2013)
(1) खरगोश (2) चूहे
(3) कुत्ते (4) बिल्ली (3)

137. किसी शिक्षक को यदि यह लगता है कि उसका एक विद्यार्थी जो पहले विषय–वस्तु को भली प्रकार सीख रहा था। उसमें स्थिरता आ गई है। शिक्षक को इसे (UP TET Paper-I (I-V) 2013)
(1) सीखने की प्रक्रिया की स्वाभाविक स्थिति मानना चाहिए
(2) विषय को स्पष्टता से पढ़ाना चाहिए
(3) विद्यार्थी को प्रेरित करना चाहिए
(4) उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए (1)

138. सीखने के वक्र (UP TET Paper-II (VI-VIII) 2013)
(1) सीखने की प्रगति के सूचक है
(2) सीखने की मौलिकता के सूचक है
(3) सीखने के गत्यात्मक स्वरूप के सूचक है
(4) सीखने की रचनात्मकता के सूचक है (1)

139. 'सीखने की तत्परता' .... की ओर संकेत करती है। (C TET Paper-I (I-V) 2013)
(1) थॉर्नडाइक का तत्परता का नियम
(2) शिक्षार्थियों का सामान्य योग्यता स्तर
(3) सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर
(4) सीखने के कार्य की प्रकृति को संतुष्ट करने (3)

140. अ,ब,स तीन शिक्षार्थी हैं जो अंग्रेजी पढ़ते हैं। अ को यह विषय रोचक लगता है और वह सोचता है कि यह उसके भविष्य में सहायक होगा। ब अंग्रेजी इसलिए पढ़ती है, क्योंकि वह कक्षा में पहला स्थान प्राप्त करना चाहती है। स इसलिए पढ़ता है, क्योंकि उसकी प्राथमिकता सरोकार उत्तीर्ण होने वाले ग्रेड्स प्राप्त करना है। अ, ब, और स के उद्देश्य क्रमशः .... है। (DSSSB PRT)(C TET 2013 (VI-VIII))
(1) निपुणता, निष्पादन, निष्पादन–उपेक्षा
(2) निष्पादन, निष्पादन–उपेक्षा, निपुणता
(3) निष्पादन–उपेक्षा, निपुणता, निष्पादन
(4) निपुणता, निष्पादन–उपेक्षा, निष्पादन (1)

141. निम्नलिखित में से किस एक से शिशु के अधिगम को सहायता नहीं मिलती? (UP TET Paper-I (I-V) 2013)
(1) अनुकरण (2) अभिप्रेरणा
(3) स्कूल का बस्ता (4) पुरस्कार (3)

142. निम्नलिखित में से कौन सा अधिगम का क्षेत्र नहीं है? (Hariyana TET (I-V) 2014)(Hariyana TET (I-V) 2013)
(1) संज्ञानात्मक (2) भावात्मक
(3) क्रियात्मक (4) आध्यात्मिक (4)

143. गैग्ने निम्न में किससे सम्बन्धित हैं? (UP TET Paper-II (VI-VIII) 2013)

2 चिन्तन, कल्पना एवं तर्क।
Reflection, Imagination and Argument.

चिंतन का अर्थ (Meaning of Thinking)

- **चिन्तन शक्ति** के कारण ही मुनष्य सभी प्राणियों में **श्रेष्ठ** है। यह शक्ति उसे प्रकृति द्वारा प्राप्त होती है। मनोविज्ञान के अनुसार चिन्तन एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, स्मृति और कल्पना आदि प्रक्रिया का समावेश होता है। शिक्षा के माध्यम से बालकों के चिन्तन–प्रत्यय, निर्माण और तर्क–शक्ति के विकास पर ध्यान देना आवश्यक है।
- चिन्तन एक गंभीर विचारशील क्रिया से होता है, जिसमें किसी **गहन** और **जटिल समस्या** को सुलझाने में एक वैज्ञानिक संलग्न रहता है। वह घंटों गणित के सिद्धांतों में उलझा रहता है या विभिन्न विधियों की कल्पना करता है। यही चिन्तन है।
- चिन्तन एक ज्ञानात्मक प्रक्रिया है– इसमें **प्रत्यक्षात्मक** एवं **प्रत्ययात्मक** या **कल्पनात्मक** ज्ञान निहित है। चिन्तन या विचार व्यक्ति की समझ मानसिक प्रक्रियाओं में समाया रहता है। यह मानव मस्तिष्क की एक ऐसी प्रक्रिया है, जो हमें पहले से ही किसी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार कर देती है।

चिंतन की परिभाषाएँ (Definition of Thinking)

- "चिन्तन मानसिक क्रिया का **ज्ञानात्मक पहलू** है"– रॉस
- "मनोवैज्ञानिक विवेचन में चिन्तन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाता है, जिसमें विशेष रूप से **शृंखलाबद्ध विचार** किसी **लक्ष्य** या **उद्देश्य** की और प्रवाहित होते हैं"– वेलेन्टाइन
- "समस्या का **ज्ञान** एवं समस्या का **समाधान** ही चिंतन है"– मरसेल
- "चिन्तन एक **प्रतीकात्मक** स्वरूप की **विचारात्मक** प्रक्रिया है, जिसका प्रारम्भ व्यक्ति के समक्ष उपस्थिति किसी समस्या या कार्य से होता है"– वॉरेन
- चिन्तन **प्रतीकात्मक** व्यवहार है। यह सभी प्रकार की वस्तुओं और विषयों से संबंधित है– गिल्फोर्ड
- "प्रतिमाओं, प्रतीकों, सम्प्रत्ययों, नियमों एवं अन्य मध्यस्थ इकाइयों के मानसिक जोड़–तोड़ को चिन्तन कहा जाता है।" –कॉगन तथा हेभमैन
- "चिन्तन एक ऐसी **मानसिक प्रक्रिया** है, जो हम लोगों को **उद्दीपक** तथा **घटनाओं के प्रतीकात्मक** प्रतिनिधित्व द्वारा किसी समस्या का समाधान करने में मदत करती है।" –सिलवरमैन
- "चिन्तन में संप्रतियों प्रतिज्ञाप्ति तथा प्रतिमाओं का **मानसिक** जोड़–तोड़ होता है।" –बेरोन

➤ इंगलिश और इंगलिश (1980) के अनुसार चिन्तन के चार मुख्य अर्थ हैं–

1. कोई भी **प्रक्रिया** या **कार्य** जो मुख्यतः प्रत्याक्षात्मक नहीं है चिन्तन हो सकता है, इसके माध्यम से व्यक्ति किसी **परिस्थिति** या **पदार्थ** के पहलू को समझता है।
2. दूसरे अर्थ में **समस्या का समाधान ही चिन्तन** है, जिसमें प्रकट पहस्तन और प्रत्यक्षीकरण न होकर मुख्यतः **विचार** होते है।
3. तीसरे अर्थ में चिन्तन का अर्थ किसी **समस्या में निहित सम्बन्धों का समझना** अथवा **उस पर विचार** करना है।
4. चिन्तन का अर्थ आन्तरिक और मूक वाणी **व्यवहार** से भी लगाया जाता है।

- "कार्यात्मक परिभाषा के रूप में **चिन्तन** का काल्पनिक जगत में व्यवस्था स्थापित करना है। यह व्यवस्था स्थापित करना वस्तुओं से संबंधित होता है तथा साथ ही साथ वस्तुओं के जगत की **प्रतीकात्मकता** से भी संबंधित होता है।" – आइसनेक
- "चिन्तन **मस्तिष्क में चलने वाली** एक **मानसिक प्रक्रिया** है, यह किसी सूचना के संगठित करने तथा समझने एवं अन्य किसी को **संप्रेषित** करने में घटित होती है।" – सिक्करेली
- "चिन्तन वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें सम्प्रत्ययों के निर्माण, **समस्याओं के समाधान**, क्रान्तिक चिन्तन, तर्कना एवं निर्णयन में सूचनाओं का प्रहस्तन किया जाता है।" –सैन्ट्राक

चिंतन की विशेषताएँ (Characteristic of Thinking)

1. चिंतन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है।
2. चिंतन **संज्ञानात्मक प्रक्रिया** है।
3. चिंतन लक्ष्य आधारित एवं व्यवहार का विशिष्ट गुण है।
4. चिन्तन से **मानव एवं पशु में अन्तर** होता है।
5. अभिप्रेरणा से **चिंतन को बढ़ावा** मिलता है।
6. चिंतन में समस्या समाधान शक्ति होती है।
7. चिंतन **प्रतीकों पर आधारित** मानसिक प्रक्रिया है।
8. चिन्तन की प्रक्रिया उद्देश्यपूर्णता की और अग्रसर होती है।

3 अभिप्रेरणा (Motivation)

अभिप्रेरणा व इसके अधिगम के लिए निहितार्थ
Motivation and Implication for Learning

✦ अभिप्रेरणा का अर्थ (Meaning of Motivation)

- किसी कार्य को करने के लिए जो **कारक** शरीर को गतिमान करते हैं उनका सम्बन्ध **अभिप्रेरणा** से लगाया जाता है।
- सामान्य अर्थों में अभिप्रेरणा एक आंतरिक इच्छा या भावना है जो किसी कर्मचारी, व्यक्ति, बालक, छात्र को पूर्व निर्धारित लक्ष्यों प्राप्ति हेतु **कार्य करने के लिए** उत्प्रेरित करती है वैसे देखा जाये तो यह प्रबंध का वह भाग जो व्यक्तियों की भावनाओं, इच्छाओं आवश्यकताओं आदि का अध्ययन कर उन्हें सन्तुष्ट करने का प्रयास करता है, जिससे व्यक्ति कार्य करने को तत्पर होकर **संगठन के** लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु अपना अधिकतम प्रदान करता है।

- **Motivation** एक अंग्रेजी शब्द है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के **Motum** से हुई जिसका अर्थ **Move Motor** या **Motion** से होता है। जिसका अभिप्राय **गति करना** या **आगे की ओर बढ़ना** होता है।
- इस प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान में अभिप्रेरणा का अर्थ मूल्य, लक्ष्य, उद्देश्य, प्रोत्साहन, **आवश्यकता**, अन्तर्नोद से लगाया जाता है।
- अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा का अर्थ अलग–अलग बताया है। अभिप्रेरणा को जिज्ञासा–ब्लेन के द्वारा बताया गया। अभिप्रेरणा को **नियंत्रण** डी–चार्मर्स द्वारा बताया गया। अभिप्रेरणा को **आत्मसम्मान** कपूर स्मिथ द्वारा बताया गया।

➢ उपनाम– अभिप्रेरणा को **सुनहरी सड़क, सीखने का हृदय, सीखने का स्वर्ण पथ।**

अभिप्रेरणा की परिभाषाएँ (Definitions of Motivation)

☞ ''अभिप्रेरणा के अभाव में प्राणी की कोई भी अनुक्रिया या व्यवहार सम्भव नहीं है''–मार्टिमर एपल

☞ ''अच्छा **अधिगम** प्रभावपूर्ण अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है''– फ्रेन्डसन

☞ ''**कार्य को प्रारम्भ करना,** जारी रखना एवं नियमित करने की प्रक्रिया ही अभिप्रेरणा है''– गुड

☞ ''अभिप्रेरणा में हम **क्यों** का अध्ययन करते है हम **खाना क्यों** खाते, हम **प्यार क्यों** करते, हम **शिक्षा क्यों** प्राप्त करते हैं''– क्रेच व क्रेचफिल्ड

☞ ''सीखने की गति सर्वोत्तम होगी यदि प्राणी अभिप्रेरित है''– एण्डरसन

☞ ''अभिप्रेरणा सीखने के लिए एक आवश्यक शर्त है''– मेल्टन

☞ ''अभिप्रेरणा **व्यवहार का उत्पाद** है''– हेनरी

☞ ''अभिप्रेरणा वे शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशाएँ है जो किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है''– मेकडूगल

☞ ''अभिप्रेरणा मनुष्य के मन की **आन्तरिक स्थिति** है''– मिस्केल

☞ ''यह एक आन्तरिक कारक है जो क्रिया को प्रारम्भ करने एवं बनाये रखने की प्रवृत्ति होती है''– गिलफोर्ड

☞ ''यह प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मानव व्यवहार के विभिन्न तत्वों की पहचान है जैसे इच्छाएँ, **संकल्प, उद्देश्य,** रुचि प्रमुख है''– थॉमसन

☞ ''आवश्यकता रुपी **आन्तरिक कारक** ही अभिप्रेरणा है''– लॉवेल

☞ ''अभिप्रेरणा क्रिया की एक ऐसी प्रवृत्ति है जो **प्रणोदन** द्वारा उत्पन्न होती है तथा **समायोजन** द्वारा समाप्त होती है''– शेफर

☞ ''प्रेरणा एक प्रक्रिया है, जिसमें **अधिगम की आन्तरिक** शक्तियाँ उनके वातावरण में विविध लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है''– ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन

अभिप्रेरणा का विशेषताएँ (Characteristic of Motivation)

1. अभिप्रेरणा साध्य न होकर साधन मात्र है।
2. इसमें क्रियाशीलता होती है।
3. बाल–व्यवहार में परिवर्तन करती है।
4. चरित्र–निर्माण में उपयोगी होती है।
5. **अनुशासन की भावना** का विकास होता है।
6. सामाजिक गुणों का विकास होता है।
7. कोई बालक अभिप्रेरणा से तीव्र गति से ज्ञान अर्जन सीखता है।
8. कार्य के प्रति आशावादी बनाती है।

☞ ''अभिप्रेरित व्यवहार चयनात्मक होता है।''– **जुंग के अनुसार**

9. अभिप्रेरणा का एक निश्चित लक्ष्य होता है।

8. **अभिप्रेरणा का ई.आर.जी का सिद्धान्त–** एल्डरफर

Existence– अस्तित्वजन्य

Relationess– सम्बन्धजन्य

Growth– वृद्धि

- इस सिद्धान्त के अनुसार बताया गया कि किसी **निर्धारित क्षण** में एक से अधिक आवश्यकता होने पर व्यक्ति को अभिप्रेरित किया जा सकता है। किसी की **प्राथमिकता** एवं **अभिप्रेरणा** गतिशील होती है वे समय के साथ अस्तित्व, सम्बन्धता एवं वृद्धि के स्तरों के बीच एक जगह से दूसरी जगह पर जाती रहती है।

9. **अभिप्रेरणा का X व Y का सिद्धान्त–** इसके प्रतिपादक **मैकग्रेगर** हैं।

- अभिप्रेरणा की एक्स एवं वाई विचारधारा का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक **डगलस मेकग्रेगर** ने अपनी पुस्तक **Human Side of Enterprises** में किया इसमें विचारधारा में मानव अभिवृत्तियों एवं व्यवहार के संबंध में परस्पर दो विरोधी विचारधाराएँ प्रस्तुत की गई हैं।
- आपने कार्यशील व्यक्तियों की कार्य के प्रति उनकी धारणा के आधार पर यह सिद्धान्त दिया।

- **X सिद्धान्त–** (i) यह मानवीय व्यवहार को नकारात्मक धारणा से विश्लेषित करता है इसके अनुसार व्यक्ति कामचोर, नकारा, आलसी, **क्षमताविहीन** हो जाता है।
  (ii) ये लोग **उत्तरदायित्व** से दूर रहते हैं।
  (iii) ये परिवर्तनों का **विरोध करते** एवं **परम्परागत** आधारों पर ही कार्य करते हैं।
  (iv) सृजनशीलता का इनमें अभाव पाया जाता है।
  (v) कर्मचारी **आत्मकेन्द्रित एवं स्वार्थी** होते हैं।
- **Y सिद्धान्त–** (i) यह सकारात्मक सोच, **परिश्रमी, स्वनिर्देशित,** क्षमतायुक्त, सृजनशील एवं **आत्मनियंत्रण** होते हैं।
  (ii) कर्मचारी कार्य की स्वभाविक एवं सहज क्रिया मानते है।
  (iii) महत्त्वकांक्षी एवं उत्तरदायित्व वाले व्यक्ति होते हैं।
  (iv) इसमें व्यक्ति **कल्पनाशील एवं सृजनशील** होते हैं।
  (v) अपनी क्षमता एवं योग्यता का पूरा प्रयोग करते हैं।

10. **अभिप्रेरणा का आवश्यकता अनुक्रम या आत्मसिद्धी का सिद्धान्त–** इसके प्रतिपादक **अब्राहम मास्लो** हैं। सन् 1943 में यह सिद्धांत दिया गया था। इसमें मनुष्य की आवश्यकताएँ **अनन्त** है एवं वह उन **आवश्यकताओं की संतुष्टि** हेतु प्रयत्न करने के लिए तत्पर होता है। यह अभिप्रेरणा की सर्वश्रेष्ठ विचारधाराओं में से एक है।

(i) **शारीरिक आवश्यकताएँ–**	इसमें भोजन, कपड़ा, मकान, यौन–सम्पर्क, स्वच्छ हवा, धूप की आवश्यकता शामिल होती है।
(ii) **सुरक्षात्मक आवश्यकताएँ–**	जब व्यक्ति भावी भविष्य को सुरक्षित रखना चाहता है। आय का साधन, बीमा, पेशन, भविष्य निधि आदि।
(iii) **स्नेह आवश्यकताएँ–**	पारस्परिक स्नेह,प्यार, अपनत्व, मित्रता, पहचान आदि को शामिल करते हैं।
(iv) **स्वाभिमान आवश्कताएँ–**	सामाजिक आवश्यकताओं के बाद व्यक्ति की अहम् एवं स्वाभिमान की आवश्यकता उत्पन्न होती है। जिसमें पद, स्थिति, मान्यता, प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता, निर्णयन अधिकार एवं पद है।
(v) **आत्म विकास की आवश्यकताएँ–**	इसमें सृजनशीलता, क्षमता, योग्यता के कारण पैदा होती है। यह सर्वोच्च स्तर की आवश्यकता मानी जाती है। शिक्षा, संगीत, नेतृत्व, बागवानी प्रमुख है।

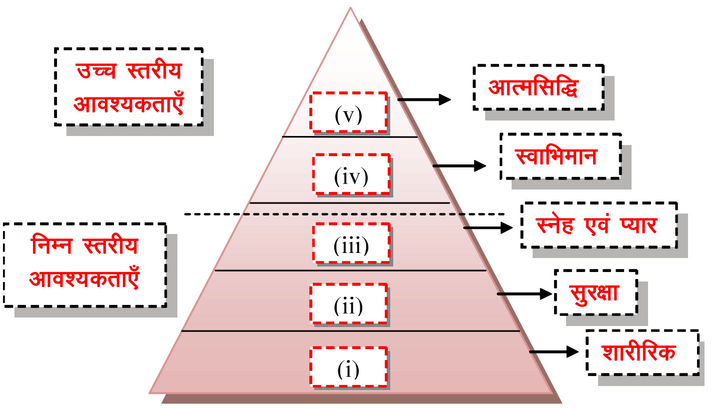

11. **अभिप्रेरणा का प्रक्रियात्मक स्वायत्तता का सिद्धान्त –** इसके प्रतिपादक **जॉन डीवी** हैं।

- पहले आदते किसी उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होती है, परन्तु कुछ समय बाद यह आदतें ही स्वयं **उद्देश्य** बन जाती हैं।
- जैसे– कोई व्यक्ति प्रारम्भ में कूलर व पंखे की हवा खाता है, लेकिन धीरे–धीरे वह ए.सी. में आराम करता है तो वह धीरे–धीरे उसको अपनी आदत में ढाल लेता है और प्रत्येक मौसम में ए.सी. के अनुसार ही कार्य करता है।

1 शिक्षण अधिगम (Teaching Learning)

शिक्षण अधिगम की प्रक्रियायें, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 के संदर्भ में शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनायें एवं विधियाँ।

Teaching learning process, Teaching learning strategies and methods in the context of National Curriculum Framework 2005.

❖ शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Teaching, Learning Processes)

→ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की व्यवस्था का वर्णन सर्वप्रथम डेविस (Davis) ने अपनी पुस्तक 'Management of Teaching and Learning' में किया था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत उन्होंने नियोजन, व्यवस्था, नियंत्रण एवं मार्गदर्शन के रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के चार सोपान बताये हैं।

→ ब्लूम (Bloom) ने शैक्षिक उद्देश्यों को ज्ञानात्मक पक्ष, भावात्मक पक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष के रूप में **तीन भागों** में वर्गीकृत किया है। शैक्षिक उद्देश्यों के इस व्यवस्थित वर्गीकरण को **टेक्सोनॉमी (Taxonomy)** कहा जाता है।

- शिक्षण एक क्रमिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके मुख्य भाग **शिक्षक, शिक्षार्थी** एवं **पाठ्यक्रम** है।

☞ "शिक्षण को अन्तःक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो शिक्षक तथा छात्र के मध्य प्रचलित होता है। कक्षा के कथन का संबंध अपेक्षित क्रियाओं होता है।"– एडमंड एमिडन

☞ "शिक्षण के शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यवस्तु के रूप में तीन प्रमुख बिन्दु होते हैं। इन तीनों के मध्य संबंध स्थापित करना ही शिक्षण कहलाता है।"– रायबर्न

☞ "शिक्षण वह प्रक्रिया है जो छात्र के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए नियोजित पूर्ण तरीके से संचालित की जाती है।"– क्लार्क

☞ "शिक्षण क्रियाओं की एक विधि है जो सीखने की उत्सुकता जाग्रत करती है।"– बी.ओ. स्मिथ

☞ "अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।" जेम्स एम. थाइन

☞ टी.एम. रिस्क ने शिक्षण को बालकों को सिखाये जाने वाले निर्देशों के रूप में परिभाषित किया है।

☞ "शिक्षण वह प्रक्रिया है, जिसमें अधिक विकसित व्यक्तित्व कम विकसित व्यक्तित्व के सम्पर्क आता है और कम विकसित व्यक्तित्व की अग्रिम शिक्षा हेतु विकसित व्यक्तित्व की व्यवस्था करता है।"– एच.सी. मौरिसन

☞ "शिक्षण एक साधन है, जिसके द्वारा समाज युवकों को निश्चित पर्यावरण में प्रशिक्षण प्रदान करता है"– योकम व सिम्पसन

☞ "शिक्षण प्रक्रियाओं में पारस्परिक प्रभावों को शामिल किया जाता है जिसमें दूसरे की व्यावहारिक क्षमताओं के विकास का लक्ष्य होता है" – गेज

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की विशेषताएँ (Features of Teaching, Learning Processes)

- शिक्षण प्रक्रिया के तीन चर या घटक होते हैं– स्तंत्र चर, आश्रित चर एवं हस्तक्षेप चर। शिक्षण के ये चर निदानात्मक, उपचारात्मक एवं मूल्यांकन संबंधी कार्य करते हैं।

(i) यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।
(ii) उद्देश्य पर आधारित है।
(iii) विकासात्मक प्रक्रिया
(iv) आमने–सामने घटित होने वाली प्रक्रिया है।
(v) कला एवं विज्ञान दोनों
(vi) यह एक उपचार विधि है।
(vii) यह त्रिध्रुवीय विधि है।
(viii) एक निर्देशन प्रक्रिया है।
(ix) औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रक्रिया है।
(x) इसका मापन सम्भव है।
(xi) शिक्षण प्रशिक्षण से लेकर अनुदेशक तक एक सतत् प्रक्रिया है।
(xii) शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है।
(xiii) शिक्षण में भाषा सम्प्रेषण का कार्य करती है।
(xiv) शिक्षण एक प्रेरणा एवं पथ प्रदर्शक है।
(xv) शिक्षण एक सामाजिक एवं व्यावसायिक प्रक्रीया है।

➤ शिक्षण के प्रमुख चर टोलमेन के अनुसार

1. स्वतंत्र चर	2. मध्यस्थ चर	3. परतंत्र चर
(शिक्षक)	(छात्रगण)	(पाठ्यक्रम)

शिक्षण के सामान्य सिद्धांत (General Principles of Teaching)

- जेम्स ब्रुनर (James Brunner) ने सर्वप्रथम 1963 में शिक्षण सिद्धांतों का प्रयोग किया था। शिक्षण के सिद्धांत अधिगम प्रक्रिया को संगठित एवं व्यवस्थित बनाते हैं। ये सिद्धांत एक प्रकार से नियमों का समन्वित रूप है जो शिक्षण के अभ्यास को औचित्य प्रदान करते हैं।

✦ पाठ्यचर्या का अधिगमकर्ता के साथ सम्बन्ध –

1. पाठ्यचर्या **छात्र** और **अध्यापक** दोनों के लिए अति महत्त्वपूर्ण अंग होती है। यह छात्र के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक होती है। इससे छात्र **समाजीकरण की प्रक्रिया** में भाग लेने के लिए तैयार हो जाते हैं।
2. पाठ्यचर्या यह निश्चित करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है कि विभिन्न मानसिक स्तर के विद्यालयों में पढ़ने वाले बालकों के उनके मानसिक स्तर के अनुकूल कौन सी क्रियाएँ सिखाना है और कौन सी नहीं? यह छात्रों को समुचित पुस्तकों के **निर्धारण** एवं **चयन** में सहायक होती है।
3. इससे छात्रों को अपना मूल्यांकन कार्य करने में सरलता होती है। यह छात्रों को समाजोपयोगी उत्पादन कार्य और कार्यानुभव पर बल देकर शिक्षा को जीवन से जोड़ने के लिए प्रेरित करती है।
4. इससे क्या पढ़ाना है? क्या सिखाना है? क्या कार्यानुभव देना है? यह शिक्षक ज्ञात कर सकते हैं। इससे छात्र और अध्यापक दोनों को सही दिशा बोध कराने से समय और शक्ति की बचत हो जाती है।
5. शिक्षा के उद्देश्य तभी पूरे होते हैं, जबकि पाठ्यचर्या का निर्माण तथा क्रियान्वयन प्रभावपूर्ण ढंग से होता है और यह निर्माण तथा क्रियान्वयन प्रभावपूर्ण ढंग से तभी हो सकता है जबकि अध्यापक और छात्र **सजग** एवं **जागरूक** हों और **उत्साह** तथा **लगन** के साथ इस कार्य में भाग लें।
6. आदर्श पाठ्यचर्या तो वह है, जो प्रत्येक छात्र का सर्वांगीण विकास कर सके परन्तु ऐसे पाठ्यचर्या का निर्माण अभी तो कोरी कल्पना है। यह कार्य तभी संभव है जबकि प्रत्येक अध्यापक प्रत्येक छात्र के लिए अलग–अलग पाठ्यचर्या का निर्माण करे।

✦ प्रमुख शिक्षण व्यूह रचनाएँ (Major Teaching Strategies)–

☛ ''नीतियाँ शिक्षण की व्यापक विधियाँ है'' – डेविस

1. प्रभुत्ववादी नीतियाँ–

- परम्परागत, पाठ्यवस्तु एवं शिक्षक केन्द्रित
- व्याख्यान विधि
- प्रदर्शन
- अभिक्रमित

2. जनतांत्रिक विधि–

- प्रश्नोत्तर
- खोज
- अन्वेषण / ह्यूरिस्टिक
- प्रोजेक्ट
- मस्तिष्क उद्वेलन विधि
- वाद–विवाद
- भूमिका निर्वाह
- दत्त कार्य
- समीक्षा / रिव्यू

खेल–विधि पर आधारित शिक्षण–पद्धतियाँ (TEACHING METHODS BASED ON PLAY-WAY)

➢ हम खेल–विधि पर आधारित मुख्य शिक्षण–विधियों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं जो इस प्रकार हैं–

1. किंडरगार्टन पद्धति– यह पद्धति फ्रोबेल द्वारा प्रतिपादित की गई है। इस पद्धति में बालक को खेल की गीतों और उपहारों द्वारा शिक्षा दी जाती है। इन गीतों का आधार शिशु–खेल और शिशु–कार्य होता है। उपहारों में नाना प्रकार की वस्तुएँ होती हैं, जैसे ऊन की गेंदे, लकड़ी का गोला, तिकोनी तख्तियाँ, चतुर्भुज आदि।
2. मॉण्टेसरी पद्धति– यह पद्धति **मारिया मॉण्टेसरी** द्वारा प्रतिपादित की गई हैं। इस पद्धति में बालक विभिन्न प्रकार के उपकरणों से खेलकर **अक्षरों, अंकगणित, रेखागणित** इत्यादि का ज्ञान प्राप्त करता है। खेल ही उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करता है।
3. ह्यूरिस्टिक पद्धति या अन्वेषण व्यूह रचना **(Heuristic Strategy)**– यह पद्धति आर्मस्ट्रांग द्वारा प्रतिपादित की गई है। इस पद्धति में बालक–शिक्षक, यन्त्रों और पुस्तकों की सहायता से स्वयं ज्ञान का अर्जन करता है।

☛ ''चुँकि ह्यूरिस्टिक पद्धति का उद्देश्य बालक को मौलिक अन्वेषक की स्थिति में रखना है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से **खेल–विधि** है।'' –नन के अनुसार

- सामाजिक अध्ययन या सामाजिक विज्ञान शिक्षण में अन्वेषण व्यूह रचना उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि किसी भी विषय को सिखाने की प्रक्रिया ही अन्वेषण (Heuristic) कहलाती है। इस प्रकार किसी विषय के नवीन सिद्धान्तों एवं तथ्यों की खोज स्वयं छात्रों द्वारा की जाती है।
- इसी आधार पर सामाजिक अध्ययन या सामाजिक विज्ञान के शिक्षक को अपने शिक्षण की व्यूह रचना इस प्रकार तैयार करनी होती है कि छात्र स्वयं खोज या अन्वेषण के द्वारा सीखें और शिक्षक की भूमिका जिसमें केवल पथ–प्रदर्शन के रूप में होती है।

☛ ''अन्वेषण व्यूह रचना शिक्षण के लिए प्रयुक्त एक ऐसी व्यूह रचना है जिसमें हम छात्रों को यथासम्भव एक अनुसंधानकर्ता या खोजी स्थिति में रखना चाहते हैं अर्थात् अन्वेषण व्यूह रचना वह व्यूह रचना है जिसमें केवल वस्तुओं के विषय में कहे जाने के बजाय उनकी खोज को आवश्यक माना जाता है।'' –एच.ई. आर्मस्ट्रांग के अनुसार

2 आकलन, मापन एवं मूल्यांकन (Assessment, Measurement and Evaluation)

आकलन, मापन एवं मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य, समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण। सीखने के प्रतिफल।

Meaning and purposes of Assessment, Measurement and Evaluation. Comprehensive and Continuous Evaluation. Construction of Achievement Test. Learning Outcomes.

(1) आकलन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Assessment)

- आकलन मूल्यांकन की ही एक तकनीक है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति की विशेषताओं का आंकिक वर्णन किया जाता है।
- इसके द्वारा बालकों के पाठ्यक्रम से संबंधित ज्ञानात्मक अनुभवों की जानकारी प्राप्त की जाती है।
- आकलन एक अनौपचारिक होता है। इसमें **बुद्धि**, **व्यक्तित्त्व**, **समायोजन**, **कुण्ठा** के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- आकलन मूल्यांकन का ही एक भाग माना जाता है। इसका सामान्य अर्थ "सूचनाओं को एकत्रित करने की प्रक्रिया है।"

☞ "आकलन का संबंध छात्र की बौद्धिक उपलब्धि से न होकर उसके **सम्पूर्ण व्यक्तित्व** से है।"– रेमर्श एवं गेज

☞ "आकलन में **ज्ञान** एवं **समझ** का आरोपण निहित होता है।" –जोहारिक

☞ "आकलन, सूचना संग्रहण तथा उस पर विचार–विमर्श की प्रक्रिया है। जिसके विभिन्न माध्यम से यह जान सकते हैं। बालक क्या जानता है, समझता है" – हब्बा और फ्रीड

☞ "यदि हम अपने शिक्षा तंत्र का सच जानना चाहते हैं तो हमें इसके आकलन प्रक्रियाओं में झांकना होगा।" –राउट्री के अनुसार

☞ "आकलन का तात्पर्य किसी चीज की कीमत, वैल्यू, गुणवत्ता या महत्त्व का निर्णय अथवा निर्धारण करना है।" –कैम्ब्रिज शब्दकोष के अनुसार

✦ आकलन की आवश्यकता–

➢ विद्यार्थी के सन्दर्भ में– रुचि जानने, आवश्यकता, योग्यता, पाठ्यक्रम चयन में, वर्गीकरण में।

➢ शिक्षक– छात्रों की योग्यता, कौशल, अधिगम क्षमता पहचानने हेतु।

→ आकलन के मुख्यतः 5 पहलू हैं–

1. उद्देश्य पूर्ण कार्य (Purposeful Activity)
2. सूचना संग्रहण (Collection of Information)
3. सूचनाओं का विश्लेषण (Analysis of Information)
4. सूचना का अर्थ निकालना (Interpretation of Information)
5. अनुदेशनात्मक, प्रशासनिक अथवा निर्देशनात्मक निर्णय (Instructional, Administrative or Guidance related decision making)

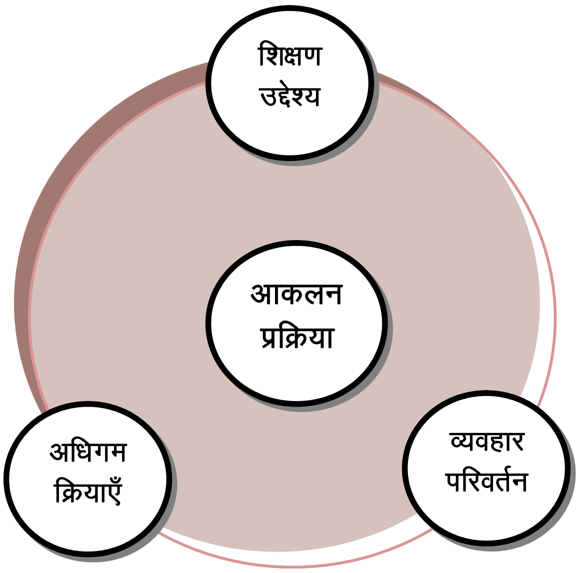

✦ आकलन के प्रकार (Types of Assessment)–

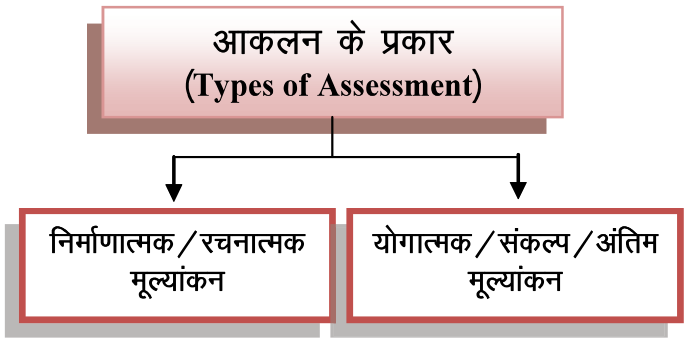

1. निर्माणात्मक आकलन (Formative Assessment)

- बालकों की लगातार **प्रतिपुष्टि** के लिए यह सहायक है। इससे यह भी जाना जाता की अध्यापक के पढ़ाते वक्त कितना ज्ञान ग्रहण किया था।
- यह आकलन **पाठ के बीच–बीच से** किया जाता है।
- अध्यापक शिक्षण तथा अनुदेशन में पाठ्य–वस्तु को छोटे–छोटे भागों या इकाइयों में बांट कर विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करता है। इन इकाइयों को विभिन्न उपविषयों में बांट कर शिक्षण किया जाता है। प्रत्येक उपविषय अथवा इकाई की समाप्ति पर अध्यापक विद्यार्थियों का मूल्यांकन करता है।

- "मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण अंग है इसका शिक्षा में प्राप्त उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध है" — कोठारी आयोग 1966
- "मूल्यांकन हमे बताता है कि बालक ने किस सीमा तक किन उद्देश्यों को प्राप्त किया है" — डांडेकर
- "मूल्यांकन वह निर्णय या विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है" — क्लार व स्टार
- "मूल्यांकन एक नवीन प्रविधि है, जो मापन के व्यापक प्रत्यय को प्रस्तुत करता है" — राइस स्टोन
- "मूल्यांकन नियंत्रण की व्यवस्था है, जिसमें शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता की जाँच की जाती है।" — ब्लूम
- "विद्यालय में हुए विद्यार्थियों के व्यवहार–परिवर्तन के संबंध में प्रमाणों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।"— क्वालेन तथा हन्ना के अनुसार
- "मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है जो कि सम्पूर्ण शिक्षा–प्रणाली का एक आवश्यक अंग है, जो कि शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।"— कोठारी कमीशन के अनुसार
- "मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसमें यह ज्ञात किया जाता है कि किसी विषय में उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है, कक्षा में विद्यार्थियों को दिये गए अनुभव किस सीमा तक प्रभावशाली रहे हैं और विषय के लक्ष्यों की पूर्ति कहाँ तक हुई है।"— राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के अनुसार

→ मूल्यांकन से अभिप्राय उस गुणात्मक एवं परिमाणात्मक प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति, वस्तु, प्रक्रिया आदि के सभी गुणों को ज्ञात करके उसका मूल्य निर्धारित किया जाता है। 'मूल्यांकन' शब्द शिक्षा में अपेक्षाकृत नवीन विचारधारा है। यह शब्द शिक्षा तथा मनोविज्ञान में विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है। शैक्षिक मूल्यांकन **एक निर्णयात्मक प्रक्रिया** है जिससे शिक्षण–अधिगम की सफलता एवं **प्रभावशीलता का आकलन** किया जाता है।

- "मूल्यांकन उद्देश्य की प्राप्ति की सीमा का निर्धारण करने वाली प्रक्रिया है। इसमें निर्देश के परिणामों को जाँचने के लिए शिक्षकों, बालकों, प्रधानाचार्य तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारियों द्वारा प्रयोग में की जाने वाली सब प्रक्रियाएँ शामिल है"— माइकेलिस

→ मूल्यांकन की विचारधारा **बी.एस. ब्लूम** की है, जबकि मूल्यांकन को पाठ योजना से जोड़ने का कार्य **हर्बट स्पेंसर** ने किया था।

→ एनेक डॉटल आलेख– इस विधि में बालक के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उससे जुड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाओं को क्रमबद्ध तरीके से लिखा जाता है।

→ रेटिंग स्केल– इस विधि में बालकों को कुछ कथन दिये जाते हैं, जिनको 2, 4, 9 के आधार पर निर्णय लिया जाता है।

मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर
(Different of Measurement and Evaluation)

क्र. सं.	मापन	मूल्यांकन
1.	मापन एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है।	मूल्यांकन एक गुणात्मक एवं परिमाणात्मक प्रक्रिया है।
2.	यह औपचारिक प्रक्रिया है।	यह औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों रूपों में होती है।
3.	इसमें विद्यार्थी के कुछ विशिष्ट गुणों को ही ज्ञात किया जा सकता है।	इसमें विद्यार्थी के सभी गुणों से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
4.	मापन का क्षेत्र संकुचित है।	मूल्यांकन का क्षेत्र अपेक्षाकृत व्यापक है।
5.	मापन की विधियाँ सीमित है।	इसमें अनेक विधियों का उपयोग किया जाता है।
6.	मापन में समय, धन तथा श्रम की कम आवश्यकता होती है, क्योंकि इसमें परीक्षाएँ कम होती है।	मूल्यांकन में श्रम, धन तथा समय की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें कई परीक्षाओं का निर्माण, प्रशासन तथा विश्लेषण सम्मिलित होता है।
7.	मापन के आधार पर निश्चित धारणा नहीं बनाई जा सकती जैसे– यदि कोई विद्यार्थी अंग्रेजी में 100 में से 95 अंक प्राप्त करता है तो हम यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वह कक्षा का सबसे अच्छा छात्र है।	मूल्यांकन के आधार पर निश्चित धारणा बनाई जा सकती है क्योंकि इसमें उसके सभी पहलुओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है।
8.	मापन एकांगी है।	यह बहुमूखी है।
9.	मापन का सम्बन्ध कितनी मात्रा से है।	इसका संबंध मात्रा एवं अच्छा से है।
10.	मापन में व्यवहार के कुछ आयाम शामिल होते हैं।	इसमें सभी को शामिल किया जाता है।
11.	समय, श्रम एवं धन की अधिक आवश्यकता नहीं।	इसमें अधिक आवश्यकता होती है।
12.	इसमें मात्र अंक को शामिल किया जाता है।	इसमें अंक के बाद मूल्यों का निर्धारण किया जाता है।
13.	इसमें भविष्यवाणी नहीं	इसमें भविष्यवाणी की जाती है।
14.	सामान्य जाँच हेतु समय–समय पर प्रयुक्त की जाती है।	यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।
15.	उद्देश्य प्राप्ति का साधन है।	इसमें शिक्षा की प्राप्ति का लक्ष्य रहता है।
16.	प्राचीन धारणा	नवीन धारणा है।
17.	यह स्थिर प्रक्रिया है।	सतत् प्रक्रिया
18.	सामग्री एकत्रित की जाती है।	सामग्री से निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

ब्लूम– शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया के विभिन्न पक्ष

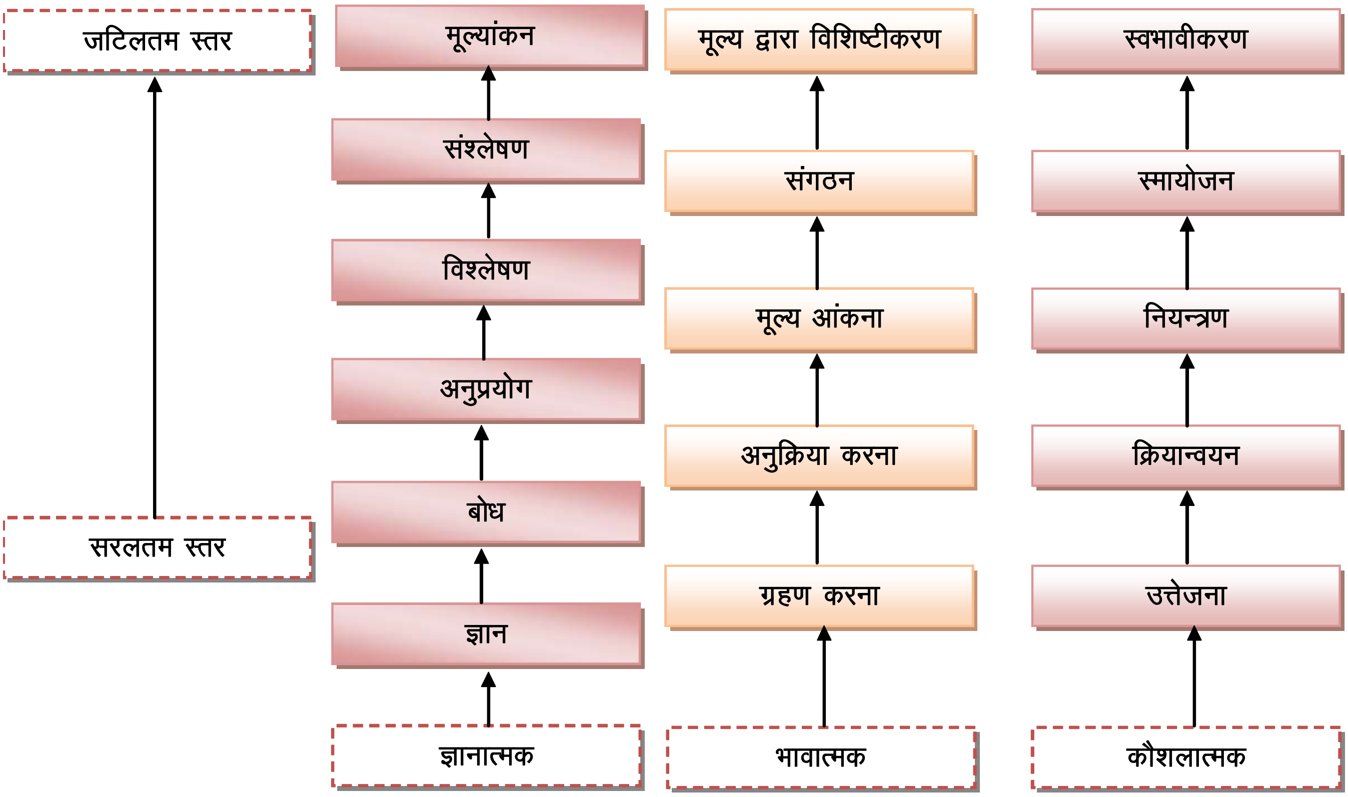

✦ मूल्यांकन का महत्त्व (Importance of Evaluation)–

1. शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का स्तर जानने के लिए।
2. **नैदानिक शिक्षण** (Diagnostic Teaching) के लिए।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक संप्राप्ति के अनुसार उनकी रैंकिंग (Ranking) के लिए।
4. शिक्षण की विधियों तथा प्रविधियों की उपादेयता और आवश्यक हो तो उनमें परिवर्तन के लिए।
5. शिक्षण–व्यूह रचना (Teaching Strategy) में सुधार हेतु।
6. पाठ्यक्रम **मूल्यांकन** के लिए।
7. मूल्यांकन **उचित शैक्षिक निर्णय** लेने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।
8. मूल्यांकन से शिक्षाशास्त्री, प्रशासक, अध्यापक, छात्र तथा अभिभावक **शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति** को जान सकते हैं।
9. मूल्यांकन शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट करता है।
10. छात्रों को अध्ययन के लिये प्रेरित करता है।
11. मूल्यांकन के आधार पर पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, सहायक सामग्री आदि में **आवश्यक सुधार** किया जा सकता है।
12. कक्षा शिक्षण में सुधार लाता है। अध्यापक को अपनी कमी ज्ञात हो जाती है, जिससे वह अपने शिक्षण को अधिक सुसंगठित बनाता है।
13. मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को **शैक्षिक** तथा **व्यावसायिक निर्देशन** दिया जा सकता है।
14. मूल्यांकन से छात्रों की **रुचियों, अभिरुचियों कुशलताओं, योग्यताओं, दृष्टिकोणों** एवं **व्यवहारों** का ज्ञान सम्भव होता है।
15. मूल्यांकन से विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

➢ **डॉ. ब्लूम के अनुसार** तीन प्रकार के चर होते हैं–

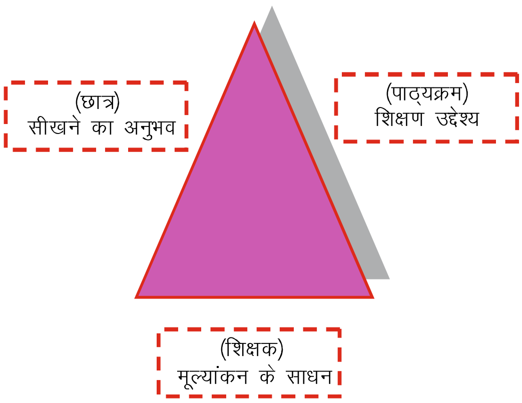

☞ **नोट**– जॉन एडम्स ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना है। (छात्र व अध्यापक)

8. यह **शैक्षिक** और **गैर शैक्षिक** क्षेत्रों में विद्यार्थी की प्रगति संबंधी सूचना/रिपोर्ट उपलब्ध कराता है, जो विद्यार्थी के भावी सफलता का अनुमान लगाने में सहायता देता है।

9. यह अधिगमकर्ताओं की अभिप्रेरणा बढ़ाने, उनकी अध्ययन की आदतों को सुधारने तथा उन्हें अपेक्षित अधिगम स्तर तक पहुँचाने में मदद करता है।

10. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से विद्यार्थी की **प्रतिभा के स्तर** को समुन्नत बनाने में मदद मिलती है, जिससे उसके **सर्वांगीण विकास** का मार्ग प्रशस्त होता है।

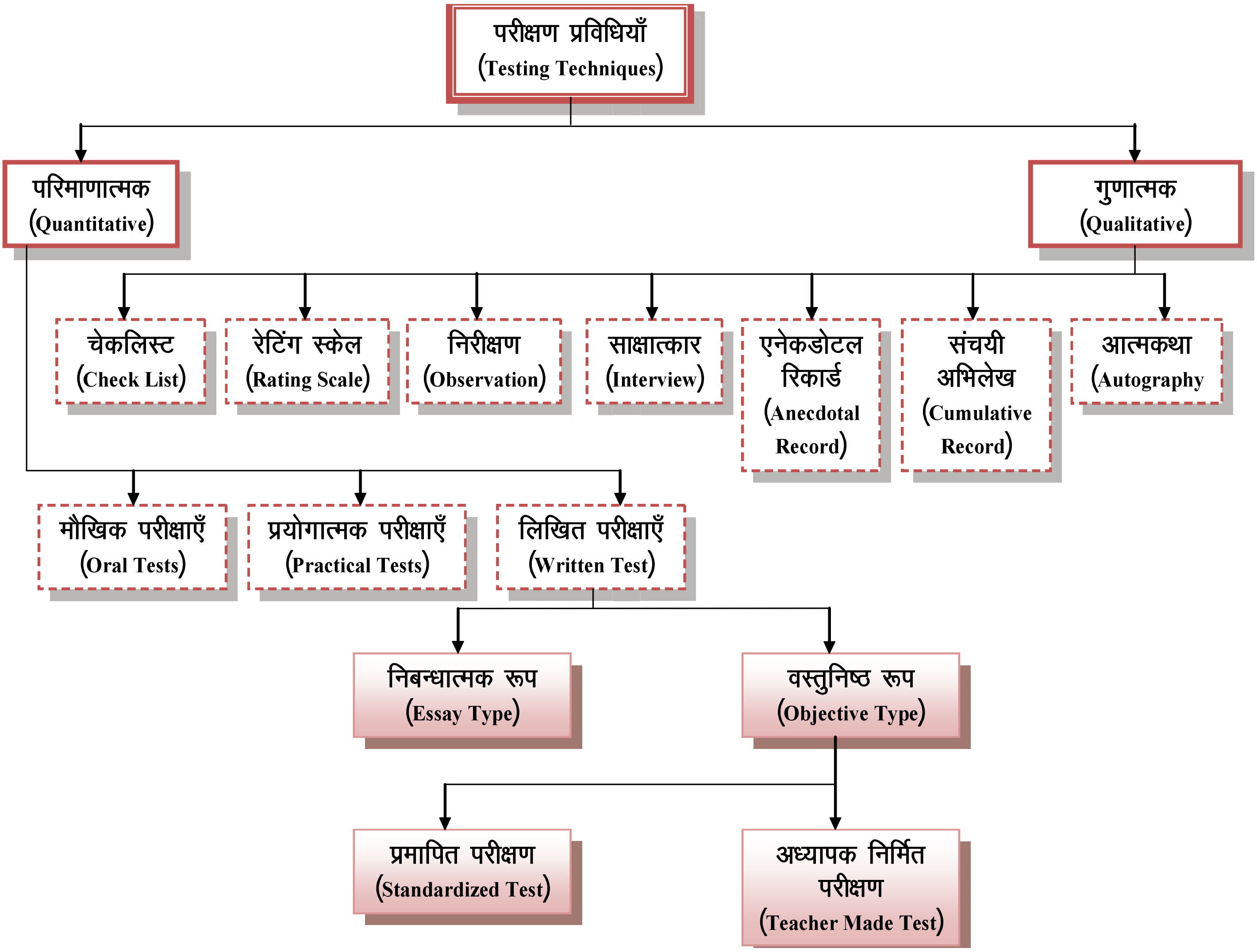

(5) उपलब्धि या निष्पति परीक्षण (Achievement Test)

✦ उपलब्धि परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएँ– (Meaning of Definition of Achievement Test)

- विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेकों प्रकार के छात्र, शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। समान **मानसिक योग्यताओं** से सम्पन्न न होने के कारण वे समय की एक ही अवधि में विभिन्न विषयों तथा कुशलताओं में विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं।
- उनकी इसी प्रगति, प्राप्ति या उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए **'उपलब्धि–परीक्षाओं'** की व्यवस्था की गई है।
- अतः हम कह सकते हैं कि **'उपलब्धि–परीक्षाएँ'** वे परीक्षाएँ हैं, जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की **सफलता** या **उपलब्धि** का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
- किसी विद्यार्थी की **योग्यता** अथवा **उपलब्धि** का मूल्यांकन करने के लिए उसे जो परीक्षण दिया जाता है, **उपलब्धि परीक्षण** कहलाता है।

☞ "उपलब्धि परीक्षण या निष्पति परीक्षण एक माप है, जिसमें विद्यालय से प्राप्त **पूर्व के ज्ञान** का **अंकन** किया जाता है, जिसे प्रशिक्षण अनुभव की समयावधि एवं प्रकृति के आधार पर देखा जाता है।" **–बिंगम के अनुसार**

3 क्रियात्मक अनुसन्धान
Action Research

क्रियात्मक अनुसन्धान का ऐतिहासिक विकास

- क्रियात्मक अनुसन्धान का आरम्भ 20वीं शताब्दी के चौथे दशक के अन्त में लेविन हेरिक कोलियर एवं स्मिथ जैसे अग्रसर व्यक्तियों के कार्यों से हुआ।
- लेविन और उसके साथियों ने इसका प्रयोग मानव सम्बन्धों को समझने और उनमें सुधार लाने में किया।
- **कोलियर** ने इसका प्रयोग सामाजिक योजनाओं के बनाने में किया जबकि **हेरिक** ने इसका प्रयोग शैक्षिक कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिए किया।
- स्टीफन कोरी इस अनुसन्धान पद्धति को भारत में लाए तथा उनके कहने पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने अपने विस्तार सेवा विभाग के माध्यम से इसका प्रचार किया।
- क्रियात्मक शोध का विकास प्रजातांत्रिक शासन पद्धति की देन है। इसका श्रेय अमेरिका को है। वहाँ इसका प्रयोग सबसे पहले कोलियर द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के समय किया गया।
- कोलियर के बाद कुर्त लेविन ने 1946 में मानव–सम्बन्धों को अच्छा करने के लिए सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में क्रियात्मक शोध पर बल दिया।
- टोबा, ब्रेडी, रोबिंसन ने समस्या–समाधान के रूप में क्रिया शोध को प्राथमिकता दी गयी थी।

☞ **नोट–** शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान शब्द का प्रयोग पहली बार बंकिगम ने अपनी पुस्तक **'रिसर्च फॉर टिचर्स'** में 1926 में किया। क्रियात्मक शोध को शिक्षा जगत में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित सन् 1953 में ''कोलम्बिया विश्वविद्यालय'' के प्रोफेसर स्टीफन कोरे द्वारा किया गया, उस समय से लेकर आज तक चला आ रहा है।

- कोरे ने मौलिक एवं क्रियात्मक अनुसंधान बताए थे।
- क्रियात्मक अनुसंधान पर हिन्दी भाषा में पहली पुस्तक कामता प्रसाद पाण्डे ने 1965 में लिखी थी।
- शिक्षा में क्रियात्मक शोध का विकास 1926 से माना जाता है। बकिंगम ने अपनी पुस्तक **'रिसर्च फॉर टीचर'** में अध्यापकों के लिए इसकी आवश्कता पर बल दिया गया था।
- **राइट स्टोन** ने **क्रियात्मक शोध** को आगे बढ़ाया था।

☞ ''क्रियात्मक–शोध के विकास के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी व्यक्ति स्टीफन कोरे जिसकी 1953 में प्रकाशित होने वाली पुस्तक का समस्याओं से पीड़ित और उनके समाधान की विधियों से अपरिचित शिक्षकों द्वारा स्वागत किया गया था'' – मौली

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ (Meaning of Action Research)

- क्रियात्मक अनुसन्धान वह अनुसन्धान है, जिसमें विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार लाने, औद्योगिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने तथा सामाजिक समस्याओं के निदान करने का प्रयास किया जाता है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान का उद्देश्य सैद्धान्तिक ज्ञान की खोज नहीं बल्कि व्यावहारिक समस्याओं का समाधान है। किसी क्षेत्र में उसके कार्यकर्त्ताओं द्वारा अपने कार्य में सुधार लाने के लिए, किये जाने वाले अनुसन्धान को **क्रियात्मक अनुसन्धान** कहा जाता है।

➢ **क्रियात्मक अनुसन्धान के बारे में निम्नलिखित तीन बातें प्रमुख हैं–**

(i) अनुसन्धानकर्ता एवं उस अनुसन्धान के परिणामों का उपयोग करने वाला अर्थात् उसको क्रियात्मक रूप देने वाला व्यक्ति एक ही होता है।

(ii) अनुसन्धान की उपयोगिता किसी **विशिष्ट स्थिति** तक सीमित है। यह बात दूसरी है कि इससे किसी अन्य व्यक्ति को अपनी किसी समस्या का हल करने में कोई संकेत मिल सके, किसी परिकल्पना के निर्माण में सहायता मिल सके या किसी सिद्धांत का स्रोत मिल सके। अधिकतर इस प्रकार के अनुसन्धान का तकनीकी खोजों की तरह कोई व्यापक प्रयोग नहीं होता, ना ही इससे किसी सिद्धांत या प्रणाली विज्ञान की उत्पत्ति की आशा होती है।

(iii) अक्सर किसी क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं द्वारा ही इसको सम्पन्न किया जाता है। यह अवश्य है कि समय–समय पर कार्यकर्त्ता अपने अनुसन्धान को अधिक वैज्ञानिक तथा वैध बनाने के लिए किसी विशेषज्ञ की सहायता ले सकता है परन्तु अनुसन्धान की अन्तिम जिम्मेदारी उसी कार्यकर्त्ता की होती है।

- किसी दी हुई परिस्थिति में कार्यों एवं निर्णयों की गुणवत्ता को सुधारना ही क्रियात्मक अनुसन्धान का लक्ष्य होता है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान के तहत् समस्या का चयन यथार्थ के अत्यन्त मूर्त स्तर से होता है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान में **शोध परिकल्पना** प्रस्तावित कार्य तथा उसके प्रत्याशित परिणाम के रूप में निर्मित की जाती है। अतः इसे क्रियात्मक–परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान आत्म–मूल्यांकन परक (Self-evaluative) होता है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान का उपयोग **अत्यन्त तात्कालिक** एवं **प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित** परिस्थितियों में होता है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान शिक्षक अथवा अभ्यासकर्मी को पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र के महत्त्वपूर्ण पक्षों पर समीक्षात्मक चिन्तन करने तथा उनमें अपेक्षित सुधार लाने के लिए प्रेरित करता है।
- क्रियात्मक अनुसन्धान में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार की विधियों का अनुप्रयोग किया जा सकता है।
- क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शोधकर्त्ता अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का प्रयास करता है ताकि वह अपने कार्यों का मूल्यांकन कर सके और उनमें **संशोधन** कर सके।
- क्रियात्मक शोध अभिकल्प के प्रमुखतः **तीन प्रकार** हैः **(क)** एकल समूह अभिकल्प, **(ख)** समानांतर समूह अभिकल्प और (ख) सामानांतर समूह अभिकल्प और **(ग)** चक्र समूह अभिकल्प।
- क्रियात्मक शोध की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि दैनिक शिक्षण योजना में **बिना किसी व्यतिक्रम** या **व्यवधान** के शिक्षक समस्या के समाधान का प्रयत्न करता है और उचित फल के आधार पर अपनी शिक्षण क्रिया में सुधार करता है।
- क्रियात्मक शोध के अनेक सोपानों के अध्ययन से पता चलता है कि क्रियात्मक शोध का मूल तत्व वैज्ञानिक विधि का प्रयोग है।
- हिन्दी पढ़ते समय प्रायः शिक्षार्थी अनेक कारणों से शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं। अशुद्ध उच्चारण के कारणों का पता लगाना **क्रियात्मक अनुसंधान** का क्षेत्र हो सकता है।
- क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा हम जान सकते हैं कि पठन में इस प्रकार के दोषों के क्या कारण हो सकते हैं तथा कारणों को जानकर उनके **निवारण के उपाय** भी खोजे जा सकते हैं।
- **भाषा के चार कौशलों–** सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना को हम क्रियात्मक शोध के परिप्रेक्ष्य में चार प्रमुख क्षेत्र मान सकते हैं।
- स्टीफन एम. कोरे के अनुसार क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत शिक्षक तथा शिक्षा से सम्बद्ध अन्य व्यक्ति अपनी कल्पनाशक्ति का **सृजनात्मक** एवं **रचनात्मक** प्रयोग करते हुए साहसपूर्वक उन **क्रियाकलापों का परीक्षण** करते हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. वैज्ञानिक अनुसंधान करने की दिशा में निम्नलिखित में से कौन सा एक कदम नहीं है? **(REET, 2022 (L-2))**
(1) एक समस्या की अवधारणा (2) संशोधन शोध निष्कर्ष
(3) आधार सामग्री एकत्र करना (4) गतिशील दृष्टिकोण (4)

2. क्रियात्मक अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य .... है। **(REET, 2022 (L-2))**
(1) क्रियाविधि (2) नैदानिक
(3) विवरणात्मक (4) रूपान्तरकारी (2)

3. शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान के विकास में किसने योगदान नहीं दिया? **(REET, 2022 (L-2))**
(1) कर्ट लेविन (2) बी.आर. बकिंघम
(3) स्टेफन एम. कोवे (4) स्टेफन एम. कोरे (3)

4. निम्न में से कौन–सा चरण शोध को क्रियात्मक अनुसंधान बनाता है? **(REET, 2022 (L-2))**
(1) उपकल्पनाओं का निर्माण
(2) प्रोग्राम का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन
(3) सामान्यीकरण (4) साहित्य का पुनरीक्षण (2)

5. क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ है– **(REET, 2022 (L-1))**
(1) एक अनुदैर्ध्य अनुसंधान (2) एक अनुप्रयुक्त अनुसंधान
(3) एक शोध जिससे तत्काल समस्या को हल किया जा सके।
(4) सामाजिक–आर्थिक उद्देश्य के साथ एक शोध (3)

6. एक विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा विद्यार्थियों की विभिन्न संवेगात्मक समस्याओं के कारणों को पहचानने व उन्हें दूर करने हेतु कौन–सा अनुसंधान किया जाता है? **(REET, 2021 (L-2))**
(1) क्रियात्मक अनुसंधान (2) गुणात्मक अनुसंधान
(3) ऐतिहासिक अनुसंधान (4) वर्णनात्मक अनुसंधान (1)

7. निम्न में से कौन क्रियात्मक शोध से संबंधित नहीं है? **(REET, 2018 (L-2))**
(1) क्रियात्मक शोध सिद्धांत निर्माण में सहायता करता है।
(2) यह व्यावहारिक समस्या के समाधान करने में सहायक है।
(3) त्वरित चिंताजनक समस्या के ऊपर यह केन्द्रित होता है।
(4) यह रचनात्मक प्रतिक्रिया देता है जैसे उद्देश्य और प्रणाली, में खुला परिवर्तन होना। (1)

8. अनुसंधान जो सामाजिक समस्या से संबंधित होता है तथा विद्यालय की जनशक्ति के द्वारा क्रियाकलापों के सुधार हेतु संचालित किया जाता है .... कहलाता है– **(REET, 2016 (L-2))**
(1) मौलिक अनुसंधान (2) क्रियात्मक अनुसंधान
(3) सामाजिक अनुसंधान (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं (2)

4

शिक्षा का अधिकार (Right to Education)

शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 (अध्यापकों की भूमिका एवं दायित्व)

Right to Education Act 2009 (Role and Responsibilities of Teachers)

❖ भारत में शिक्षा का क्रमबद्ध विकास–

- सन् 1781 में वारेन हेस्टिंग्स ने कलकता में मदरसा स्थापित किया।
- सन् 1791 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत कॉलेज प्रारम्भ किया।
- सन् 1800 में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना की गई थी।
- सन् 1813 में चार्टर में पहली बार भारत में शिक्षा प्रसार के लिए **1 लाख रुपये** का प्रावधान किया गया था।
- सन् 1835 में मैकाले ने शिक्षा पर बल दिया था। (आपको भारत में शिक्षा का जनक जबकि चार्ल्स ग्राण्ट को विश्व स्तर पर आधुनिक शिक्षा का **जनक** कहा गया था।)
- शिक्षा का निष्पादन सिद्धांत ऑकलैण्ड द्वारा दिया गया था।
- सन् 1854 में वुड डिस्पेच **(भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा)** इसमें देशी भाषा/प्राथमिक पाठशाला/अनुदान पद्धति/लोक शिक्षा विभाग/व्यावसायिक शिक्षा पर बल इसकी सिफारिश पर कलकत्ता, बम्बई एवं मद्रास विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था।
- सन् 1870 में ब्रिटेन में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम लागू किया गया था।
- सन् 1882–83 में 'हंटर आयोग' ने प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया था।
- सन् 1893 में बड़ौदा महाराज द्वारा अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई थी।
- सन् 1902 में 'रेले आयोग' (कर्जन) द्वारा विश्वविद्यालय शिक्षा प्रारम्भ की गई थी।
- सन् 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम बनाया गया था।
- सन् 1910 में गोपाल कृष्ण गोखले ने निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव रखा था।
- सन् 1917 में सेडलर विश्वविद्यालय आयोग **(कलकत्ता)** 3 सदस्य थे।

➢ **नोट–** सेडलर के अलावा दो भारतीय आशुतोष मुखर्जी, जिआउद्दीन अहमद जिसमें निम्न प्रणाली शामिल की गई थी। (स्नातक 3 वर्ष, महिला शिक्षा, पाठ्यक्रम विभाजन)

- सन् 1937 में वर्धा शिक्षा योजना या बेसिक शिक्षा– गांधी जी द्वारा **7–14 वर्ष** के बालकों को निःशुल्क शिक्षा या हस्त कौशल शिक्षा देना प्रारम्भ किया गया था।
- सन् 1944 में सार्जेन्ट आयोग द्वारा **6–11 वर्ष** के बालक के लिए अनिवार्य शिक्षा प्रारम्भ की गई।
- सन् 1948 में राधाकृष्णन आयोग या भारतीय शिक्षा आयोग बनाया गया था।
- शिक्षा समवर्ती सूची में शामिल, 180 दिन कम से कम कार्य दिवस हो।
- सन् 1950 में राज्य के **नीति–निदेशक सिद्धांत** में अनुच्छेद 45 जोड़ा गया।
- सन् 1952 में मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा) 7 अगस्त, 1957 जयपुर बाद में अजमेर लाया गया।
- सन् 1958 में माध्यमिक शिक्षा परिषद् का गठन किया गया था।
- सन् 1961 में NCERT का गठन किया गया था।
- सन् 1964–66 में **कोठारी आयोग** दोलत सिंह कोठारी द्वारा तैयार किया गया था। (10 + 2 + 3 शिक्षा, मातृभाषा, त्रिभाषा, नैतिक शिक्षा पर बल)

✦ सन् 1968 राष्ट्रीय शिक्षा नीति –

- **14 वर्ष तक** अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई थी।

✦ सन् 1986 शिक्षा नीति–

- शिक्षा प्रणाली 10 + 2 + 3 रखी गयी थी।
- प्रारम्भिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाना।
- उच्चतर माध्यमिक शिक्षा को व्यावसायिक बनाने का मसौदा तैयार किया गया था।
- सन् 1988 में DIET की स्थापना की गई थी।
- सन् 1986 में शिक्षा के तहत् DPEP कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया था।
- सन् 1993 में यशपाल कमेठी बिना बोझ के शिक्षा पर आधारित थी।
- 1 दिसम्बर, 2002 में 86वें शिक्षा संविधान संशोधन द्वारा नये प्रावधान जोड़े गये।

✦ धारा–19–

- विद्यालय में मानक मानदण्ड पूरे करना, जैसे– खेल मैदान, कार्यालय कक्ष, शौचालय, पुस्तकालय, चार दीवारी एवं रसोईघर यह 3 वर्ष में पूर्ण करने होंगे।

✦ धारा–20–

- केन्द्र सरकार द्वारा किसी भी मानक को हटाया या जोड़ा जा सकता है।

✦ धारा–21–

- **SMC** का गठन करना।
- इस समिति में कुल सदस्यों में से कम–से–कम तीन चौथाई सदस्य माता–पिता या बच्चों के अभिभावक होंगे।
- 11 अभिभावक, अध्यक्ष इसी से/12वाँ पंच–पार्षद/13वाँ पदेन अध्यापक/14वाँ विद्यार्थी/15वाँ सदस्य सचिव H.M. होगा।

✦ धारा–22–

- विद्यालय की विकास योजना को **विद्यालय प्रबंधन समिति** द्वारा संचालित किया जायेगा।
- SMC द्वारा ही गठित एक विद्यालय विकास योजना बनायी जायेगी। यह 3 वर्षीय योजना होगी।

✦ धारा–23–

- शिक्षक की योग्यता, वेतन, पद, सेवा का उल्लेख
- जहाँ संशाधन न्यून है वहाँ केन्द्र सरकार नियमानुसार न्यूनतम योग्यताओं में 5 वर्ष तक की छूट दे सकती है।

✦ धारा–24–

- शिक्षक के दायित्व
- विद्यालय नियमित जाना।
- विद्यालय में पाठ्यक्रम समय पर पूरा करवाना।
- प्रति सप्ताह 45 कालांश लेना।
- समय–समय पर शिक्षक–अभिभावक संवाद।
- यदि इसका उल्लंघन होता है तो अनुशासनात्मक कार्यवाही होगी।
- शिक्षकों की शिकायतों को दूर किया जायेगा।
- अंतिम निर्णय जिला स्तर।

✦ धारा–25–

➢ छात्र–शिक्षक अनुपात

अनुपात

क्र.सं.	छात्र	शिक्षक
	कक्षा 1 से 5	
1.	0–30	न्यूनतम 2
2.	31–60	2
3.	61–90	3
4.	91–120	4
5.	121–150	5
	कक्षा 6 से 8	
6.	1–35	1
7.	36–70	2
8.	71–100	3
9.	100 से अधिक	प्रधानाध्यापक पद देय होगा
10.	150 से अधिक	एक प्रधानाध्यापक (II ग्रेड) 5 शिक्षक (न्यूनतम 3 शिक्षक) 1. भाषा शिक्षक 2. गणित शिक्षक 3. सामाजिक शिक्षक

→ एक अध्यापक को एक सप्ताह में न्यूनतम 45 घण्टे कार्य करना होता है, जिसमें तैयारी के घण्टे भी शामिल है।

→ प्रति सप्ताह शिक्षक का अधिकतम कार्य– 48 घण्टे

☞ नोट– 9 फरवरी, 2017 के अनुसार

कक्षा 1–5 तक — छात्र शिक्षक अनुपात– 30 : 1

कक्षा 6–8 तक — छात्र शिक्षक अनुपात– 35 : 1

✦ धारा–26–

- सरकार द्वारा स्थापित या सहायता प्राप्त विद्यालय में 10% से अधिक रिक्त पद नहीं होंगे।

✦ धारा–27–

- शिक्षक को जनगणना, चुनाव कार्य एवं आपदा राहत के अतिरिक्त किसी भी प्रकार के गैर–शैक्षणिक कार्य पर नहीं लगाया जा सकता है।

✦ धारा–28–

- कोई भी शिक्षक प्राइवेट संस्थान या ट्यूशन कार्य करने पर प्रतिबंधित करती है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. एक प्रारंभिक विद्यालय का शिक्षक छात्र के शैक्षणिक आत्म–संप्रत्यय के विकास को दृढ़ता से प्रभावित कर सकता है : (C TET (L-2) 2024)
(1) विशेष छात्रों से बहुत कम उम्मीदें रखना
(2) सभी विद्यार्थियों से बहुत कम अपेक्षाएँ रखना
(3) छात्रों में स्वायत्तता और पहल को दंडित करना
(4) छात्रों में स्वायत्तता और पहल को पुरस्कृत करना (2)

2. यदि उन्हीं छात्रों को वही परिणाम लगातार प्राप्त होता है तो यह एक .... आकलन है
(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))
(1) वैध (2) अवैध
(3) विश्वसनीय (4) अविश्वसनीय (3)

3. RTE अधिनियम, 2009 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा का अर्थ है: (REET, 2022 (L-2))
(1) पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा
(2) प्रथम श्रेणी से पहले की शिक्षा
(3) आठवीं से बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा
(4) माध्यमिक शिक्षा (1)

4. RTE अधिनियम, 2009 शिक्षकों के लिये प्रति सप्ताह कितने घंटे काम करने का निर्देश देता है?
(REET, 2022 (L-2))
(1) 40 घण्टे (2) 45 घण्टे
(3) 42 घण्टे (4) 48 घण्टे (2)

5. बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार किस अधिनियम के अन्तर्गत आता है? (REET, 2022 (L-2))
(1) 2009 (2) 2012
(3) 2005 (4) 2010 (1)

6. शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के लिये कौनसा कथन सत्य नहीं है? (REET, 2022 (L-2))
(1) छः से चौदह वर्ष के प्रत्येक बालक के लिये निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा
(2) विद्यालय प्रबन्ध समिति का प्रावधान
(3) प्राथमिक शिक्षा के लिये राष्ट्रीय आयोग का गठन
(4) अध्यापक के लिये प्रति सप्ताह न्यूनतम 60 घण्टों का कार्य (4)

7. बालकों के मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 में निम्न में से किस पर ध्यान नहीं दिया गया है?
(REET, 2022 (L-2))
(1) अध्यापकों को प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करना
(2) घुमन्तु बालकों के प्रवेश को सुनिश्चित करना
(3) एकेडमिक कलेन्डर को निर्धारित करना
(4) 14 वर्ष के पश्चात् शिक्षा व्यवस्था (4)

8. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 के अनुसार शिक्षकों के लिए प्रति सप्ताह काम के निर्धारित घंटे हैं– (REET, 2022 (L-1))
(1) 40 घंटे (2) 42 घंटे
(3) 45 घंटे (4) 48 घंटे (3)

9. आर.टी.ई अधिनियम, 2009 का अध्याय 4 किस क्षेत्र से सम्बन्धित है? (I Grade Teacher(GK) 2022)
(1) समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकारी और माता–पिता के कर्त्तव्य
(2) विद्यालयों और शिक्षकों के उत्तरदायित्व
(3) बालकों के अधिकार का संरक्षण
(4) प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और उनका पूरा किया जाना (2)

10. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा का अर्थ है? (HM-2018)(REET-2022)
(1) पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा
(2) प्रथम श्रेणी से पहले की शिक्षा
(3) आठवीं से बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा
(4) माध्यमिक शिक्षा (1)

11. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 की कौनसी धारा यह कहती है कि ''प्रत्येक माता–पिता या संरक्षक का यह कर्तव्य होगा कि वह आस–पास के विद्यालय में कोई प्रारम्भिक शिक्षा के लिए अपने यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य का प्रवेश कराए या प्रवेश दिलाए?''
(I Grade Teacher (GK) 2022)
(1) 6 (2) 9 (3) 10 (4) 8 (3)

12. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 की धारा–25 संबंधित है–
(I Grade Teacher(GK) 2022)
(1) राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् का गठन
(2) कठिनाईयों को दूर करने की केन्द्रीय सरकार की शक्ति
(3) छात्र–शिक्षक अनुपात
(4) विद्यालय (3)

13. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 के अनुसार, निम्नलिखित किस प्रमाण–पत्र के बिना कोई विद्यालय स्थापित नहीं किया जायेगा? (REET 2022 (II-Shift))
(1) प्रशंसा (2) मान्यता
(3) नियम एवं शर्तें (4) प्राधिकार (2)

14. कौनसी योजना 'समग्र शिक्षा अभियान' के अन्तर्गत आवृत नहीं है? (I Grade Teacher(GK)-2022)
(1) सर्व शिक्षा अभियान
(2) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
(3) शिक्षक शिक्षा (4) व्यावसायिक शिक्षा(4)